नमः सिद्धेभ्यः ।

श्री सिद्धक्षेत्र-पूजा संग्रह

(भाषा)

संग्रहकर्ता-

कुन्दनलाल जैन देवरी निवासी ।

प्रकाशक-

मूलचन्द किसनदास कापड़िया,

मालिक, दि० जैन पुस्तकालय, चंदावाड़ी-सूरत ।

'जैनविजय' प्रिन्टिंग प्रेस-सूरतमें मूलचन्द किसनदास कापड़ियाने मुद्रित किया ।

दूसरी बार.] वीर सं० २४४७ [प्रति ११००

मूल्य बारह आने ।

भूमिका।

(प्रथमावृत्तिकी)

भारतवर्षके तीन चार सिद्धक्षेत्रोंकी पूजनोंके सिवाय शेष सिद्धक्षेत्रोंकी पूजायें अभी तक नहीं छपीं थीं, इसी कमीकी पूर्तिके लिये मैंने यह सग्रह छपाया है। इसमें प्राय सभी सिद्धक्षेत्रोंकी पूजायें हैं, सिर्फ गुणावाजीकी पूजा ठीक समयपर न मिलनेसे शामिल नहीं की जा सकी, दूसरे सस्करणमें शामिल कर दी जायगी।

बाहूवलीस्वामीकी पूजा प० दीपचदजी परवारने और पटनाकी पूजा वावू पन्नालालजी विसाना निवासीने रच कर भेजी, इसलिये मैं इन दोनों महानुभावोंका चिर कृतज्ञ हूँ।

प० वृजलालजी अध्यापक महाविद्यालय मथुरा, श्रीयुत अनतरामजी ललितपुर, मुनीम धर्मचदजी पालीताना, बाबू परमानदजी सम्मेदशिखर, मुनीम वदामीलालजी इन्दौर, मुनीम दलीचद मिश्रीलालजी बड़वानी, मास्टर नन्हेंलालजी सेंदप्पा, और मुनीम मोतीसाजी मुक्तागिरिको धन्यवाद दिये विना नहीं रह सकते कि जिन्होंने सिद्धक्षेत्रोंकी पूजायें भेजकर इस पुस्तकके संग्रह करनेमें मुझे बड़ी सहायता दी है।

अतमें निवेदन है कि अल्पज्ञता दृष्टिदोष व प्रमादसे कोई अशुद्धियाँ रह गई हों, तो पाठक महाशय मुझे उनकी सूचना देनेकी कृपा करें, जिससे दूसरे सस्करणमें वे सुधार दी जावें।

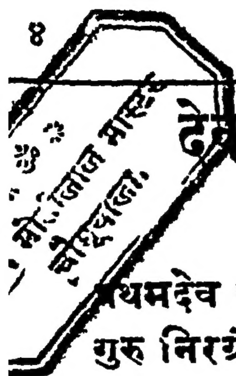
चदाबाडी, अक्षय तृतीया वि. स. १९७३ } विनीत— कुन्दनलाल जैन।

द्वितीयावृत्तिकी सूचना।

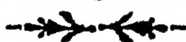
इस आवृत्तिमें पाठकोंके सुभीतेके लिये प्रारम्भमें देव-शास्त्र-गुरुपूजा सामिल की गई है तथा श्री गुणावाजी पूजा, राजगृही पूजा, मंदारगिरि पूजा, शान्तिपाठ, विसर्जन, स्तुति और निर्वाणकाण्ड भाषा तथा गाथा इतने विषय और बढाये गये हैं। राजगृही और मदारगिरिकी पूजा भेजनेवाले मुनीम मुन्नालालजी परवार पालीताना धन्यवादके पात्र हैं।

वीर स० २४४७ अषाढ सुदी १ } मूलचन्द किसनदास कापड़िया, प्रकाशक।

विषय-सूची।



देव-शास्त्र-गुरुकी पूजा।



अडिल्ल छन्द।

प्रथमदेव अरहंत सु श्रुतसिद्धंत जू।
गुरु निरग्रंथ महंत मुकतिपुरपंथ जू॥
तीन रतन जगमाहिं सो ये भवि ध्याइये।
तिनकी भक्तिप्रसाद परमपद पाइये॥ १॥

दोहा।

पूजौं पद अरहंतके, पूजौं गुरुपद सार।
पूजौं देवी सरस्वती, नितप्रति अष्टप्रकार॥ २॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुसमूह! अत्र अवतर अवतर! संवौषट्।
ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठ ठ.।
ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

गीता छन्द।

सुरपति उरगनरनाथ तिनकर, वंदनीक सुपदप्रभा।
अति शोभनीक सुवर्ण उज्ज्वल, देख छवि मोहित सभा॥
वर नीर क्षीरसमुद्रघटभरि, अग्र तसु बहुविधि नचूं।
अरहंत श्रुतसिद्धांतगुरुनिरग्रंथ नितपूजा रचूं॥ १॥

दोहा।

मलिनवस्तु हरलेत सब, जलस्वभाव मलछीन।
जासौं पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन॥ १॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥ १॥

जे त्रिजग उदरमँझार प्रानी, तपत अति दुद्धर खरे।
तिन अहितहरन सुवचन जिनके, परम शीतलता भरे॥
तसु भ्रमरलोभित घ्राण पावन, सरस चंदन घसि सचूं।
अरहंत श्रुतसिद्धांतगुरुनिरग्रंथ नितपूजा रचूं॥ २॥

दोहा।

चंदन शीतलता करै, तपतवस्तु परवीन।
तासौं पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन॥ २॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्व० स्वाहा॥२॥

यह भवसमुद्रअपार तारण,के निमित्त सुविधि ठई।
अति दृढ परमपावन जथारथ, भक्ति वर नौका सही॥
उज्जल अखंडित सालि तंदुल-पुंज धरि त्रयगुण जचूं।
अरहंत श्रुतसिद्धांतगुरुनिरग्रंथ नितपूजा रचूं॥ ३॥

दोहा।

तंदुल सालि सुगंधि अति, परम अखंडित बीन।
जासौं पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन॥ ३॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व० स्वाहा॥३॥

(यहांपर अक्षतोंके चढानेमें तीन पुंज करने चाहिये, अधिक नहीं)

जे विनयवंत सुभव्य-उरअंबुज-प्रकाशन भान हैं।
जे एकमुखचारित्र भाषत, त्रिजगमाहिं प्रधान हैं॥
लहि कुंदकमलादिक पहुप, भव भव कुवेदनसौं बचूं।
अरहंत श्रुतसिद्धांतगुरुनिरग्रंथ नितपूजा रचूं॥ ४॥

दोहा।

विविधभांति परिमल सुमन, भ्रमर जास आधीन।
तासौं पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्य कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व०स्वाहा ॥४।

अति सबल मदकंदर्प जाको, क्षुधा उरग अमान है।
दुस्सह भयानक तासु नाशनको सु गरुडसमान है
उत्तम छहोंरसयुक्त नित नैवेद्यकरि घृतमें पचू।
अरहंत श्रुतसिद्धांतगुरुनिरग्रंथ नितपूजा रचू ॥ ५ ॥

दोहा।

नानाविध संयुक्तरस, व्यंजन सरस नवीन।
जासौं पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्य क्षुधारोगविनाशाय चरु निर्व० स्वाहा ॥५

जे त्रिजग उद्यम नाश कीनें मोहतिमिरमहाबली।
तिहिकर्मघाती ज्ञानदीपप्रकाशजोति प्रभावली ॥
इहभांति दीप प्रजाल कंचनके सुभाजनमें खचू।
अरहंत श्रुतसिद्धांतगुरुनिरग्रंथ नितपूजा रचूं ॥६॥

दोहा।

स्वपर प्रकाशक जोति अति, दीपक तमकरि हीन।
जासौं पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्व०स्वाहा ॥६।

जो कर्म-ईंधन दहन अग्निसमूह सम उद्धत लसै।
वर धूप तासु सुगंधताकरि सकलपरिमलता हँसै ॥

इहभांति धूप चढ़ाय नित, भवज्वलनमाहिं नहीं पचूं।
अरहंत श्रुतसिद्धांतगुरुनिरग्रंथ नितपूजा रचूं ॥ ७ ॥

दोहा।

अग्निमाहिं परिमल दहन, चंदनादि गुणलीन।
जासौं पूजौं परम पद, देव शास्त्र गुरु तीन ॥ ७ ॥
ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्योऽष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥

लोचन सुरसना घ्रान उर, उत्साहके करतार हैं।
मोपै न उपमा जाय वरणी, सकल फल गुरु सार हैं॥
सो फल चढ़ावत अर्थ पूरन, सकल अमृतरस सचूं।
अरहंत श्रुतसिद्धांतगुरुनिरग्रंथ नितपूजा रचूं ॥ ८ ॥

दोहा।

जे प्रधान फल फलविषैं, पंचकरण-रसलीन।
जासौं पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ॥ ८ ॥
ॐ ह्रींदेवशास्त्रगुरुभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जल परम उज्वल गंध अक्षत, पुष्प चरु दीपक धरूं।
वरधूप निरमल फल विविध, बहु जनमके पातक हरूं॥
इहभांति अर्घ चढ़ाय नित भवि, करत शिव पंकति मचूं।
अरहंत श्रुतसिद्धांतगुरुनिरग्रंथ नितपूजा रचूं ॥ ९ ॥

दोहा।

वसुविधि अर्घ संजोयकै, अति उछाह मन कीन।
जासौं पूजौं परम पद, देव शास्त्र गुरु तीन ॥ ९ ॥
ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥९॥

अथ जयमाला।

देवशास्त्रगुरु रतनशुभ, तीनरतनकरतार।
भिन्न भिन्न कहुँ आरती, अल्प सुगुणविस्तार ॥१॥

पद्धरी छन्द।

चउकर्मकी त्रेसठ प्रकृति नाशि। जीते अष्टादशदोपराशि।
जे परम सुगुण है नँत धीर। कहवतके छयालिसगुण गँभीर ॥२॥

शुभ समवशरणशोभा अपार। शत इंद्र नमत कर शीसधार।
देवाधिदेव अरहंत देव। वंदौं मनवचतनकरि सु सेव ॥३॥

जिनकी धुनि है ओंकाररूप। निरअक्षरमय महिमा अनूप।
दश अष्ट महाभापा समेत। लघुभाषा सात शतक सुचेत ॥४॥

सो स्यादवादमय सप्तभंग। गणधर गूँथे बारह सु अंग।
रवि शशि न हरै सो तम हराय। सो शास्त्र नमौं बहु प्रीति ल्याय॥५

गुरु आचारज उवझाय साध। तन नगन रतनत्रयनिधि अगाध।
संसार–देह वैराग धार। निरवांछि तपै शिवपद निहार ॥६।

गुण छत्तिस पच्चिस आठवीस। भवतारनतरनजिहाज ईस।
गुरुकी महिमा वरनी न जाय। गुरुनाम जपौं मनवचनकाय ॥७

सोरठा।

कीजे शक्ति प्रमान, शक्ति विना सरधा धरै।
'द्यानत' सरधावान, अजर अमरपद भोगवै ॥८॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



नमः सिद्धेभ्यः ।

श्रीसिद्धक्षेत्र-पूजासंग्रह ।

स्व० कवि बिहारीदासजी कृत

१ श्रीसम्मेदशिखर-विधान ।

सवैया ३१ सा ।

सम्यक्दर्शन ज्ञान चारित तप चार ही की,
एकतामें लीन होय परमऋषिराज जी ।
करम गण नाश स्वात्मोपलब्धि कर प्रकाश,
तीन लोक चूडामणि भए शिरताज जी ॥
चरम शरीरतें कछुक ऊन पुरुषाकार,
ज्ञानमय शरीर धरें लसत शिवसमाज जी ।
ते ही सिद्धमहाराज ऐसें उर धारो आज,
तातें मोह जावे भाज सिद्ध होय काज जी ॥१॥

अडिल्ल ।

सम्मेदाचल ऊपर मध्यनहिं लायके ।
करें सिद्ध इमि ध्यान सु मन वच कायके ॥

पुनि अजितादि निसया भू थुति उच्चरे।
पृथक् पृथक् तिन कूट निकट पूजा करे ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसे बीस तीर्थंकरादि असंख्यात मुनि सिद्ध-पद प्राप्ताय अत्र अवतर अवतर संवौषट् आव्हाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरण।

अष्टक।

छंद कुसुमलता।

गंगादिक निर्मल जल प्रासुक,
कनक कलशमें भरकें ल्याय।
जन्म जरा मृत नाशन कारन,
धारा तीन देत हर्षाय॥
श्रीविंशति तीर्थंकर मुख मुनि,
असंख्यात जहँने शिव पाय।
सम्मेदाचल तीर्थराजमें
पूजत तिनको ध्यान लगाय॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपमीति स्वाहा॥ १॥

बावन चन्दन घिस जल निर्मल,
फैली सरस सुगंध अपार।
सो ले भव-आताप हरन को,
अर्चत सिद्धसमूह चितार॥ श्री०॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो ससारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा॥ २॥

सरस अखंडित उज्ज्वल अक्षत,
कनक रकेबीमें भर आन।
अक्षयपदके हेत चढ़ावत,
चतुर्गति अथिर दुखद पहिचान ॥श्री०॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

नानाविधिके पुष्प मनोहर,
फैली सुरभि दसों दिशि सार।
लेकर जजों शिवाचलको,
मो काम शत्रु नाशे दुखकार ॥ श्री० ॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

व्यंजन विविध प्रकार मनोहर, रसना नैन घ्राण सुखदाय।
क्षुधावेदनी नाशनको. नैवेद्य चढ़ावत हर्ष बढ़ाय ॥ श्री० ॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्य नि०

दीप रतनमय परम अमोलक, तातें पूजत हों शिवराय।
मोहमहातम नाश करो मम, स्वपर प्रकाशक ज्ञानजगाय ॥

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि० ६

हरिचंदन आदिक सुगंध दस, अगन माहिं खेवत हों राग।
आठ करम मम दुष्ट जरें जिमि, आठों गुण प्रगटें निज सार ॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

श्रीफल वर बादाम सुपारी, यला पिस्ता आदि अपार।
फलसों पूजत हों शिवभूधर, दीजे मोक्ष महाफल सार॥
ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं नि० ८
जल सुगंध तंदुल सु पुप्प चरु, दीप धूप फल अर्घ बनाय।
पद अनर्घके हेत जजत हों, सिद्ध समूह सदा उर लाय॥
ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं नि० ९
तोय गंध अक्षत प्रसून चरु, दीप धूप अर्घादिक ल्याय।
पूरन अर्घ बनाय सम रचों, पूरण काज सिद्ध मम थाय॥
ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घं नि० स्वाहा॥ १०॥

प्रत्येक पूजा।

छंद गीतिका।

रागादिक शत्रुनकर अजित, तातें अजित जिन नाम है।
जिन चरन रज ही परसतें, भव होत उज्ज्वल धाम है॥
ते अजितप्रभु निज ध्याय धर, जहँ ते लहो शिवठाम है
तिहि शैलराज पवित्रको, मो बार बार प्रनाम है॥
ॐ ह्रीं श्रीअजितजिन निशद्याभूमये पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

दोहा।

श्रीअजितादि मुनीश जे, इस भूतें शिव पाय।
ते पूजों वसु द्रव्य सों, सर्व विभाव पलाय॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके सिद्धवरकूटसे अजितनाथजिनेन्द्रादि मुनि एक अरब अस्सी कोटि चौवन लाख सिद्धपद प्राप्तेभ्यः अर्घं नि० ॥ १ ॥

जिनके निमलकर सकल जीवनको, परम सुख दान है ।
ते सकल संभव दुःखहरना, परम केवल ज्ञान है ॥
तिन अत्र भूधरतें धर्‍यो, शिव-इंदिरो वर वाम है ॥नि०

ॐ ह्रीं श्रीसंभवजिन निर्वाणभूमये पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

तीन भुवन जन सुख करन, श्रीसंभवतीर्थेश ।
अर्घ लेय पूजन प्रभू, मेटो भ्रमण कलेश ॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके धवलकूटसे श्रीसंभवनाथ जिनेन्द्रादि मुनि नौ कोडाकोडी बहत्तर लाख बयालीस हजार पांच सौ सिद्धपदप्राप्तेभ्य. अर्घं नि० ॥ २ ॥

ज्ञानादि निर्मल गुनन कर हैं, वर्धमान जिनेश जी ।
तातें अभिनन्दन सु सार्थक, नाम धर परमेश जी ॥
जहँ अनिल मुकटानल सु शक्र कृत भयो तन
[१]जिन स्वामि है ॥ तिहि० ॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दनादि निर्वाणभूमये पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

अभिनन्दन जिन आदि ऋषि, इह थलतें शिवपाय ।
ते पूजों मैं अर्घ तें, विघन सघन नश जाय ॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके आनंदकूटसे श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्रादि मुनि बहत्तर कोडाकोडी सत्तर कोटि छत्तीस लाख व्यालीस हजार सात सै सिद्धपदप्राप्तेभ्यः अर्घं नि० ॥ ३ ॥

स्याद्‌वाद परम प्रकाश कर,परमत तिमिर सय नाशकें ।
वर्ताय जिनवृष सुमति जिनवर, मोक्षमार्ग प्रकाशकें ॥
जहँतें सुजोग निरोधकर,निज अचल थलवासी भए।ति

१ लक्ष्मी ।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतितीर्थंकरादि निर्वाणभूमये पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।

मुक्ति भए इस अवनितें, सुमतिनाथ जिन आदि।
ते पूजों वसु दरव सों, छूटें कर्म अनादि॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके **अविचलकूटसे** श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्रादि मुनि एक कोडाकोड़ी चौरासी बहत्तरलाख इक्यासी हजार सात से सिद्धपदप्राप्तेभ्य. अर्घं नि० ॥ ४ ॥

हैं कमलपत्र समान नन, जिन पदमप्रभु जिनदेव जी।
गुण अमित मूर्ति सु अटल, पदमाकर लसत स्वयमेवजी।
जहाँ तिष्ठ कर कर कर्म नष्ट, सु अष्टमी भूपर थये। ति०॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभुतीर्थंकरादि निर्वाणभूमये पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।

या भूतें अष्टमधरा, वसे पद्मप्रभु आदि।
ते पूजों अति भक्तितें, मेटो मम रागादि॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके **मोहनकूटसे** पद्मप्रभुजिनेन्द्रादि मुनि निन्यानवे कोटि सतासी लाख तेतालीस हजार सात से सत्तर सिद्धपद प्राप्तेम्य·अर्घं नि० ॥ ५ ॥

गीतिका छंद।

शोभायमान सुपार्श्व जिनके, श्री सुपारशनाथजी।
जे निकटवर्त्ती भवनको, कर लेत हैं निज साथ जी॥
त्याग परमोत्तम सुतन, निज अटल मूरति परनये। ति०

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथतीर्थंकरादि निर्वाणभूमये पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।

श्रीसुपार्श्व आदिक ऋषी, जहँ ते भये शिवभूप।
सो थल पूजों भावसों, प्रगट होय चिद्रूप॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके **प्रभासकूटसे** श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्रादि मुनि उनचास कोड़ाकोड़ी चौरासी कोटि बहत्तर लाख सात हजार सात सै व्यालीस सिद्धपद प्राप्तेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

आनंद कारत सकल जगतको, तथा मोह तिमिर हरें ।
पै दोषरूप कलंक वर्जित, अमल चन्द–प्रभा धरें ॥
ते चन्द्रनाथ जिनेश जहँते, शिवरमा-नायक भए। लि०

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभुतीर्थंकरादि निर्वाणभूमये पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

सुन्दरी छन्द ।

चन्द्रप्रभु आदिक मुनिराजजी ।
लहो या भूतें शिवराजजी ।
मैं जजत हूँ वसु द्रव्य चढ़ायके ।
वसु गुणनकी आश लगायके ॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके **ललितकूटसे** चन्द्रप्रभुजिनेन्द्रादि मुनि चौरासी कोड़ाकोड़ी बहत्तर कोटि अस्सी लाख चौरासी हजार पांच सौ पचवन सिद्धपद प्राप्तेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

जे कुंद पुष्प समान दंतन, कांतिकर राजत प्रभो ।
ते पुष्पदंत सु दिव्यध्वनि, कर भव्य भवतारत विभो ॥
उत पुष्पवन जहँते करम हनि, लोकशिखरविषैं थये। लि०

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंततीर्थंकरादि निर्वाणभूमये पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

पुष्पदंत प्रभु आदिक मुनी ।
यहाँ थिर होय भवबाधा हनी ॥

अर्घ लेय जजों शिवराजजी ।
मोहि निज निधि दीजे आजजी ॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके सुप्रभकूटसे श्रीपुष्प-दंतजिनेन्द्रादि मुनि एक कोड़ाकोड़ी निन्यानवे लाख सात हजार चारसै सिद्धपद प्राप्तेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

नहिं करत शीतल चंद किरनन, चंदनादिक सार है ।
भव-ताप बुझावन वचन तिनके, परम अद्भुत धार है ॥
निज देह करगिरि सो शीतल, भए जगतललामहैं ॥ ति०

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथतीर्थंकरादि निर्वाणभूमये पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

सोरठा ।

शीतल जिन आदि, इह अवनीतैं शिव गए ।
पूजों तज परमाद, मोह तपन शीतल करो ॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके विद्युत्कूटसे शीतल-नाथजिनेन्द्रादि मुनि अठारह कोड़ाकोड़ी ब्यालीस कोटि बत्तीस लाख ब्यालीस हजार नौ सै पांच सिद्धपद प्राप्तेभ्यः अर्घं नि० ॥९॥

श्रेयसस्वरूपी आप हैं, मुनि सकल जिय श्रेयसैं करैं ।
तातैं श्रेयांश सु सार्थ संज्ञा, श्रेयांसप्रभु श्रेयस धरे ॥
ऊरध गमनकर इस इलातैं, शिवशिलापर थिर भए ॥ ति०

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकरादि निर्वाणभूमये पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

श्रेयांश जिनराज, मुनि असंख्य शिवभूमिके ।
मैं पूजत हौं आज, मेरो ही श्रेयस करो ॥

---

१ कम्पन । २ पृथ्वी ।

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके संकुलकूटसे श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्रादि, मुनि छ्यानवे कोड़ाकोड़ी छ्यानवे कोटि छ्यानवे लाख नौ हजार पांच सै ब्यालीस सिद्धपद प्राप्तेभ्य अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १० ॥

रागादि दुरुख[1] मल हरन, जिन वचन सलिल समान हैं
श्रीविमल २ करत, भविक जन विमलसौख्यनिधान हैं
इस क्षेत्रको ही विमल कीनी, यहांतें शिव जायकें ॥
तिहि शैलराज प्रशस्तकों, मैं नमों मन वच कायकैं ॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथतीर्थंकरादि निर्वाणभूमये पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

विमल जिनेश्वर मुख्य, मुनि असंख्य इस अचलतें ।
पायो अविचल सुक्ख, अर्घ जजों तासों निमित ॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके सुवीरकुलकूटसे श्रीविमलनाथजिनेन्द्रादि मुनि सत्तर कोटि सात लाख छह हजार सातसौ ब्यालीस सिद्धपद प्राप्तेभ्य अर्घं नि० ॥ ११ ॥

जिनके सु स्वगुन अनंत कथ,गनधर लहत नाहिं अंत हैं
सु अनंत संसृत दुःख नाशन, श्रीअनंत महंत हैं ॥
सुअनंतधाम लह्यो जहांतें,अचल अमल सुथिर भयो।तिं०

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथतीर्थंकरादि निर्वाणभूमये पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

शांत करो संसार, सादि अनंत कियो सुकृति ।
ते पूजों जगतार, सुख अनन्त दातार लख ॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके स्वयंभूकूटसे श्रीअनन्त

---

1 कठिनतासे नष्ट होनेवाले ।

नाथजिनेन्द्रादि मुनि छ्यानवे कोडाकोडी सत्तर कोटि सत्तर लाख सत्तर हजार सात सौ सिद्धपद प्राप्तेभ्यः अर्घं नि० ॥ १२ ॥

संसार दुःख समुद्र डूबत, भव्य जीव उबारकें।
सुख-धाम धारत धर्मप्रभू, सुधर्म विधि विस्तारकें।
ते धर्मनायक इस धरातें, शिवरमानायक भए। ति०

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथतीर्थंकरादि निर्वाणभूमये पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

चाल–छंद।

श्रीधर्मनाथ जगनामी। पुनि मुनि असंख्य शिवगामी।
या भू ऊपर थिर राजे। ते पूजों निज हित काजे॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके सुदत्तकूटसे श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्रादि मुनि उन्नीस कोड़ाकोडी उन्नीस कोटि नौ लाख नौ हजार सातसै पंचानवे सिद्धपद प्राप्तेभ्यः अर्घं नि० ॥ १३ ॥

जे शांत करत समस्त पातक, एक छिनमें नाथ जी।
जिन नाम मंत्र प्रभावतें, इन्द्रादि भए सनाथ जी॥
ते शांतिनाथ अपार भवदधि, पार या भूतें थये। ति०

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथतीर्थंकरादि निर्वाणभूमये पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।

श्रीशांतिनाथादि रिखीस। जहँते गए त्रिभुवन सीस।
ते जजत हूँ अर्घ धारी। नाशो भवव्याधि हमारी॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके शान्तिप्रभकूटसे श्रीशा-न्तिनाथजिनन्द्रादि मुनि नौ कोडाकोडी नौ लाख नौ हजार, नौ सौ निन्यानवे सिद्धपद प्राप्तेभ्य. अर्घ नि० ॥ १४ ॥

कुंथादि जीवनमें दया जुत, ह्वै परम विराग जी।
श्रीकुंथुस्वामी चक्र लक्ष्मी, जीर्न तृनवत त्याग जी॥

जहँ ते विमल तप धार सकल, विकार तज निरमल भए। तिहि शै० ॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथतीर्थंकरादि निर्वाणभूमये परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

सोरठा।

कुन्थुनाथ जिनपाल, बहु मुनिगण जहँ तें मुकति।
सो थल जजों विशाल, उज्ज्वल द्रव्य संजोयके ॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके ज्ञानधरकूटसे श्रीकुन्थुनाथ जिनेन्द्रादि मुनि छ्यानवे कोड़ाकोड़ी बत्तीस लाख छ्यानवे हजार सात सै व्यालीस सिद्धपद प्राप्तेभ्यः अर्घं नि० ॥ १५ ॥

सब द्रव्य गुण पर्याय जानत, राग द्वेष न पाइये।
सो तीनलोक प्रसिद्ध अरजिन, चरन नितप्रति ध्याइये॥
तहँ समोशरणविभूति मध, सु तिष्ठ पुनि निजथल गये।

ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथतीर्थंकरादि निर्वाणभूमये पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

अरहनाथ भगवान, आदि ऋषी इस अवनितें।
पायो पद निर्वान, अर्घ चढ़ावत हर्ष धर ॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके नाटककूटसे श्रीअरहनाथ जिनेन्द्रादि मुनि निन्यानवे कोटि निन्यानवे लाख निन्यानवे हजार सिद्धपद प्राप्तेभ्यः अर्घं नि० ॥ १६ ॥

जिनमल्ल दुर्जय कामभट, जीतन सुमल्ल प्रधान हैं।
सतमल्लिका सम सुरभि तन, जुत मोह तम हनि भान हैं
जिहि थानतें निर्वान पहुँचे, अचल अविनाशी भए। ति०

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथतीर्थंकरादि निर्वाणभूमये पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

मल्लिनाथ तीर्थेश, अविचल सुख यहँते लयो ।
पूजों ते परमेश, मोहि निमल्ल करो प्रभू ॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके सम्बलकूटसे श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्रादि मुनि छ्यानवे कोटि सिद्धपदप्राप्तेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १७ ॥

जिनके सुव्रत जयवंत जगमें, सुगुण रत्ननिधान हैं।
चिर लगे पाप पहार चूरन, को सु वज्र समान हैं ॥
ते धार मुनिसुव्रत जिनेश्वर, जहाँतें निज थल गए। ति०

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रततीर्थंकरादि निर्वाणभूमये पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

श्रीमुनिसुव्रतनाथ, पार भए इस क्षेत्रतें ।
जजों जोर जुग हाथ, मेरे सुव्रत काज ये ॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके निर्जरकूटसे श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्रादि मुनि निन्यानवे कोडाकोड़ी सत्तावनवे कोटि नौ लाख नौ सौ निन्यानवे सिद्धपद प्राप्तेभ्यः अर्घं नि० ॥ १८ ॥

इन्द्रादि देवनिकर नमत्ति, तातें सुनामि जिन नाम है।
मिथ्यातमतमय तिमिर नाशत,कर विहार सुस्वामि है
धर तुर्ज ध्यान सु अंतमें, जहँते सुलोक शिखर थए ति०

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथतीर्थंकरादि निर्वाणभूमये पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

नमि जिनवर सुखकार, आदि यती या भूमितें।
भए भवोदधि पार, ते पूजों वसु द्रव्य सों ॥

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके मित्रधरकूटसे श्रीनेमिनाथजिनेन्द्रादि मुनि नौ सौ कोड़ाकोडी एक अरब पैंतालीस लाख सात हजार नौ सै व्यालीस सिद्धपद प्राप्तेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १९ ॥

छंद गीतिका।

ज्ञानी जननकर सदा जिनके, पार्श्व अनुभवरूप हैं।
ते पार्श्वस्वामी भव्य भवफांसी, निवारन भूप हैं॥
जहँते विमल तन त्याज सिद्धसमाजमें चिर थिर भए।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकरादि निर्वाणभूमये पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

अडिल्ल।

पार्श्वनाथको आदि, असंख्य ऋषीश जी।
या भूधरतें भये, शिवालय ईश जी॥
ते ही सिद्ध जजों, मैं मन वच कायकें।
जन्म सुफल भयो आज, सु इह थल पायकें॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके सुवर्णभद्रकूटतें श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्रादि मुनि ब्यासी करोड चौरासी लाख पैंतालीस हजार सात सौ ब्यालीस सिद्धपद प्राप्तेभ्यः अर्घं नि० ॥ २० ॥

गीतिका।

इत्यादि जे ऋषिपाल, भव-दुख जालको छेदत भए।
इहि शैलतें गति ऊर्ध्व करकें, अचल सौख्यमई थए॥
सो आर्यक्षेत्र सुशैल गिरिपति, तीर्थराज महान है।
मैं जजत अर्घ चढ़ायकें, मो करहु परम कल्यान है॥

ॐ ह्रीं विंशति तीर्थंकरादि असंख्यात मुनि सिद्धपदप्राप्तेभ्यः श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २१ ॥

छंद त्रिभंगी।

प्रथमहि षोध प्रजापति स्वामि,
पुनि ऋषि है मुनि-मग विस्तार।

तप धर शुक्लध्यान दूजे कर,
चारों घाति कर्म्म निरवार ॥
केवल लह कैलाश शैलतें,
पुनि अघाति हनि उतरे पार ।
सो कैलाश शिवाचल पूजों,
इतही मन तें चित्त सु सार ॥

ॐ ह्रीं श्रीऋषभनाथजिनेन्द्रादि मुनि श्रीकैलाशगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं नि० ॥ २२ ॥

इन्द्रादि देवन कर पूजत, श्रीजिन वासुपूज्य भगवान।
जिनके पंचकल्यानक कर,सो नगरी भई पवित्र महान॥
चम्पापुरी भगवती, ताकों यह भूधरपै कर आव्हान।
पूजत हों वसु द्रव्य लेयके, कर्म निर्जरा हेतु महान ॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य सिद्धपद प्राप्तेभ्यः श्रीचम्पापुरसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं नि० ॥ २३ ॥

राजमती गुणमती त्याजकें, ब्रह्मलीन श्रीनेमिकुमार।
जहँ सेसावनमें तप धरके, घातीकर्म हने दुठ चार ॥
पंचमगति जास गिरितें, भए अनंत सुगुण भंडार ।
सो गिरनार पूजत मैं इत ही मनहितें वसुद्रव्य सुधार॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ सिद्धपदप्राप्तेभ्यः श्रीगिरनारसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं नि० ॥ २४ ॥

श्रीतीर्थेश वीरके वचनामृत, पीकर जे हैं बलवान।
ते अब ही इस काल विषै ही,जीतत मदन मल्ल परधान।

पावापुरके निकट पद्मसर, तहँते पहुँचे निश्चल थान।
सो शिवधरा जजत मैं इतही, धरके चर्म तीर्थंकर ध्यान।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर सिद्धपदप्राप्तेभ्यः श्रीपावापुरसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं नि० ॥ २६ ॥

अडिल्ल।

'भागचन्द्र' के उदय होत, सुखकार जी।
पावत हैं जिन तीरथ, दरशनसार जी ॥
ताके परमप्रसाद भव्य, भव-सर तरें।
नरक आदि दुख कूप, विषै नाहीं परें ॥

दोहा।

अथ विशेष पूजन करन, चाह होय उर माहिं।
तो इन अष्टक पद सुधी, पूजा विशद कराहिं ॥

अडिल्ल।

गंगादिक निर्मल शीतल जलकर जजों।
पर भावनकी तृष्णा कबहुँ नहिं भजों ॥
श्रीतीर्थेश्वर शिव-भूधर पावन शिखर।
श्रीसम्मेद नाम गिरि पूजों नीर धर ॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसे बीस तीर्थंकर असंख्यात मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्य जलं नि० ॥ १ ॥

ल्यायो परम सुगंध सुरभि दश दिशि करे।
श्रीजिन वचन समान ताप सब परहरे ॥
श्रीतीर्थेश्वर शिव-भूधर पावन शिखर।
श्रीसम्मेद नाम गिरि पूजों गंध धर ॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसे वीस तीर्थंकर असख्यात मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यः चन्दन नि० ॥ २ ॥

धवल अखंडित तंदुल शील सु ल्यायकें ।
अक्षयपदके हेत सु मन वच कायकें ॥
श्रीतीर्थेश्वर शिव-भूधर पावन शिखर ।
श्रीसम्मेद नाम गिरि पूजों पुंज धर ॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसे वीस तीर्थंकर असख्यात मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्य अक्षतं नि० ॥ ३ ॥

सुमन सु भव्य समूह पूज्य गिरिवर है महा ।
ल्यायो उत्तम पुष्प काम नाशन लहाँ ॥
श्रीतीर्थेश्वर शिव-भूधर पावन शिखर ।
श्रीसम्मेद नाम गिरि पूजों पुष्प धर ॥

ॐ ह्री श्रीसम्मेदशिखरसे वीस तीर्थंकर असख्यात मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्य पुष्प नि० ॥ ४ ॥

मोदक आदि नैवेद्य कनक थारी धरों ।
क्षुधा वेदनी दहन वेद्य विथा हरों ।
श्रीतीर्थेश्वर शिव-भूधर पावन शिखर ।
श्रीसम्मेद नाम गिरि पूजों चरु सु धर ॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसे वीस तीर्थंकर असंख्यात मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यः नैवेद्यं नि० ॥ ५ ॥

स्वपर बोधमय मणिमय दीपक कर जजों ।
संशय विभ्रम मोह भाव तत्क्षण तजों ॥

श्रीतीर्थेश्वर शिव- भूधर पावन शिखर।
श्रीसम्मेद नाम गिरि पूजों दीप धर॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसे बीस तीर्थंकर असंख्याते मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्य दीपं नि० ॥ ६ ॥

हरिचन्दन आदिक दस गंध मिलायकें।
खेवन विधि गण उड़त धूम मिस पायकें॥
श्रीतीर्थेश्वर शिव-भूधर पावन शिखर।
श्रीसम्मेद नाम गिरि पूजों धूप धर॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसे बीस तीर्थंकर असंख्यात मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्य धूपं नि० ॥ ७ ॥

श्रीफल आदि सुरभि फल ले झिनकार जी।
जजत सु अविनाशी फलदायक सार जी॥
श्रीतीर्थेश्वर शिव-भूधर पावन शिखर।
श्रीसम्मेद नाम गिरि पूजों विघ्न हर॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसे बीस तीर्थंकर असंख्यात मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्य· फलं नि० ॥ ८ ॥

जल आदिक फल अंत सु द्रव्य संजोयके।
पद अनर्घके हेतु जजों मद खोयके॥
श्रीतीर्थेश्वर शिव भूधर पावन शिखर।
श्रीसम्मेद नाम गिरि पूजों अर्घ धर॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसे बीस तीर्थंकर असंख्यात मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्य· अर्घं नि० ॥ ९ ॥

दस ।

जयमाला।

अडिल्ल।

तीरथ सम्मेदाचल नाम प्रसिद्ध है।
भाव भक्तिकर पूजत देत सु ऋद्धि है॥
वचनरूप पुष्पनकी माल बनायके।
पूजत हों मैं बार बार शिरनायके।

पद्धरी छंद।

जयजय सम्मेदशिखर सुनाम।
पूरत भविजनके सकल काम॥
जय कुगति भीतजन आर्त हर्न।
पुनि पुनि आयो जहँ समोशर्न॥ १॥
सुर इन्द्र सु पूजत नित्य आन।
अहमिन्द्र सु थल ही धरत ध्यान।
वंदित चारणऋषि कलिल हरन।
जिनविंशति तीर्थ सु भूमि धरन॥ २॥
सो ध्यान अध्ययन परम थान।
गंधर्व करत जिनगुण सु गान॥
जयजय यात्री जहँ करत एव।
खेचर भूचर नित करत सेव॥ ३॥
ऋतु छैऊर सन्तत राजमान।
जहँ मुनिजन नित ही धरत ध्यान॥
वर बोध-सुधामृत देन दक्ष।
परनाम सहज तहँ होय स्वच्छ॥ ४॥

तुमको जजहुं भजहुं सदीव ।
नहिं मिथ्यातीर्थ नमों कदीव ॥
दीजे हमको भो समाधिथान ।
तुम भक्त सर्व सुख गुण निधान ॥ ५ ॥

घत्ता ।

मैं क्रोधी मानी माया ग्यानी,
लोभ अनलकर जलत सदा ।
गति गति भटकायो बहु दुख पायो,
सौख्य न पायो रंच कदा ॥
हे शिव-भूधर अब शरण लयो,
तब मो दुरगति दुख दूर करो ।
तुम तीरथराजा हो महाराजा,
' दास बिहारी ' शरम भरो ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

छंद कुसुमलता ।

'भागचन्दजी' महा सुधी,
तिन करे संस्कृत काव्य महान ।
तिनहीके अनुसार ' बिहारी '
भाषा रचो सो ' शिखर-विधान ' ॥
संवत शत उन्नीस अधिक,
इक्यालीस जेठ सुदि पष्ठी जान ।
अमिल होय अक्षर मिलाय,
जो सो सोधो सज्जन धीमान ॥ ७ ॥

श्रीसम्मेद शिखरके वंदत,
पुत्रार्थी लह पुत्र प्रधान ।
धनअर्थी अक्षय धन पावे,
मोक्षार्थी शिव सौख्य महान ॥
एकहि बार वंदना करतें,
नरक पशू गति टरे निदान ।
इमि लख तीर्थराज वर वंदौं,
भक्ति भावधर श्रद्धावान ॥ ८ ॥

इत्याशीर्वादः ।

स्वर्गीय कविवर बाबू वृन्दावनजीकृत

२ श्रीवासुपूज्यजिन पूजा ।



छंद रूप कवित्त ।

श्रीमतवासुपूज्य जिनवरपद,
पूजन हेत हिये उमगाय ।
थापों मन वच तन शुचि करकें,
जिनकी पाटलदेव्या माय ॥
महिष चिन्ह पद लसे मनोहर,
लाल बरन तन समतादाय ।
सो करुनानिधि कृपादिष्ट करि,
तिष्ठहु सुपरितिष्ठ यहँ आय ॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ ।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक ।

छंद जोगीरासा । आंचलीबद्ध " जिनपद पूजों लवलाई । "

गंगाजल भरि कनककुंभमें, प्रासुक गंध मिलाई ।
करम कलंक विनाशन कारन, धार देत हरषाई ।जिन०।
वासुपूज वसुपूजनतनुजपद, वासव सेवत आई ।
बालब्रह्मचारी लखि जिनको, शिवतिय सनमुख धाई ॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

कृष्णागरु मलयागिर चन्दन,
केशर संग घसाई ।
भवआताप विनाशन कारन,
पूजों पद चित लाई ॥ जि० वा० ॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दनं नि० ॥२॥

देवजीर सुखदास शुद्ध वर,
सुवरन थार भराई ।
पुंज धरत तुम चरनन आगे,
तुरित अखयपद पाई ॥ जि० वा० ॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान नि० ॥३॥

पारिजात संतानकल्पतरु,
जनित सुमन बहु लाई ।
मीनकेतु मदभंजन कारन,
तुम पदपद्म चढ़ाई ॥ जि० वा० ॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं नि० ॥४॥

नव्य गव्य आदिक रसपूरित,
नेवज तुरित उपाई।
क्षुधा रोग निरवारन कारन,
तुम्हें जजों शिरनाई ॥ जि० वा० ॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि० ॥५॥

दीपक जोत उदोत होत वर,
दश दिशिमें छवि छाई।
तिमिर मोहनाशक तुमको लखि,
जजों चरन हरषाई ॥ जि० वा० ॥

ॐ ह्री श्रीवासुपृज्यजिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि० ॥६॥

दशविध गंध मनोहर लेकर,
वातहोत्रमें डाई।
अष्ट करम ये दुष्ट जरतु हैं,
धूम सु धूम उड़ाई ॥ जि० वा० ॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं नि० ॥७॥

सुरस सुपक सुपावन फल ले, कंचनथार भराई।
मोच्छ महाफलदायक लखि प्रभु, भेंट धरों गुनगाई ॥
जि० वा० ॥

ॐ ह्री श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० ॥ ८ ॥

जल फल दरब मिलाय गाय गुन, आठों अंग नमाई।
शिवपदराज हे श्रीपति, निकट धरों यह लाई ॥
जिनपद० वासु० ॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि० ॥ ९ ॥

पंचकल्याणक–

छंद चौपाई (मात्रा १५)

कलि छट्ट अषाढ़ सुहायो। गरभागम मंगल पायो।
दशमें दिविसें इत आये। शत इन्द्र जजें सिर नाये ॥१॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घं नि० ॥ १ ॥

कलि चौदश फागुन जानों। जनमें जगदीश महानों॥
हरि मेरु जजें तब जाई। हम पूजत हैं चितलाई ॥२॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां जन्ममङ्गलप्राप्ताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घं नि० ॥ २ ॥

तिथि चौदस फागुन श्यामा। धरियो तप श्री अभिरामा
नृप सुन्दरके पय पायो। हम पूजत अतिसुख थायो ॥३॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां तपमङ्गलप्राप्ताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घं नि० ॥ ३ ॥

वदि भादव दोइज सोहै। लहि केवल आतम जो है॥
अन अंत गुनाकर स्वामी। नित वंदों त्रिभुवन नामी ॥४

ॐ ह्रीं भाद्रकृष्णद्वितीयायां केवलज्ञानमण्डिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घं नि० ॥ ४ ॥

सित भादव चौदश लीनों। निरवान सुथान प्रवीनों॥
पुरचंपा थानकसेती। हम पूजत निजहित हेती ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लचतुर्दश्यां मोक्षमङ्गलप्राप्ताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घं नि० ॥ ५ ॥

जयमाला ।

दोहा ।

चंपापुरमें पंचवर, कल्यानक तुम पाय ।
सत्तर धनु तनु शोभनो, जै जै जै जिनराय ॥ १ ॥

छन्द मोतियदाम (वर्ण १२)

महासुखसागर आगर ज्ञान ।
अनंत सुखामृत मुक्त महान ॥
महाबलमंडित खंडित काम ।
रमाशिव संग सदा विसराम ॥ २ ॥
सुरिंद फनिंद खगिंद नरिंद ।
मुनिंद जजैं नित पादरविंद ॥
प्रभू तुव अंतर भाव विराग ।
सुबालहिं तें व्रतशीलसों राग ॥ ३ ॥
कियो नहिं राज उदाससरूप ।
सुभावन भावत आतमरूप ॥
अनित्य शरीर प्रपंच समस्त ।
चिदातम नित्य सुखाश्रित वस्त ॥ ४ ॥
अशर्न नहीं कोउ शर्न सहाय ।
जहाँ जिय भोगत कर्मविपाय ॥
निजातम के परमेसुर शर्न ।
नहीं इनके विन आपद हर्न ॥ ५ ॥

जगत्त जथा जलबुद्बुद येव।
सदा जिय एव लहै फलसेव॥
अनेक प्रकार धरी यह देह।
भमैं भवकानन आन न नेह॥ ६॥

अपावन सात कुधात भरीय।
चिदातम शुद्ध सुभाव धरीय॥
धरे इनसो जब नेह तयेव।
सुआवत कर्म तबै वसुभेव॥ ७॥

जबै तन भोग जगत्त उदास।
धरै तब संवर निर्जर आस॥
करै जब कर्म कलंक विनाश।
लहै तब मोक्ष महासुखराश॥ ८॥

तथा यह लोक नराकृत नित्त।
विलोकियते पर द्रव्य विचित्त॥
सुआतम जानन बोध विहीन।
धरै किन तत्त्वप्रतीत प्रवीन॥ ९॥

जिनागम ज्ञानरु संजमभाव।
सबै निजज्ञान विना विरसाव॥
सुदुर्लभ द्रव्य सुक्षेत्र सुकाल।
सुभाव सबै जिहितें शिव हाल॥१०॥
लयो सब जोग सुपुन्य वशाय।
कहो किमि दीजिये नाहि गँवाय॥

विचारत यों लवकान्तिक आय ।
नमें पदपंकज पुष्प चढ़ाय ॥ ११ ॥

कह्यो प्रभु धन्य कियो सुविचार ।
प्रबोध सु येम कियो जु विहार ॥

तबै सवधर्म तनों हरि आय ।
रच्यौ शिविका चढ़ि आप जिनाय॥१२॥

धरे तप पाय सुकेवल बोध ।
दियो उपदेश सुभव्य संबोध ॥

लियो फिर मोच्छ महासुखराश ।
नमैं नित भक्त सोई सुखआश ॥ १३

घत्तानन्द ।

नित वासव वन्दत, पाप निकंदत,
वासपूज्य व्रत ब्रह्मपती ।
भवसकलखंडित, आनँदमंडित,
जै जै जै जैवंतजती ॥ १४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

सोरठा ।

वासपुजपद सार, जजै दरबविधि भावसों ।
सो पावै सुखसार, भुक्ति मुक्तिको जो परम ॥१५॥

इत्याशीर्वादः परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।



काशीनिवासी स्व० बाबू वृंदावनजीकृत-

३ श्रीवर्द्धमानजिन (पावापुर) पूजा।



मत्तगयंद।

श्रीमत वीर हरें भवपीर, भरें सुखसीर अनाकुलताई।
केहरि अंक अरीकरदंक, नये हरिपंकतिमौलि सुआई॥
मैं तुमको इत थापतु हौं प्रभु, भक्तिसमेत हिये हरखाई।
हे करुणाधनधारक देव इहां अब तिष्ठहु शीघ्रहि आई॥

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर। संवौषट्।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट्॥

अथाष्टक।

छंद अष्टपदी।

क्षीरोदधिसम शुचि नीर, कंचनभृंग भरों। प्रभु वेग हरो भवपीर, यातें धार करों॥ श्रीवीर महा अतिवीर, सनमतिनायक हो। जय वर्द्धमान गुणधीर सनमतिदायक हो।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥ १॥

मलयागिरचंदन सार, केसरसंग घसों। प्रभु भवआताप निवार, पूजत हिय हुलसों॥ श्रीवीर० ॥ जयवर्द्धमान० ॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय भवतापविनाचनाग चन्दनं नि० ॥

तंदुलसित शशिसम शुद्ध, लीने थारभरी।
तसु पुंज धरौं अविरुद्ध, पाऊं शिवनगरी ॥ श्री०
॥ जयवर्द्ध० ॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०॥३॥

सुरतरुके सुमनसमेत, सुमन सुमनप्यारे।
सो मनमथभंजन हेत, पूजूं पद थारे ॥ श्रीवीर० ॥
जयवर्द्ध० ॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०॥४॥

रसरज्जत सज्जत सद्य, मज्जत थार भरी। पद
जज्जत रज्जत अद्य, भज्जत भूख अरी ॥ श्रीवीर०
॥ जयवर्द्ध० ॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि० ॥५॥

तमखंडित मंडितनेह, दीपक जोवत हूं। तुम
पदतर हे सुखगेह, भ्रमतम खोवत हूं। श्री०॥जय०॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि०॥५॥

हरिचंदन अगर कपूर, चूरि सुगन्ध करे। तुम
पदतर खेवत भूरि, आठौं कर्म जरे ॥ श्री०॥ जय०

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूप नि० ॥७॥

रितुफल कलवर्जित लाय, कंचनथार भरौं।
शिवफलहित हे जिनराय, तुम ढिग भेट धरौं ॥
॥ श्रीवीर० ॥ जयवर्द्ध० ॥

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं नि० ॥८॥

जल फल वसु सजि हिमथार, तनमन मोद धरौं। गुणगाऊं भवदधितार, पूजत पाप हरौं॥ श्रीवीर० ॥ जयवर्द्धमान० ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं नि० ॥९॥

पंचकल्याणक–

राग टप्पा।

मोहि राखो हो सरना, श्रीवर्द्धमान जिनरायजी, मोहि राखौ हो सरना ॥ टेक ॥ गरभ साढ़ सित छट्ठ लियो थिति, त्रिशला उर अघहरना। सुर सुरपति नित सेव करत नित, मैं पूजूं भवतरना ॥ मोहि राखो० ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं आषाढशुक्लषष्टीदिने गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

जनम चैत सित तेरसके दिन, कुंडलपुर कनवरना। सुरगिरि सुरगुरु पूज रचायो, मैं पूजूं भवहरना ॥ मोहि राखो० ॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लत्रयोदशीदिने जन्ममङ्गलप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

मगसिर असित मनोहर दशमी, ता दिन तप आचरना। नृप कुमारघर पारन कीना, मैं पूजूं तुम चरना। मोहि राखो हो० ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णदशम्यां तपोमङ्गलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

शुकल दशैं वैशाख दिवस अरि, घात चतुक छय करना। केवल लहि भवि भवसर तारे, जजूं चरन सुखभरना ॥ मोहि राखौ० ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लदशम्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

कातिक श्याम अमावस शिवतिय, पावापुरतैं वरना। गनफनिवृंद जजैं नित बहु विधि, मैं पूजूं भयहरना ॥ मोहि राखौ ० ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णामावस्यायां मोक्षमङ्गलमडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

जयमाला।

छंद हरिगीता (२८ मात्रा)।

गनधर असनिधर चक्रधर, हरधर गदाधर वरवदा।
अरु चापधर विद्यासुधर, तिरसूलधर सेवहिं सदा ॥
दुखहरन आनँदभरन तारन, तरन चरन रसाल हैं।
सुकुमाल गुन मणिमाल उन्नत, भालकी जयमाल है ॥१॥

छंद घत्तानंद (३१ मात्रा)।

जय त्रिशलानंदन हरिकृतवंदन, जगदानंदन चंद वरं।
भवतापनिकंदन तनमनवंदन, रहितसपंदन नयन धरं ॥२॥

छंद तोटक।

जय केवलभानुकलासदनं। भविकोकविकाशन कंजवनं॥
जगजीत महारिपु मोहहरं। रजज्ञानदृगांवरचूरकरं॥ १॥
गर्भादिक मंगल मंडित हो। दुख दारिदको नित खंडित हो॥
जगमांहि तुमी सत पंडित हो। तुम ही भवभावविहंडित हो॥२॥
हरिवंशसरोजनकों रवि हो। बलवंत महंत तुमी कवि हो॥
लहि केवल धर्म प्रकाश कियौ। अबलौं सोई मारग राजति यौ॥३॥
पुनि आपतने गुणमाहिं सही। सुर मग्न रहैं जितने सब ही॥
तिनकी वनिता गुण गावत हैं। लय ताननिसों मनभावत हैं॥४॥
पुनि नाचत रंग अनेक भरी। तुव भक्तिविषै पग एम धरी॥
झननं झननं झननं झननं। सुर लेत तहाँ तननं तननं॥५॥
घननं घननं घनघंट बजै। दृमदं दृमदं मिरदंग सजै॥
गगनांगणगर्भगता सुगता। ततता ततता अतता वितता॥६॥
धृगतां धृगतां गति बाजत है। सुरताल रसाल जु छाजत है॥
सननं सननं सननं नभमें। इकरूप अनेक जु धार भमें॥७॥
कइ नारि सु वीन बजावतु हैं। तुमरौ जस उज्जल गावतु हैं॥
करतालविषैं करताल धरैं। सुरताल विशाल जु नाद करैं॥८॥
इन आदि अनेक उछाहभरी। सुरभक्ति करैं प्रभुजी तुमरी॥
तुम ही जगजीवनके पितु हो। तुमही विनकारनके हितु हो॥९॥
तुम ही सब विघ्न विनाशन हो। तुमही निज आनँदभासन हो॥
तुमही चितचिंतितदायक हो। जगमाहिं तुमी सब लायक हो॥१०॥

तुमरे पनमंगलमाहि सही । जिय उत्तम पुण्य लियौ सब ही ॥
हमको तुमरी सरनागत है । तुमरे गुनमें मन पागत है ॥११॥
प्रभु मो हिय आप सदा वसिये । जबलौं वसुकर्म नहीं नसिये ॥
तबलौं तुम ध्यान हिये वरतो । तबलौं श्रुतचिंतन चित्त रतो ॥१२॥
तबलौं व्रत चारित चाहत हौं । तबलौं शुभ भाव सुगाहत हौं ॥
तबलौं सतसंगति नित्य रहौ । तबलौं मम संजम चित्त गहौ ॥१३॥
जबलौं नहिं नाश करौ अरिकौ । शिवनारि वरौ समताधरिको ॥
यह द्यो तबलौं हमको जिनजी । हम जाचत है इतनी सुनजी ॥१४॥

छंद घत्तानंद ।

श्रीवीर जिनेशा नमतसुरेशा, नागनरेशा भगतिभरा ।
'वृंदावन' ध्यावै विघ्न नशावै, वांछित पावै शर्मवरा ॥१५॥

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

दोहा ।

श्रीसनमतिके जुगलपद, जो पूजहिं धर प्रीत ।
वृंदावन सो चतुर नर, लहै मुक्त नवनीत ॥१६॥

इत्याशीर्वादः ।



कवि भागदासजी कृत

४ श्रीजम्बूस्वामीकी पूजा ।

सोरठा ।

चौवीसों जिन पाय, पंच परमगुरु वंदिकें ।
पूज रचों सुखदाय, विघन हरण मंगल करन ॥

अडिल्ल।

विद्युन्माली देव चये जम्बू भये।
कामदेव अवतार अन्तकेवलि थये॥
कलियुग कारे पाख वरांगन शिव वरी।
आवो आवो स्वामि भक्ति मम उर भरी॥१॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीमज्जम्बूस्वामिन् अत्र अवतरावतर संवौषट् आव्हाननं।

सिंहपीठ मम देह कमल उर सोहनो।
तिष्ठो तिष्ठो नाथ भविक मन मोहनो॥
अब मोहि चिन्ता कौन सिद्धकारज भये।
आतम अनुभव पाय सकल सुख थिर भये॥२॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीमज्जम्बूस्वामिन् तत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

स्वामी अपनो रूप मोहि इक कीजिये।
मैं हूँ पूजक भक्ति आज चित दीजिये॥
या संसार असार असाताके विषै।
तो सूं तन्मय होत सकल आनँद लसै॥३॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीमज्जम्बूस्वामिन् अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अष्टक।

गंगादिक जल लेय रत्न झारी भरूं।
जै जैकार उचार धार दे थुति करूं॥

सिद्धचक्रको सुमरि जम्बु पूजा करों ।
ज्ञानावरणी कर्मतनी थितिकों हरों ॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाण श्रीमज्जम्बूस्वामिन ज्ञानावरणीय कर्म क्षयार्थं जलं नि० ॥ १ ॥

बावन चन्दन ल्याय और मलयागिरी ।
केशर द्रव्य मिलाय घिसायरु इक करी ॥
सिद्धचक्रको सुमरि जम्बु आगे धरूं ।
दर्शनावरणी ताप मेटि शीतल करूं ॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीमज्जम्बूस्वामिन् दर्शनावरणीय कर्म क्षयार्थं चन्दनं नि० ॥ ॥

तन्दुल मुक्ता जेम इंदु[1]-किरण जिसे ।
दीर्घ अखंडन कोय पुंज करिये तिसे ॥
ज्योतिस्वरूपी ध्याय जम्बु पूजा रचू ।
अन्तराय छय कीन अखैपदमें मचू ॥

ॐ ह्री णमो सिद्धाण श्रीमज्जम्बूस्वामिन् अंतराय कर्म क्षयार्थं अक्षतं नि० ॥ ३ ॥

पारिजात मन्दारन मेरु सुहावने ।
संतानक सुरतरुके पुष्प ॲगावने ॥
अलखरूप वर धार जम्बुके पद जजू ।
मोहनी कर्म निवार काम तें न लजू ॥

---

१ चन्द्रमा ।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीमज्जम्बूस्वामिन् मोहनीय कर्म क्षयार्थं पुष्पं नि० ॥ ४ ॥

सुन्दर घृत मिष्टान्न विविध मेवाजिके।
मैदा सहित मिलाय पिंड करिये तिके ॥
समयसार पद वंदि भेंट आगे धरूं।
जम्बूस्वामि मनाय वेदनीको हरूं ॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीमज्जम्बूस्वामिन् वेदनीय कर्म क्षयार्थं नैवेद्यं नि० ॥ ५ ॥

चन्द्रकान्ति और सूर्यकान्ति शुभमणि भली।
अरु स्नेही वाति जोय आनँद रली ॥
अष्ट गुण जुत ध्याय जम्बु पूजों सदा।
चार आयु थिति मेटि मरूं नाहीं कदा ॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीमज्जम्बूस्वामिन् आयु कर्म क्षयार्थं दीपं नि० ॥ ६ ॥

धूप दशांग मँगाय अग्नि संग क्षेपहूँ।
धूपायन जू कनकमय सार जलेय हूँ ॥
नीच गोत्र अरु ऊंच गोत्र नाहिं पाय हूँ।
आतमरूपी थाय निरंजन ध्याय हूँ ॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीमज्जम्बूस्वामिन् गोत्र कर्म क्षयार्थं धूपं नि० ॥ ७ ॥

श्रीफल लोंग बदाम छुहारे लायकें।
एला पूगी आदि मनोज्ञ मिलायकें ॥

अष्ट गुण जुत वंद सकल भवकूं हरों ।
नामकर्म झर जाँय प्रभु पायन परों ॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीमज्जम्बूस्वामिन् नाम कर्म क्षयार्थं फलं नि०।८।

छप्पय ।

क्षायक सम्यक शुद्ध ज्ञान, केवलमय सोहै ।
केवलदर्शन ज्योति, अगुरुलघु सूछम जो है ।
इकमें नेक समाय, हर्ष भारी गुण तेरो ।
अव्याबाध रहाय, अर्घ दे चरणन चेरो ॥

दोहा ।

जल चन्दन अक्षत पहुप, और अधिक नैवेद ।
दीप धूप फल जोर कर, जिन पूजों निरखेद ॥

अडिल्ल ।

घंटा भेरि मृदंग नगारे मिलि बजें ।
तुरही झाझर झांझ मजीर धुनि गजे ॥
पूर्ण कनक भर थाल अर्घ कीजे महा ।
मोक्ष शिखरके हेतु कीर्तिलक्ष्मी लहा ॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीमज्जम्बूस्वामिन् अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं नि०।९।

प्रत्येक अर्घ ।

सोरठा ।

क्षायक रुचिमय धर्म, आदि धर्म धर्मनिविषै ।
जिहि काटे सब कर्म, अर्घ चढ़यरु वीनवूं ॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीमज्जम्बूस्वामिन् क्षायकसम्यक्त गुण विराजमानाय अर्घं नि० ॥ १ ॥

जामें द्रव्य अनंत, व्यय उत्पत्ति ध्रुवता लिये ।
हैं जैसे भासंत, केवलज्ञान जजूं सदा ॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीमज्जम्बूस्वामिन् केवलज्ञान विराजमानाय अर्घं नि० ॥ २ ॥

केवलदर्शन ज्योति, प्रगटी चेतन मुकुरमें ।
जिहि देखे सब होत, भाव सहित पूजा करों ॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीमज्जम्बूस्वामिन् केवलदर्शन विराजमानाय अर्घं नि० ॥ ३ ॥

वीर्य अनंतानंत, तावल कर चिर थिर रहे ।
लोकशिखरके अन्त, वन्दों मैं नित भावसों ॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीमज्जम्बूस्वामिन् अनन्तवीर्य गुण विराजमानाय अर्घं नि० ॥ ४ ॥

सूक्षम थूल न होय, पुद्गल पिंड झरा ।
यहाँ लघु भारी गुण जोय, पूज करों नित चावसों ॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीमज्जम्बूस्वामिन् सूक्ष्मत्व गुण विराजमानाय अर्घं नि० ॥ ५ ॥

इकमें नेक समाय, अवगाहन गुणतें सदा ।
यह जिन आगम छाह, अर्घ देय पदको नमूं ॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीमज्जम्बूस्वामिन् अवगाहन गुण विराजमानाय अर्घं नि० ॥ ६ ॥

षट् प्रकार क्षय वृद्धि, द्रव्य मॉहि यह होत है।
सत्ता भिन भिन सिद्ध, अगुरुलघू राखे सदा।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीमज्जम्बूस्वामिन् अगुरुलघु गुण विराजमानाय अर्घं नि० ॥ ७ ॥

बाधक भाव नशाय, सुख अनंत प्रगट्यो तहॉ।
अव्याबाध रहाय, पूजा कर पायन परूँ ॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीमज्जम्बूस्वामिन् अव्याबाध गुण विराजमानाय अर्घं ॥ नि० ॥

जयमाला।

दोहा।

वर्द्धमान जिन वंदिके, गुरु गौतमके पाय।
और सुधर्मा मुनि प्रणामि, जम्बूस्वामि मनाय ॥१॥

पद्धरी छंद।

जय विद्युन्माला देव सीर। पंचम [1]दिवमें महिमा अपार।
चय राजगृहीपुर शेठ थान। उपज्यो [2]मनमथ अंतिम सुजान ॥२॥
लघु वयमें उर वैराग धार। जगरूप अथिर जान्यो कुमार॥
तब सब परिवार उछाहठान। व्याही वनिता चतु वय समान ॥३॥
रतननको दीप दिपै महल। वनिता बैठी जुत काम शैल॥
तिनसों ज्ञानादिक वच उचार। रागादि रहित कीनी सुनार ॥४॥
तब विद्युतप्रभ इक चोर आय। रस भीनी अष्ट कथा कहाय॥
ताकूं वैराग्य कथा प्रकाश। निज तत्त्व दिखायो चिदविलास ॥५॥

१. स्वर्ग. २ कामदेव.

जग अथिर रूप थिर नाहिं कोय। नाहिं शरण जीवको आनि होय॥
संसार भ्रमणविधि पाँच ठान। इक जीव भ्रमत नहिं साथ आन॥६॥
षट द्रव्य भिन्न सत्ता लखाय। जिय अशुचि देह माहीं रमाय॥
आश्रव परसों जब प्रीति होय। संवर चिद निज अनुभूति जोय॥७॥
तप कर वसु विधि सत्ता नशाय। निज स्वयंसिद्ध त्रय लोक गाय॥
निजधर्म लखे कोई पुमान। दुर्लभ नहिं आतम ज्ञान भान॥८॥
द्वादश भावन यह भाँति भाय। बहु जन जुत भेटे वीर पाय॥
दीक्षा धरके चतु ज्ञान थाय। ऋधि सप्त लई महिमा अथाय॥९॥
सन्मति गौतम धर्मा मुनीश। शिव पाई तबै केवल जगीश॥
वाणी जु खिरी अक्षरन रूप। तत्त्वनिको इमि भाष्यो स्वरूप॥१०॥
आपापर पारसों प्रीति होय। चैतन्य बंधे चव भांति सोय॥
तब निज अनुभूति प्रकाश पाय। सत्ता सूं कर्म झड़े अथाय॥११॥
चव बंध रहित तव होत जीव। सिद्धालय थिरता है सदीव॥
षट द्रव्य बखानों भेदरूप। चैतन्य और पुद्गल स्वरूप॥१२॥
चालन सहचारी थिति सुहाय। वरतावन द्रव्यन कूं सु भाय॥
पुनि सर्व द्रव्य जामें समाय। अवकाश द्वितीय अवलोक गाय॥१३॥
मुनि श्रावकको आचार भास। आचारज ग्रन्थनमें प्रकाश॥
पुनि आरजखंड विहार कीन। जम्बुवनमें थितिजोग लीन॥१४॥
सब कर्मनको छयकर मुनीश। शिववधू लही विश्वास वीस॥
मथुरातें पश्चिम कोस आध। क्षत्रीपदमें महिमा अगाध॥१५॥
व्रजमंडलमें जो भव्य जीव। कातिक वदि रथ काढ़त सदीव॥
कैऊ पूजत कैऊ नृत्य ठान। कैऊ गावत विधि सहित तान॥१६॥

निशि [1]द्योस होत उत्सव महान। पूरत भव्यनके पुण्य थान॥
पदकमल भाग तुव दास होय। निज भक्ति विभव दे अरज मोय॥१७॥

घत्ता त्रिभंगी छंद।

जल चन्दन ल्याये अछत मिलाये, पुष्प सुभाये मन भाये।
नैवेद्य सुदीपं दश विधि धूप, फल जु अनूपं श्रुत गाये॥
सुवरणको थालं भर जु रसालं, फेरि त्रिकालं शिर नाये।
गुणमाल निहारी मम उर धारी, जगत उजारी सुखदाये॥१८॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाण सिद्धपरमेष्ठिने श्रीमज्जम्बूस्वामिने अर्घं नि०॥



कवि आशारामजी कृत

५ श्रीसोनागिरि पूजा।



अडिल्ल छंद।

जम्बू द्वीप मझार भरत क्षेत्र सु कहो।
आर्यखंड सुजान भद्रदेश लहो॥
सुवर्णगिरि अभिराम सु पर्वत है तहाँ।
पंच कोड़ि अरु अर्द्ध गये मुनि शिव तहाँ॥१॥

दोहा।

सोनागिरिके शीसपर, बहुत जिनालय जान।
चन्द्रप्रभू जिन आदि दे, पूजों सब भगवान॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीसोनागिरिसिद्धक्षेत्रसे साडे पाँच करोड मुनि सिद्धपद

१ दिन।

प्राप्तये अत्र अवतर अवतर संवौषट् आव्हाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ॥

अष्टक ।

सारंग छंद ।

पद्मद्रहको नीर ल्याय, गंगासे भरके ।
कनक कटोरी माँहि, हेम थारनमें भरके ॥
सोनागिरिके शीस, भूमि निर्वाण सुहाई ।
पंच कोड़ि अरु अर्द्ध, मुक्ति पहुँचे मुनिराई ॥
चन्द्रप्रभु जिन आदि, सकल जिनवर पद पूजों ।
स्वर्गमुक्ति फल पाय, जाय अविचल पद हूजों ॥

दोहा—सोनागिरिके शीसपर, जेते सब जिनराज ।
तिन पद धारा तीन दे, तृषा हरनके काज ॥

ॐ ह्रीं श्रीसोनागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

केशर आदि कपूर, मिले मलयागिरि चन्दन ।
परिमल अधिको तास, और सब दाह निकंदन ॥ सो०

दोहा—सोनागिरिके शीसपर, जेते सब जिनराज ।
ते सुगंध कर पूजिये, दाह निकन्दन काज ॥

ॐ ह्रीं श्रीसोनागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चन्दनं नि० ॥ २ ॥

तंदुल धवल सुगन्धित ल्याय, जल धोय पखारों ।
अक्षयपदके हेतु, पुंज द्वादश तहाँ धारों ॥ सो०

दोहा–सोनागिरिके शीसपर, जेते सब जिनराज
तिनपद पूजा कीजिये, अक्षयपदके काज ॥

ॐ ह्रीं श्रीसोनागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं नि० ॥ ३।

बेला और गुलाब मालती कमल मँगाये।
पारिजातक पुष्प ल्याय, जिन चरन चढ़ाये ॥ सो०

दोहा–सोनागिरिके शीसपर, जेते सब जिनराज।
ते सब पूजों पुष्प ले, मदन विनाशन काज ॥

ॐ ह्रीं श्रीसोनागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं नि० । ४

व्यंजन जो जग माँहि, खांड़ घृत माँहि पकाये।
मीठे तुरत बनाय, हेम थारी भर ल्याये ॥ सो०

दोहा–सोनागिरिके शीसपर, जेते सब जिनराज ॥
ते पूजों नैवेद्य ले, क्षुधा हरणके काज ॥

ॐ ह्रीं श्रीसोनागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि ।५।

मणिमय दीपप्रजाल, धरों पंकति भर थारी।
जिनमंदिर तम हार, करहु दर्शन नर नारी ॥ सो०

दोहा–सोनागिरिके शीसपर, जेते सब जिनराज।
करों दीप ले आरती, ज्ञान प्रकाशन काज ॥

ॐ ह्रीं श्रीसोनागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं नि० ॥ ६ ॥

दश विध धूप अनूप, अग्नि भाजनमें डालों
जाकी धूम सुगंध रहे, भर सर्व दिशा लों ॥ सो०

दोहा–सोनागिरिके शीसपर, जेते सब जिनराज।
धूप कुंभ आगे धरों, कर्म दहनके काज॥
ॐ ह्रीं श्रीसोनागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं नि० ॥७॥

उत्तम फल जग माँहि, बहुत मीठे अरु पाके।
अमित अनारं अवार, आदि अमृतरस छाके॥सो०
दोहा–सोनागिरिके शीसपर, जेते सब जिनराज।
उत्तम फल तिनको मिलो, कर्म विनाशन काज॥
ॐ ह्रीं श्रीसोनागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० ॥८॥

जल आदिक वसु द्रव्य, अर्घ करके धर नांचो।
बाजे बहुत बजाय, पाठ पढ़के सुख सांचो॥सो०
दोहा–सोनागिरिके शीसपर, जेते सब जिनराज।
ते हम पूजे अर्घले, मुक्ति रमनके काज॥
ॐ ह्रीं श्रीसोनागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं नि०॥९॥

अडिल्ल छंद।

श्रीजिनवरकी भक्ति, सु जे नर करत हैं।
फलवांछा कुछ नाहिं, प्रेम उर धरत हैं॥
ज्यों जगमाँहि किसान, सु खेतीको करे।
नाज काज जिय जान सु शुभ आपहिं झरें॥
ऐसे पूजा दान, भक्ति यश कीजिए।
सुख सम्पति गति मुक्ति, सहज कर लीजिये॥
ॐ ह्रीं श्रीसोनागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१०॥

जयमाला ।

दोहा ।

सोनागिरिके शीसपर, जिनमन्दिर अभिराम ।
तिन गुणकी जयमालिका, वर्णन 'आशाराम' ॥१॥

पद्धरी छन्द ।

गिरि नीचे जिनमन्दिर सु चार । ते यतिन रचे शोभा अपार ॥
तिनके अति दीरघ चौक जान । तिनमें यात्री मेलें सु आन ॥२॥
गुमटी छज्जा शोभित अनूप । ध्वज पंकति सोहे विविध रूप ॥
वसु प्रातिहार्य तहां धरें आन । सब मंगल द्रव्यनिकी सुखान ॥३॥
दरवाजोंपर कलशा निहार । कर जोर सु जय जय ध्वनि उचार ॥
इक मंदिरमें यतिराज मान । आचार्य विजयकीर्ति सु आन ॥४॥
तिन शिष्य भगीरथ विबुध नाम । जिनराज भक्ति नहिं और काम ॥
अब पर्वतको चढ़ चलो जान । दरवाजो तहां इक शोभे महान ॥५॥
तिस ऊपर जिन प्रतिमा निहार । तिन वंदि पूज आगे सुधार ॥
तहां दुखित भुखितको देत दान । याचकजन तहां है अप्रमान ॥६॥
आगे जिनमन्दिर दुहु ओर । जिनगान होत वादित्र शोर ॥
माली बहु ठाड़े चौक पौर । ले हार कलंगी तहां देत दौर ॥७॥
जिन-यात्री तिनके हाथ मांहि । बखशीस रीझ तहां देते जाहिं ॥
दरवाजो तहां दूजो विशाल । तहां क्षेत्रपाल दोऊ ओर लाल ॥८॥
दरवाजे भीतर चौक माहि । जिनभवन रचे प्राचीन आहिं ॥
तिनकी महिमा वरणी न जाय । दो कुंड सुजल कर अति सुहाय ॥९॥
जिनमन्दिरकी वेदी विशाल । दरवाजो तीजो बहु सुढाल ॥

ता दरवाजे पर द्वारपाल। ले मुकुट खड़े अरु हाथ माल ॥१०॥
जे दुर्जनको नहिं जान देत। ते निंदकको ना दरश देत ॥
चल चन्द्रप्रभूके चौक माहिं। दालाने तहां चौतर्फ आय ॥११॥
तहां मध्य सभामंडप निहार। तिसकी रचना नाना प्रकार ॥
तहां चन्द्रप्रभूके दरश पाय। फल जात लहो नर जन्म आय ॥१२॥
प्रतिमा विशाल तहां हाथ सात। कायोत्सर्ग मुद्रा सुहात ॥
वंदें पूजें तहां देय दान। जन नृत्य भजन कर मधुन जान ॥१३॥
ता थेई थेई थेई बाजत सितार। मृदंग वीन मुहचंग सार ॥
तिनकी ध्वनि सुन भवि होत प्रेम। जयकार करत नाचत सुएम॥१४॥
वे स्तुतिकर फिर नाय शीस। भवि चले मनोकर कर्म खीस ॥
यह सोनागिरि रचना अपार। वरणनकर को कवि लहे पार ॥१५॥
अति तनक बुद्धि 'आशा' सुपाय। वश भक्ति कही इतनी सु गाय ॥
मैं मन्द बुद्धि किमि लहों पार। बुधिमान चूक लीजो सुधार ॥१६॥

ॐ ह्रीं श्रीसोनागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

दोहा।

सोनागिरि जयमालिका, लघु मति कहा बनाय।
पढ़ै सुने जे प्रीतिसे, सो नर शिवपुर जाय ॥ १७ ॥

इत्याशीर्वादः।

स्व० त्यागी दौलतरामजी वर्णी कृत

६ श्रीनयनागिरि पूजा।

दोहा।

पावन परम सुहावनो, गिरि रेशिन्दि अनूप।
जजहुँ मोद उर धार अति, कर त्रिकरण[1] शुचिरूप॥

ॐ ह्रीं श्रीनयनागिरिसिद्धक्षेत्रसे वरदत्तादि पंच ऋषिराज सिद्धपद प्राप्तये अत्र अवतर अवतर संवौषट् आव्हानन। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अष्टक।

(चाल नंदीश्वरपूजाकी)

अति निर्मल क्षीरधि, वारि भर हाटक झारी।
जिन अग्र देय त्रय धार, करन त्रिरुग[2] छारी॥
पन वरदत्तादि मुनीन्द्र, शिवथल सुखदाई।
पूजों श्रीगिरिरेशिन्दि, प्रमुदित चित थाई॥

ॐ ह्रीं श्रीगिरिरेशिन्दिसिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जल नि०॥ १॥

मलयागिरि चन्दन सार, केशर संग घसी।
शीतल वासित सुखकार, जन्माताप कसी॥पन वर०

ॐ ह्रीं श्रीगिरिरेशिन्दिसिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं नि०॥ २॥

---

१ मन, वचन, काय योग। २ जन्म, जरा, मरण।

शुचि विमल नवल[1] अति श्वेत, द्युति जित सोमतनी।
सो ले पद अक्षय हेत, अक्षत युक्त अनी॥ पन वर०

ॐ ह्रीं श्रीगिरिरेशिन्दिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३॥

शुभ सुमन त्रिदश-तरु[2]केय, स्वच्छ करण्ड[3] भरी।
मदब्रह्म तनुज[4] हरनेय, भेंट जिनाग्र धरी॥ पन वर०॥

ॐ ह्रीं श्रीगिरिरेशिन्दिसिद्धक्षेत्रेभ्यो कामवाण विध्वंशनाय पुष्पं नि०॥ ४॥

छुध फणोंहि[5] विहंगम नाथ[6], नेवज सद्यानी।
कर विविध मधुर रस साथ, विधि युत अमलानी॥पन०

ॐ ह्रीं श्रीगिरिरेशिन्दिसिद्धक्षेत्रेभ्यो छुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि०॥ ५॥

मिथ्यातम भानन भानु, स्वपर उजास कुनी।
ले मणिमय दीप सुभानि, विमल प्रकाश धुनी॥ प०

ॐ ह्रीं श्रीगिरिरेशिन्दिसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विध्वशनाय दीपं नि०॥ ६॥

कर्मेन्धन जारन काज, पावक भाव मही।
दर दश विधि धूपहि साज, खेय उछाह गही॥प०

ॐ ह्रीं श्रीगिरिरेशिन्दिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामिति स्वाहा॥ ७॥

---

१ नूतन-नये। २ कल्पवृक्ष सम्बन्धी। ३ पिटारा। ४ काम। ५ सर्प। ६ गरुड़।

दृग घ्राण रसन मन प्रिय, प्रासुक रस भीने।
लख दायक मोक्ष पदीय, लै फल अमलीने ॥ प० ॥
ॐ ह्रीं श्रीगिरिरेशिन्दिसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं नि० ॥८॥

शुचि अमृत आदि समग्र, सजि वसु द्रव्य प्रिया।
धारों त्रिजगतपति अग्र, धर वर भक्त हिया ॥प०॥
ॐ ह्रीं श्रीगिरिरेशिन्दिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं नि०॥९॥

जयमाला।

दोहा।

जग बाधक विधि बाधकर, है अबाध शिव धाम।
निवसे तिन गुण धर सुहृद, गाऊँ वर जयदाम ॥१॥

पद्धरी छन्द।

जय जय जिन पार्श्व जगात्रि स्वाम। भवदधि तारण तारी ललाम ॥
हति घाति चतुक है युक्त सन्त। दृगज्ञान शर्म वीरज अनन्त॥१॥
सो समवशरण कमला समेत। विहरत विहरत पुर ग्राम खेत॥
सुर नर मुनिगण सेवत कृपाल। आये भव हितु तिहि अचल भाल॥२॥
अरु वरदत्तादि मुनीन्द्र पंच। चतुर्विधि हानि केवल ज्ञान संच॥
लख सर्व चराचर त्रिजग वेद्य। त्रैकालिक युगपत पद अमेय॥३॥
निज आनन [1]द्विविध द्रपस्वरूप। उपदेश भरण भवि भर्म कूप॥
दृगज्ञान चरण सम्यक प्रकार। शिवपथ साधक कह त्रिजग तार॥४॥
अरु सप्त तत्त्व षट द्रव्य केव। पञ्चास्तिकाय नव पदन भेव॥
दृग कारण सो दरशाय ईश। तिहि भूधर शिर पुनि अघाति पीश॥५॥

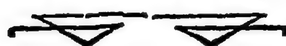
१ यति और श्रावक धर्म।

पंचमगति निवसे तव सुरेश। आके ले सुरगण सँग अशेष॥
रेशिन्दि शिखर रज शीस ल्याय। किय पंचम कल्यानक उछाय॥६॥
मैं तिन पद पावन चाह ठान। वंदों पुनि पुनि सो सुखद थान॥
मन वच तन तिन गुण स्व उर धार। 'वर्णी दौलत'अनचाह हार॥७॥
ॐ ह्रीं श्रीगिरिरेशिन्दिसिद्धक्षेत्रेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा।

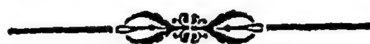
आनन्द कन्द मुनीन्द्र गुण, धर उरकोष मझार।
पूजें ध्यावें सो सुधी, ह्वै लघु महि भव पार॥८॥

इत्याशीर्वादः।



पं० दरयावजी चौधरी कृत

७ श्रीद्रोणागिरि पूजा।



दोहा।

सिद्धक्षेत्र परवत कहो, द्रोनागिरि तसु नाम।
गुरुदत्तादि मुनीश नमि, मुक्ति गये इहि ठाम॥ १ ॥
इहि थल जिन प्रतिमा भवन, बने अपूरव धाम।
तिन प्रति पुष्प चढ़ाइये, और सकल तज काम॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीद्रोणागिरि सिद्धक्षेत्रसे गुरुदत्तादि मुनि सिद्धपद प्राप्तये अत्र अवतर अवतर संवौषट्। आव्हाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्। सन्निधिकरण॥

अष्टक ।

सुन्दरी छन्द ।

सरस छीर सु नीर गहीर ले,
जिन सुचरनन धारा दीजिए ।
नशत जन्म जरा मरन रोग हैं,
मिटत भवदुख शिवसुख होत हैं ॥

ॐ ह्रीं श्रीद्रोणागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्म मृत्यु विनाशनाय जलं नि० ॥ १ ॥

अगर कुमकुम चन्दन गारिये,
जिन चढ़ाय सो ताप निवारिये ।
जगत जन जे भव आताप ते,
चर्चे जिनपद अघ इमि नाशने ॥

ॐ ह्रीं श्रीद्रोणागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो ससारताप विनाशनाय चन्दनं नि०२

देवजीरो उर सुख दासके, पावनी घन केशर आदिके।
सरस अनयारे अनवीधे ले,पुंज जिनपद आनन तान दे॥

ॐ ह्रीं श्रीद्रोणागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षत नि०॥३॥

सरस बेला और गुलाब ले,केवरो इन आदि सुवास ले।
जिनचढ़ाय सुहर्ष सुपावते,मदनकाम व्यथा सब नाशते

ॐ ह्रीं श्रीद्रोणागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं नि०।४।

पूरियाँ पेड़ादि सु आनिये,
खोपरा खुरमादिक जानिये ।

---

१ विना घुने ।

सरस सुन्दर थार सु धरिये,
जिन चढ़ाय छुधादि निवारिये ॥

ॐ ह्रीं श्रीद्रोणागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो छुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि० ५

रतन मणिमय जोति उद्योत है,
मोह तम नशि ज्ञानहु होत है।
करत जिन तट भविजन आरती,
सकल जन्मन ज्ञान सु भासती ॥

ॐ ह्री श्रीद्रोणागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि० ६

कूट वसु विधि धूप अनूप है,
महका रही अति सुन्दर अग्नि है।
खेइये जिन अग्र सु आयकें,
ज्वलन मध्य सु कर्म नशायकें ॥

ॐ ह्रीं श्रीद्रोणागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

नारियल सु छुहारे ल्याइये, जायफल बादाम मिलाइये।
लायची पुंगी फल ले सही, जजत शिवपुरकी पावै मही॥

ॐ ह्रीं श्रीद्रोणागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जल सु चन्दन अक्षत लीजिये, पुष्प धर नैवेद्य गनीजिये।
दीपधूपसुफल बहुसाजहीं, जिनचढ़ाय सुपातकभाजहीं

ॐ ह्री श्रीद्रोणागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

करत पूजा जे मन लायकें,
हेत निज कल्यान सु पायकें।
सरस मंगल नित नये होत हैं,
जजत जिनपद ज्ञान उदोत हैं ॥

ॐ ह्रीं श्रीद्रोणागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१०॥

जयमाला।

दोहा।

ये ही भावना भायकें, करों आरती गाय।
सिद्धक्षेत्र वर्णन करों, छंद पद्धड़ी गाय ॥ १ ॥

पद्धडी छन्द

श्रीसिद्धक्षेत्र पर्वत सु जान। श्रीद्रोनागिरि ताको सु नाम ॥
तहँ नदी चन्द्रभागा प्रमान। मगरादि मीन तामें सुजान ॥१॥
ताको अति सुदर वहे नीर। सरिता सुजान भारी गँभीर ॥
यात्री सु देश देशनके आये। अस्नान करत आनंद पाय ॥२॥
फलहोड़ी ग्राम कहो वखान। जिनमन्दिर तामें एक जान ॥
पूजा सु पाठ तहां होत नित्त। स्वाध्याय वाचनामे सुचित्त॥३॥
अब गिरि उतंग जानो महान। ता ऊपरको लागे शिवान॥
तरुवर उन्नत अति सघन पाँत। फल फूल लगे नाना सु भाँत ॥४॥
तहँ गुफा रही सुन्दर गहीर। मुनिराज ध्यान धारे तपीस ॥
गिरि शीस बीस जिन बने धाम। अब और होय तिनको प्रनाम॥५॥
तहँ झालर घँटा बजे सोय। वादित्र बजें आनन्द होय ॥
तहँ प्रातिहार्य मंगल सु दर्व। भामंडल चन्द्रोपंक सु सर्व ॥६॥

जिनराज विराजत ठाम ठाम । वंदत भविजन तज सकल काम ॥
पूजा सु पाठ तहँ करे आय । ताथेई थेई थेई आनन्द पाय ॥७॥
अब जन्म सुफल अपनो सु जान । श्रीजिनवर पद पूजे सु आन ॥
मैं भ्रम्यो सदा या जग मझार । नहि मिली शरन तुमरी अपार ॥८॥

सोरठा ।

सिद्धक्षेत्र सु महान, विघन हरन मंगल करन ।
वन्दत शिवसुख थान, पावत जे निश्चय भजे ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीद्रोणागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

गीतिका छद ।

जाके सुपुत्र पौत्रादि सम्पति, होय मगल नित नये ।
जो जजत भजत जिनेन्द्रपद, अब तासु विघन सु नशि गए ॥
मैं करों थुति निज हेत मंगल, देत फल वांछित तही ।
'दरयाव' है जिन दास तुमरो, आश हम पूरन भई ॥

इत्याशीर्वादः ।

स्व० कवि जवाहरलालजी कृत

८ श्रीगिरनार पूजा ।



छप्पय ।

श्रीगिरनार शिखर परवत, दक्षिण दिश सोहे ।
नेमिनाथ जिन मुक्तिधाम, सब जन मन मोहे ॥
कोड़ बहत्तर सात शतक, मुनि शिवपद पायो ।
ताथल पूजन काज, भविक चित अति हर्षायो ॥

तिस तीरथराज सु क्षेत्रको, आह्वानन विधि ठानकर।
पूजूं त्रिजोग मनवचन तन, श्रावकजन गुन गानकर॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीगिरनारसिद्धक्षेत्रसे श्रीनेमिनाथसंबुकुमार प्रद्युम्नकुमार अनिरुद्धकुमार और बहत्तर करोड सातसै मुनि मोक्षपद प्राप्तये अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानन। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठः स्थापन। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अष्टक।

दोहा।

प्रभु तुम राजा जगतके, कर्म देहि दुख मोय।
करूं यथारथ वीनती, हमपै करुणा होय॥

चाल लावनीकी।

तीरथ गढ़ गिरनारको, नित पूजो हो भाई।
हेम अंग भर तीरथादिक, शुभ प्रासुक पावन लाई॥
जन्म मरण जरा नाशन कारन, धार देहु ढरकाई॥भ०
जंबूदीप भरत आरजमें, सोरठ देश सोहाई।
सेसावनके निकट अचल तहँ, नेमिनाथ शिवपाई॥भ०

ॐ ह्रीं श्रीगिरनारसिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥ १॥

सुन्दर चन्दन कदली नन्दन, केशर संग घसाई।
भवदुखताप मिटावन लखके, अरचों जिनपद आई॥भ०

ॐ ह्रीं श्रीगिरनारसिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा॥ २॥

शसि सम श्वेत वर्ण मुक्ता शित,अछत अखंड सुहाई।
चरन शरन प्रभू अक्षै निधि लख,पूंज दियें सो पाई ॥भ०

ॐ ह्री श्रीगिरनार सिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

कुसुम वर्णपन विविध गंध जुत, चुन चुन भेट धराई।
पूजन किय हो शील वर्द्धना, मनोवाण जय लाई ॥भ०

ॐ ह्रीं श्रीगिरनारसिद्धक्षेत्रेभ्यो कामवाण विध्वशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

खाजा ताजा मोदक गूजा, फेणी सरस वनाई ।
षट्रस व्यञ्जन मिष्ट सुधामय, हेम थार भर लाई ॥भ०

ॐ ह्रीं श्रीगिरनारसिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

दीप ललित कर घृत पूरित भर,उज्ज्वल जोति जगाई।
करों आरती जिनपदकेरी, मिथ्या तिमिर पलाई ॥भ०

ॐ ह्रीं श्रीगिरनारसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

अगर तगर कर्पूर चूर बहु, द्रव्य सुगंध मिलाई ।
खेय धनजंय धूप धूम मिस, वसु विधि देय जराई ॥भ०

ॐ ह्रीं श्रीगिरनारसिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

एला दाड़िम श्रीफल पिस्ता, पुंगीफल सुखदाई ।
कनक पात्रधर भविजन पूजें, मनवांछित फलपाई॥भ०

ॐ ह्रीं श्रीगिरनारसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

अष्ट द्रव्यका अर्घ सँजोवो, घंटा नाद बजाई।
गीत नृत्यकर जजों 'जवाहर,' आनन्द हर्ष बधाई॥भ०

ॐ ह्रीं श्रीगिरनारसिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

जयमाला ।

जोगीरासा छंद ।

उर्जयंति गिरिराज मनोहर, देखत ही मन मोहे।
राजुलपति शिवथान विराजे, उत्तम तीरथ जो है॥
पुत्र पौत्र हरि कृष्ण प्रचुर मुनि, पंचमगति तहँ पाई।
तास तनी महिमाको बरने, श्रवण सुनत हरषाई ॥१॥

पद्धड़ी छंद ।

जै जै जै नेमि जिनन्द चन्द्र। सुर नर विद्याधर नमत इन्द्र ॥
जै सोरठ देश अनेक थान। जूनागढपै शोभित महान ॥२॥
तहां उग्रसेन नृप राजद्वार। तोरण मंडप शुभ बने सार ॥
जै समुदविजय सुत ब्याह काज। आये हर बलि जुत आन साज॥३॥
तहँ जीव बँधे लख दया धार। रथ फेर जंतु बंधन निवार ॥
द्वादश भावन चिंतवन कीन। भूषण वस्त्रादिक त्याग दीन ॥४॥
तज परिग्रह परिणय सर्व संग। ह्वै अनागार विजई अनंग ॥
धर पंच महाव्रत तप मुनीश। निज ध्यान धरो हो केवलीश ॥५॥

इस ही सुथान निर्वाण थाय । सो तीरथ पावन जगत माय ॥
अरु शंभु आदि प्रद्युम्न कुमार। अनिरुद्ध लही पदमुक्ति धार ॥६॥
पुनि राजुल हू परिवार छांड । मन वचन कायकर जोग मांड ॥
तप तप्यौ जाय तिय धीर वीर । सन्यास धार तजकें शरीर ॥७॥
तिय लिंग छेद सुर भयो जाय । आगामी भवमें मुक्ति पाय ॥
तहँ अमरगण उर धर अनन्द। नितप्रति पूजत हैं श्रीजिनन्द ॥८॥
अरु निरतत [1]मधवा युक्तनार, देवनकी देवी भक्ति धार ॥
ता थेई२ थेई२ करन जाय। फिरि फिरि फिरि फिरिकी ल्हाय ॥९॥
मुहचंग वजावत तारवीन । तननन तननन तन अति प्रवीन ॥
कंसाल ताल मिरदंग और । झालर घंटादिक अमित शोर ॥१०॥
आवत श्रावकजन सर्व ठाम । बहु देश देश पुर नगर ग्राम ॥
हिलमिल सब संघ समाज जोर। हय गय वाहन चढ़ रथ बहोर॥११॥
जात्रा उत्सव निशिदिन कराय। नर नारिउ पावत पुण्य आय ॥
को वरनत तिस महिमा अनूप। निश्चय सुर शिवके होय भूप॥१२॥

घत्ता ।

श्रीनेमि जिनन्दा आनन्द कन्दा, पूजत सुर नर हित धारी ।
तिस नमत 'जवाहर' जुग कर शिर धर, हर्ष धार गढ गिरनारी॥१३॥

ॐ ह्रीं श्रीगिरनारसिद्धक्षेत्रसे नेमिनाथ शंवु प्रद्युम्न अनिरुद्ध और बहत्तर कोटि सातसौ मुनि मोक्षपद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा ।

जे नर वंदन भाव धर, सिद्धक्षेत्र गिरनार ।
पुत्र पौत्र सम्पति लहे, पूरन पुण्य भंडार ॥१४॥

---

1 इन्द्र ।

चौपाई ।

सम्वत विक्रमराय ममान । वर्षु जुगै निधि इकै अंक मुजान ॥
पोषमास पख सोम बखान । पंचमि तिथि रविवार शुभ जान ॥१५॥
रच्यौ पाठ पुजन सुखदाय । पढ़त सुनत चित अति हुलसाय ॥
जात्रा करें धन्य ते जीव । पावें फल है शिवतीय पीव ॥१६॥

इत्याशीर्वादः ।



श्रीयुत भगोतीलालजी कृत-

९ श्रीशत्रुंजय पूजा ।



चौपाई ।

श्रीशत्रुंजयशिखर अनूप ।
पांडव तीन बड़े शुभ भूप ॥
आठ कोडि मुनि मुक्ति प्रधान ।
तिनके चरण नमूं धर ध्यान ॥ १ ॥
तहाँ जिनेश्वर बहुत सरूप ।
शान्तिनाथ शुभ मूल अनूप ॥
तिनके चरण नमूं त्रिकाल ।
तिष्ठ तिष्ठ तुम दीनदयाल ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशत्रुंजय सिद्धक्षेत्रसे आठ कोडि मुनि और तीन पांडव मोक्षपद प्राप्तये अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ. ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

अष्टक।

त्रोटक-छंद।

क्षीरोदधि नीरं उज्जल सारं, गंध गहीरं ले आया।
मैं सन्मुख आया धारदिवाया, शीसनवाया खोलहिया
पांडव शुभतीनं सिद्धलहीनं, आठकोडि मुनि मुक्तगये।
श्रीशत्रुंजयपूजों सन्मुखहूजो, शान्तिनाथ शुभमूलनये

ॐ ह्रीं श्रीशत्रुंजयसिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

मलयागिरि लाऊं गंध मिलाऊं,
केशर डारी रंग भरी।
जिन चरन चढ़ाऊं सन्मुख जाऊं,
व्याधि नशाऊं तपत हरी ॥ पां० ॥

ॐ ह्रीं श्रीशत्रुंजयसिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

तन्दुल शुभ चोखे बहुत अनोखे,
लखि निर्दोखे पुंज धरूं।
अक्षयपद दीजो सब सुख कीजो,
निजरस पीजो चरण परूं ॥ पां० ॥

ॐ ह्रीं श्रीशत्रुंजयसिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

शुभ फूल सुवासी मधुर प्रकासी,
आनंद रासी ले आयो।

मो काम नशाया शील बढ़ाया,
अमृत छाया सुख पायो ॥ पां० ॥

ॐ ह्रीं श्रीशत्रुंजयसिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

नेवज शुभ लाया थार भराया,
मंगल गाया भक्ति करी ।
मो क्षुधा नशाया सुख उपजाया,
ताल बजाया सेव करी ॥ पां० ॥

ॐ ह्रीं श्रीशत्रुंजयसिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

दीपक ले आया जोति जगाया,
तुम गुण गाया चरण परूं ।
मैं शरणे आया शीस नवाया,
तिमिर नशाया नृत्य करूं ॥ पां० ॥

ॐ ह्रीं श्रीशत्रुंजयसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

दश गंध कुटाई धूप बनाई,
अग्नि डार जिन अग्र धरों ।
तुम कर्म जराई शिव पहुँचाई,
होय सहाई कष्ट हरो ॥ पां० ॥

ॐ ह्रीं श्रीशत्रुंजय सिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

फल प्रासुक चोखे बहुत अनोखे,
लख निर्दोखे भेट धरूं ।
सेवककी अरजी चितमें धरजी,
कर अब मरजी मोक्ष वरूं ॥ पां० ॥

ॐ ह्रीं श्रीशत्रुंजयसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

वसु द्रव्य मिलाई थार भराई,
सन्मुख आई नजर करो ।
तुम शिवसुखदाई धर्म बढ़ाई,
हर दुखदाई अर्घ करो ॥ पां० ॥

ॐ ह्रीं श्रीशत्रुंजयसिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

दोहा ।

पूरण अर्घ बनाय कर, चरणनमें चित लाय ।
भक्तिभाव जिनराजकी, शिव रमणी दरशाय ॥

ॐ ह्रीं श्रीशत्रुंजयसिद्धक्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १० ॥

जयमाला ।

पद्धरी छन्द ।

जय नमन करूं शिर नाय नाय, मोकूं वर दीजे हे जिनाय ॥
तुम भक्ति हियेमें रही छाय, सो उमग उमग अरु प्रीति लाय ॥ १ ॥
जय तुम गुण महिमा है अपार, नहिं कवि पंडितजन लहें पार ॥
जय तुच्छ बुद्धि मैं करत गान, तुम भक्ति हियेमें रही आन ॥ २ ॥
जय श्रीशत्रुंजय शिखर जोय, निर्वाणभूमि जानो जु सोय ॥

जहां पांडव तीन जु मुक्ति होय, जय राय युधिष्ठिर भीम जोय॥३॥
जय अरजुन जानो धनुष धीर, तासम नहि जानो कोई वीर ॥
जय आठ कोडि मुनि और सोय, तिन वरी नारि रंभा जु लोय॥४॥
जय सही परीषह बीस दोय, जय यथाख्यात चारित्र होय ॥
जय कायर कंपे सुनो जोय, वे ध्यानारूढ भये जु सोय ॥५॥
जय बारह भावन भाव सोय, तेरह विधि चारित धरो सोय ॥
जय कर्म करे चकचूर जोय, अरु सिद्ध भये संसार खोय ॥६॥
जय सेवक जनकी करहु सोय, जय दर्शन ज्ञान चारित्र होय ॥
जय रुलो नहीं संसार माय, अरु थोड़े दिनमें मुक्ति पाय ॥७॥
जय 'धर्मचन्द्रजी' मुनीम सोय, मो अल्प बुद्धिसों मेल होय ॥
वे धर्मांजन हैं बहुत जोय, सो कही उन्होंने मोहि सोय ॥८॥
तुम शत्रुंजय पूजा बनाय, तो बांचे भविजन प्रीति लाय ।
जय 'लाल भगोतीलाल' मोय, तिन रची पाठ पूजन जु सोय॥९॥
जय घाट वाढ़ कछु अर्थ होय, सोधो समार जैसे जु सोय ।
जय भूल चूक जामें जु होय, सो पंडितजन शोधो जु लोय ॥१०॥
जय सम्वतसर गुनईस जोय, अरु ता ऊपर गुनचास होय ।
जय पौष सुदी द्वादश जु होय, अरु बार शुक्र जानो जु सोय॥११॥
जय सेवक विनवे जोर हाथ, मो मिले अखयपद वेग नाथ ।
जय चाह रही नहीं और कोय, भवसिंधु उतारो पार मोय ॥१२॥

सोरठा ।

भक्तिभाव उर लाय, करके जिनगुण पाठको ।
मंगल आरती गाय, चरणन शीस नवायके ॥१३॥

ॐ ह्रीं श्रीशत्रुंजय सिद्धक्षेत्रसे तीन पाडव और आठ कोटि मुनि मोक्षपद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

गीता छंद।

हरपाय गाय जिनेन्द्र पूजूं, कृत कारित अनुमोदना।
शुभ पुण्य प्रापति अर्थ तिनकी, करी बहु विधि थापना॥ १३॥
जिनराज धर्म समान जगमें, और नाहीं हित घना।
तातें सु जानो भव्य तुम, नित पाठ पूजन भावना॥ १४॥

इत्याशीर्वादः।



श्रीयुत पं० दीपचंदजी परवार कृत

१० श्रीतारंगागिरि पूजा।



वरदत्तादिक ऊंठ कोटि मुनि जानिये,
मुक्ति गये तारंगागिरिसे मानिये।
तिन सबको शिरनाथ सु पूजा ठानिये,
भवदधि तारन जान सु विरद बखानिये॥

ॐ ह्रीं श्रीतारंगागिरिसे वरदत्तादि साड़े तीन कोटि मुनि मोक्षपद प्राप्तये अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अष्टक ।

शीतल प्रासुक जल लाय, भाजनमें भरके,
जिन चरनन देत चढ़ाय, रोग त्रिविध हरके।
तारंगागिरिसे जान, वरदत्तादि मुनी,
सब ऊंठ कोटि परमान, ध्याऊं मोक्षधनी ॥

ॐ ह्रीं श्रीतारंगागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

मलयागिरि चन्दन लाय, केशर माँहि घसे,
जिन चरण जजूं चित लाय, भव आताप नसे।
तारंगागिरिसे जान, वरत्तादि मुनी,
सब ऊंठ कोटि परमान, ध्याऊं मोक्षधनी ॥

ॐ ह्रीं श्रीतारंगागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ॥

तंदुल अखंड भर थार, उज्ज्वल अति लीजे,
अक्षयपद कारणसार, पुंज सु ढिग कीजे।
तारंगागिरिसे जान, वरत्तादि मुनी,
सब ऊंठ कोटि परमान, ध्याऊं मोक्षधनी ॥

ॐ ह्रीं श्रीतारंगागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

चंपा गुलाव जुहि आदि, फूल वहुत लीजे,
पूजों श्रीजिनवर पाद, कामविथा छीजे।

तारंगागिरिसे जान, वरदत्तादि मुनी,
सब ऊंठ कोटि परमान, ध्याऊं मोक्षधनी ॥
ॐ ह्रीं श्रीतारंगागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

नाना पकवान बनाय, सुवरण थाल भरे,
प्रभुको अरचों चित लाय, रोग क्षुधादि टरे ।
तारंगागिरिसे जान, वरदत्तादि मुनी,
सब ऊंठ कोटि परमान, ध्याऊं मोक्षधनी ॥
ॐ ह्रीं श्रीतारगागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

दीप कपूर जगाय जगमग जोति लसे,
करूं आरति जिन चित लाय, मिथ्या तिमिर नसे.
तारंगागिरिसे जान, वरदत्तादि मुनी,
सब ऊंठ कोटि परमान, ध्याऊं मोक्षधनी ॥
ॐ ह्रीं श्रीतारगागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विध्वशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

कृष्णागरु धूप सुवास खेऊं प्रभु आगे ।
जल जाय कर्मकी राशि ध्यानकला जागे ॥
तारंगागिरिसे जान वरदत्तादि मुनि ।
सब ऊंठ कोटि परमान ध्याऊं मोक्षधनी ॥
ॐ ह्रीं श्रीतारंगगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

श्रीफल कदली बादाम पुंगीफल लीजे,
पूजों श्रीजिनवर धाम शिवफल पालीजे।
तारंगागिरिसे जान वरदत्तादि मुनी,
सब ऊठ कोटि परमान ध्याऊं मोक्षधनी॥

ॐ ह्रीं श्रीतारंगागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा॥ ८॥

शुचि आठों द्रव्य मिलाय, तिनको अर्घ करों,
मन वच तन देहु चढाय, भवतर मोक्ष वरों।
श्रीतारंगागिरिसे जान, वरदत्तादि मुनी,
सब ऊठ कोटि परमान, ध्याऊं मोक्षधनी॥

ॐ ह्रीं श्रीतारंगागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९॥

जयमाला।

सोरठा।

वरदत्तादि मुनीन्द्र, ऊठ कोटि मुक्तहि गये।
वंदत सुर नर इन्द्र, मुक्ति रमनके कारणे॥ १॥

पद्धरी छंद।

गुजरात देशके मध्य जान, इक सोहै ईडर संस्थान।
ताकी दिशि पच्छिममें वखान, गिरि तारंगा सोहै महान॥ १॥
वहँते मुनि ऊठ करोड़ सोय, हन कर्म सबै गये मोक्ष सोय।
ता गिरिपर मंदिर है विशाल, दर्शनतें चित होवे खुशाल॥ २॥

नायक सुमूल संभव अनूप, देखत भवि ध्यावत निज स्वरूप।
पुनि तीन टोंकपर दर्श जान, भविजन वंदत उर हर्ष ठान ॥३॥
तहाँ कोटि शिला पहली प्रसिद्ध, दूजी तीजी है मोक्ष सिद्ध।
तिनपर जिनचरण विराजमान, दर्शन फल इम सुनिये सुजान ॥४॥
जो वंदे भविजन एक बार, मनवांछित फल पावे अपार।
बसु विधि पूजे जो प्रीति लाय, दारिद्र तिनको क्षणमें पलाय ॥५॥
भव रोग शोक नाशे तुरंत, जो ध्यावे प्रभुको पुण्यवंत।
अरु पुत्र पौत्र सम्पत्ति होय, भव भवके दुःख डारे सु खोय ॥६॥
इत्यादिक महिमा है अपार, वर्णन कर कविको लहे पार।
अब बहुत कहा कहिये बखान, कहैं 'दीप' लहैं ते मोक्षथान ॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीतारंगागिरिसे वरदत्त सागरदत्तादि साड़े तीन कोटि मुनि मोक्षपद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता।

तारंगा वंदों मन आनन्दो, ध्याऊं मन वच शुद्ध करा।
सब कर्म नशाऊं शिवफल पाऊं, ऊंठ कोटि मुनिराजवरा ॥

इत्याशीर्वादः।



श्रीयुत धर्मचन्दजी कृत

११ श्रीपावागढ पूजा ।



दोहा ।

श्रीपावागिरि मुकति शुभ, पाँच कोडि मुनिराय ।
लाड़ नरेन्द्रको आदि दे, शिवपुर पहुँचे जाय ॥१॥
तिनको आह्वानन करों, मन वच काय लगाय ।
शुद्ध भावकर पूजजो, शिव सन्मुख चितलाय ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीपावागिरिसिद्धक्षेत्रसे लाड़ नरेन्द्र आदि पाँच करोड़ मुनि सिद्धपद प्राप्तये अत्र अवतर अतवर संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

अष्टक ।

छंद त्रोटक ।

जल उज्ज्वललीनो प्रासुककीनो, धारसु दीनो हितकारी
जिनचरनचढ़ाऊं कर्मनशाऊं, शिवसुखपाऊ बलिहारी
पावागिरि बन्दों मनआनन्दो, भवदुखखंदो चितधारी
मुनिपाँचजुकोडंभवदुखछोडं, शिवमुखजोडंसुखभारी

ॐ ह्रीं श्रीपावागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

चन्दन घसि लाऊं, गंध मिलाऊं, सब सुख पाऊं हर्ष बढ़ो
भवबाघा टारो तपतनिवारो, शिवसुखकारो मोद बढ़ो

ॐ ह्रीं श्रीपावागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

गजमुक्ताचोखे वहुतअनोखे, लखनिरदोखे पुंज करूं।
अक्षयपद पाऊं और न चाऊं,कर्मनशाऊं चरणपरूं॥पा०

ॐ ह्रीं श्रीपावागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

शुभ फूल मगाऊं गन्ध लखाऊं,वहु उमगाऊं भेट धरूं॥
समकर्म नशावो दाह मिटावो,तुमगुन गाऊं ध्यान धरूं॥

ॐ ह्रीं श्रीपावागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो कामवाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

नेवज वहु ताजे उज्ज्वल साजे,सब सुख काजे चरन धरूं
सो भूख नशावे ज्ञान जगावे,धर्म वढ़ावे चैन करूं ॥पा०

ॐ ह्रीं श्रीपावागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

दीपककी जोतं तम छय होतं,वहुत उद्योतं लाय धरूं।
तुम आरति गाऊं भक्तिवढ़ाऊं,खूब नचाऊं प्रेमभरूं॥पा

ॐ ह्रीं श्रीपावागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

वहु धूप मगाऊं गंध लगाऊं,वहु महकाऊं दश दिशिको।
धरअग्निजलाईकर्मखिपाई,भवजनभाईसब हितको।पा

ॐ ह्रीं श्रीपावागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

फल प्रासुक लाई भवजन भाई, मिष्ट सुहाई भेट करूं।
शिवपदकीआशामनहुल्लासा, करखुहलासामोक्षकरूं॥

ॐ ह्रीं श्रीपावागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

वसु द्रव्य मिलाई भवजन भाई, धर्म सहाई अर्घ करूं।
पूजाको गाऊं हर्ष चढाऊं, खूब नचाऊं प्रेम भरूं ॥पा०॥

ॐ ह्रीं श्रीपावागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

जयमाला ।

सोरठा ।

करके चोखे भाव, भक्ति भाव उर लायके ।
पूजों श्रीजिनराय, पावागिरि वंदों सदा ॥

चाल जोगीरासाकी ।

श्रीपावागिरि तीर्थ बड़ो है, वंदत शिवसुख होई ।
रामचन्द्रके सुत दोय जानो, लाड नरेन्द्र जु सोई ॥
इनहिं आदि दे पाँच कोटि मुनि, शिवपुर पहुँचे जाई ॥
सेवक दो कर जोर वीनवे, मन वच कर चितलाई ॥१॥
कर्म काट जे मुक्त पधारे, सब सिद्धनमें जोई ।
सुख सत्ता अरु बोध ज्ञानमय, राजत सब सुख होई ॥
दर्श अनंतो ज्ञान अनंतो, देखे जाने सोई ।
समय एकमें सब ही झलके, लोकालोक जु दोई ॥ २ ॥

ज्ञान अतेंद्री पूरन तिनके, सुक्ख अनतो होई।
लोक शिखरपर जाय विराजे, जामन मरन न होई॥
जा पदको तुम प्राप्त भये हो, सो पद मोहि मिलाई।
भक्ति भावकर निशिदिन वन्दो, निशिदिन शीस नवाई॥३॥
'धर्मचन्द्र' श्रावककी विनती, धर्म वडो हित दाई।
जो कोई भविजन पूजन गावे, तन मन प्रीति लगाई॥
सो तैसो फल जल्दी पावे, पुण्य वढे दुख्ख जाई।
सेवकको सुख जल्दी दीजो, सम्यक् ज्ञान जगाई॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीपावागढसे लाड नरेन्द्र और पाँच करोड मुनि मोक्षपद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रोटक छन्द।

श्रीजिनवरराई करमन भाई, धर्म सहाई दुख छीजे।
पूजा नित चाहूं भक्ति वढाऊं, ध्यान लगाऊं सुख कीजे॥
सुन भवजन भाई द्रव्य मिलाई, वहु गुन गाई नृत्य करो।
सव ही दुख जाई वहु उमगाई, शिवसुख पाई चरन परो॥५॥

इत्याशीर्वादः।



श्रीयुत किशोरीलालजी कृत

१२ श्रीगजपंथ पूजा।

अडिल्ल।

श्रीगजपंथ शिखर जगमें सुखदायजी।
आठ कोडि मुनिराय परमपद पायजी।
और गये बलभद्र सात शिवधामजी।
आह्वानन विधि करूं त्रिविध धर ध्यानजी॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीगजपंथाचलसे सप्त बलभद्र आदि अठ कोडि मुनि सिद्ध पद प्राप्तये अत्रावतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिठ तिष्ट ठः ठ स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरण।

अष्टक।

चाल जोगीरासाकी।

कंचन मणिमय झारी लेके, गंगाजल भर ल्याई।
जन्म जरा मृत नाशन कारन, पूजों गिरि सुखदाई॥
बलभद्र सात वसु कोडि मुनीश्वर, यहाँपर करम खपाई।
केवल लहि शिवधाम पधारे, जजूं तिन्हें शिरनाई॥

ॐ ह्रीं श्रीगजपंथसिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥ १॥

मलयागिरि चन्दन घसि, केशर सुवरण भृंगे भराई।
भव आतापनिवारन कारन, श्रीजिनचरण चढ़ाई ॥च०

ॐ ह्रीं श्रीगजपंथसिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

अक्षत उज्ज्वल चन्द्राकिरण सम,कनक थाल भर लाई।
अक्षय सुख भोगनके कारन, पूजुं देह हुलसाई ॥ च०

ॐ ह्रीं श्रीगजपथसिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

पुण्य मनोहर रंग सुरंगा, आवे बहु महकाई।
कामबाणके नाशन कारन,जिनपद भेंट धराई॥चल०॥

ॐ ह्रीं श्रीगपथसिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

घेवर बावर लाडू फेनी, नेवज शुद्ध कराई।
क्षुधावेदनी रोग हरनको, पूजो श्रीजिनराई ॥चल०॥

ॐ ह्रीं श्रीगजपथसिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

बाती कपूर दीप कंचनमय, उज्ज्वल जोति जगाई।
मोहतिमिरके दूर करनको,करो आरती भाई ॥चल०॥

ॐ ह्रीं श्रीगजपथसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

---

१ कलश।

अगर तगर कृस्नागरु लेके, दस गंध धूप बनाई।
खेय अगनिमें श्रीजिन आगे,करम जरें दुखदाई ॥चल०

ॐ ह्रीं श्रीगजपंथसिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपा-
मीति स्वाहा ॥ ७ ॥

फल अति उत्तम पूंगी खारक, श्रीफल आदि सुहाई।
मोक्ष महाफल चाखन कारन, भेंट धरों गुणगाई॥च०

ॐ ह्रीं श्रीगजपंथसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपा-
मीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जल फल आदि वसु दरव अति,
उत्तम मणिमय थाल भराई।
नाच नाच गुण गाय गायके,
श्रीजिन चरन चढ़ाई ॥

ॐ ह्रीं श्रीगजपंथसिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपा-
मीति स्वाहा ॥ ९ ॥

जयमाला।

गीता छंद।

गजपंथ गिरिवर शिखर उन्नत, दरश लख सब अघ हरे।
नर नारि जे नित करत वंदन, तिन सुजश जग विस्तरे ॥
इस थानतें मुनि आठ कोडि, परमपदकूं पायके।
तिनकी अबे जयमाल गाऊँ, सुनो चित हुलसायके ॥ १ ॥

पद्धड़ी छंद।

जय गजपंथा गिरिशिखर सार। अति उन्नत है शोभा अपार॥
ताकी दक्षिण दिश नगर जान। मसरूल नाम ताको प्रधान॥२॥
तहाँ धरमशाला बनी महान। ता मध्य लसे जिनवर सुथान॥
तहाँ बने शिखर शोभित उतंग। यह चित्र विचित्र नाना सुरंग॥३॥
चारों दिशिगुमटी लसत चार। चित्राम रचित नाना प्रकार॥
तिनके ऊपर ध्वजा फहरात। मानुष बुलावत करत हाथ॥४॥
तहाँ गुम्मजमें श्रीपार्श्वनाथ। राजत पुनि प्रतिमा है विख्यात॥
तिन दरशन वंदन करन जात। पूजत हैं नित प्रति भव्य भ्रात॥५॥
जिनमन्दिरमें रचना विशेष। आरास रचित अद्भुत अनेक॥
वेदी उज्ज्वल राजत रंगीन। अति ऊँचे सोहे शिखर तीन॥६॥
तिनके ऊपर कलशा लसंत। चन्द्रोपम ध्वज दर्पन दिपंत॥
त्रय कटनी खंभा चार माह। इन्द्रनको छवि वरनी न जाय॥७॥
ऊपरली कटनी मध्य जान। अन्तिम तीर्थेश विराजमान॥
भामंडल चँवर सु छत्र तीन। पुनि चरण पादुका द्वय नवीन॥८॥
पुनि पद्मावति अरु क्षेत्रपाल। तिष्ठत ता आगे रक्षपाल॥
सन्मुख हस्ती घूमे सदीव। जहाँ पूजा करते भव्य जीव॥९॥
आगे मंडप रचना विशाल। तहाँ सभा भरे है सदा काल॥
जहाँ बाँचत पंडित शास्त्र आय। कोई जिनवर गुण मधुर गाय॥१०॥
कोई जाप जपे चरचा करंत। कोई नृत्य करत बाजे बजंत॥
नौबत झालर घंटा सु झांझ। पुनि होत आरती नित्य सांझ॥११॥
मन्दिर आगे सुन्दर अरन्य। तरु फल फलत दीसे रमन्य॥

अति सघन वृक्ष शीतल सु छाँय। जहाँ पथिक लेत विश्राम आय॥१२॥
इस उपवनमें बहु विध रसाल। चाखत जात्री होवे खुशाल॥
नीबू नारंगी अनार जाम। सीताफल श्रीफल केल आम॥१३॥
अमली जामन ककड़ी अरंड। कैथोड़ी ऊंचे लगे झुंड।
सेतूत लेसवो अरु खजूर। खारक अंजीर अरीठ पूर॥१४॥
फफनेस बोर बड़ नीम जान। पुनि पुष्पवाटिका शोभमान॥
चंपो जु चमेलि गुलाब कुंज। जाई जु मोगरा भ्रमर गुंज॥१५॥
गुलमहदी और अनेक बेल। तिन ऊपर पंक्षी करत केल॥
या बाग माहिं गंभीर कूप। शीतल जल मिष्ट सु दुग्धरूप॥१६॥
ता पीवत ही गद सकल नाश। यह अतिशय क्षेत्रतनो प्रकाश॥
बँगला विशाल रमणीक जान। भट्टारक तिष्ठनको सु थान॥१७॥
परकोट बनो चउ तरफ सार। मध दरवाजो अति शोभकार॥
ताके ऊपर नौबत बजंत। सुनके जात्री आनँद लहंत॥१८॥
यहाँ दंडकवनकी भूमि संत। तसु निकट शहर नाशिक वसंत॥
तहाँ गंगा नाम नदी पुनीत। वैष्णवजन ठाने धर्म तीर्थ॥१९॥
पुनि त्रिम्बक सीतागुफा कीन। गजपंथ धाम सबमें प्रचीन॥
भट्टारकजी हिमकीर्ति आय। बंदे गजपंथा शिखर जाय॥२०॥
मन्दिरकी नींव दई लगाय। पुनि पैड़ी ऊपरको चढ़ाय॥
दो शतक पिचौत्तर है सिवान। तसु आगे मोटी भीत जान॥२१॥
इक हौद भर्यो निर्मल सु नीर। शीतल सु मिष्ट राजत गँहीर॥
भवि प्रक्षालित वसु दरव आन। कोई तीर्थ जान करहै सनान॥२२॥
त्रय गुफा मध्य दरशन करंत। बलभद्र सात तिष्ठत महंत॥

इक बिम्ब लसत उन्नत विशाल। श्रीपार्श्वनाथ वंदत त्रिकाल ॥२३॥
द्वय मानभद्र इक चरण पाद। मुनि आठ कोड़ि थल है अनाद ॥
वंदन पूजन कर धरत ध्यान। निज जन्म सुफल मानत सुजान॥२४॥
यहाँसे उतरत गिरितट सु थान। इक कुंड नीर निर्मल वखान ॥
इक छत्री उज्ज्वल है पुनीन। भट्टारकजी क्षेमेन्द्रकीर्ति ॥२५॥
तिनके सु चरणपादुक रचाय। अवलोकनकर निज थल सु आय ॥
कोई फेरी पर्वतकी करंत। इमि वंदनकर अति सुख लहंत ॥२६॥
श्रीमुनीकीर्ति महाराज आय। श्रावकजनको उपदेश थाय ॥
सुनि नानचंद अरु फतहचंद। शोलापुरवासी धरमकंद ॥२७॥
हूमड़ जैनी उपदेश धार। करवाई प्रतिष्ठा बिम्बसार ॥
संवत् उगणीस अरु तियाल। सुधि तेरस माघतनी विशाल ॥२८॥
कल्यान पाँच कीनो उछाव। करवाये अति उत्तम सुनाव ॥
श्रीमहावीर अन्तिम तीर्थेश। पधराये वेदीमें जिनेश ॥२९॥
भट्टारकजी दियो सूर मंत्र। कीने पुनि जंत्र अनेक तंत्र ॥
मानस सु थंभ रचिये उतंग। कञ्चन कलशा शोभे उचंग ॥३०॥
बहु संघ जुर तिनकू बुलाय। भक्ती कीनी उर हरष ल्याय ॥
बहु विधि पकवान बनाय सार। जौनार दई आनँद धार ॥३१॥
सुदि पूनम माघतनी सुजान। पूरण हुतो उत्सव महान ॥
याही तिथिकूं उत्तम सुजोय। यात्रा उत्सव दर साल होय ॥३२॥
पुनि सदावरत नित प्रति बटंत। कोई विमुख जाय नाहिं साधु संत॥
यहाँ देश देशके संघ आय। उत्सव करते हैं पूजन कराय ॥३३॥
दे दरब करत भंडार सोय। कोई करत रसोई मुदित होय ॥

बहु मर्यादा अद्भुत सु ठाठ। आवे जात्री मुख करत पाठ ॥३४॥
संवत उगणीसौ उणचास। बुध अष्टम रवि दिन पौष मास॥
ये पूजन विधि कीनी बनाय। सज्जन मति विनती यही भाय॥३५॥
जो भूलचूक तुम भंग होय। तुम शुद्ध करो बुधिवान लोय॥
गजपंथ शिखर मुनि आठ कोड़। बलभद्र सात नमि हाथ जोड़ ॥३६॥

दोहा।

यह गजपंथा शिखरकी, पूज रची सुखदाय।
'लालकिशोरी' तुच्छ बुध, हाथ जोड़ सिरनाय॥३७॥

ॐ ह्रीं श्रीगजपंथ सिद्धक्षेत्रसे सात बलभद्र और आठ करोड मुनि मोक्षपद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

छन्द त्रिभगी।

जय जय भगवंता श्रीगजपंथा, वंदत सता भाव धरं।
सुर नर खग ध्यावें भगत बढावें, पूज रचावें प्रीति करं॥
फल सुरपद पावें अमर कहावें, नरपद पावे शिव पावें।
यह जान सु भाई जात्र कराई,जग जस थाई सुख पावें॥३८॥

इत्याशीर्वादः।

श्रीयुत स्व० पं० सवाई सिंगई गोपालसाहजी कृत

१३ श्री तुंगीगिरि पूजा।



दोहा ।

सिद्धक्षेत्र उत्कृष्ट अति, तुंगीगिरि शुभ थान ।
मुकति गये मुनिराज जे, ते तिष्ठहु इत आन ॥

ॐ ह्रीं श्रीमागीतुंगी सिद्धक्षेत्रसे राम, हनू, सुग्रीव, सुडील, गव, गवाख्य, नील, महानील और निन्यानवे करोड मुनि मोक्षपद प्राप्तये अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

अष्टक ।

गंगाजल प्रासुक भर झारी, तुव चरनन ढिग धारों
परिग्रह तिसना लगी आदिकी, ताको है निरवारो॥
राम हनू सुग्रीव आदि जे, तुंगीगिरि थिन थाई ।
कोडी निन्यानवे मुकत गये मुनि,पूजो मन वच काई॥

ॐ ह्रीं श्रीतुंगीगिरी सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

चन्दन केशर गार, भली विधि धार देत पग आगे ।
भव भरमन आताप जासतें,पूजत तुरतहिं भागे॥रा.

ॐ ह्रीं श्रीतुंगीगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

मुक्ताफल सम उज्ज्वल अक्षत, थार धारकर पूजों।
अक्षयपदको प्रापतिकारन,या समऔर न दूजो।राम०

ॐ ह्रीं श्रीतुंगीगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

कमल केतकी वेल चमेली, आपर अलि गुंजावे।
पुष्पनसों अरचों तुम चरनन,कामाविथा मिट जावे।रा०

ॐ ह्रीं श्रीतुंगीगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो कामवाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

गूजा खाज़े व्यंजन ताजे, तुरतहिं घृत उपराजे।
दृग सुख कारन सन्मुख धारे,क्षुधावेदनी भाजे।राम०

ॐ ह्रीं श्रीतुंगीगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

दीप रतनकर सुरपति पूजत, हम कपूर धर खासे।
नाशे मिथ्यातम अनादिका,ज्ञान भानु परकाशे।राम०

ॐ ह्रीं श्रीतुंगीगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

अगर तगर कृत्स्नागरू चन्दन, जे सुवास मन भावें।
खेवत धूप धूमके मिसकर,दुष्टकरम उड जावें ॥राम०

ॐ ह्रीं श्रीतुंगीगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

श्रीफल पुंगी शुचि नारंगी, केला आम्र सुवासी।
पूजत अष्ट करम दल धूजत,पाऊँपद अविनासी।राम०

ॐ ह्रीं श्रीतुंगीगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जल फलादि वसु दरव साजके, हेमपात्र भर लाऊँ ।
मन वच काय नमूं तुव चरना, वार वार शिरनाऊँ।राम०

ॐ ह्रीं श्रीतुंगीगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

जयमाला ।

दोहा ।

राम हनू सुग्रीव आदि जे, तुंगीगिरि थित थाय ।
कोडि निन्यानवे मुकति गये मुनि, पूजों मन वच काय ॥१॥
तुम पद प्रापत कारने, सुमरों तुम गुणमाल ।
मति माफक वरनन करों, सार सुभग जयमाल ॥ २ ॥

धन्य धन्य मुनिराज, कठिन व्रतधारी ।
भव भवमें सेवा चरन मिले मुझ थारी ॥
दो पर्वत है अति तुंग चूलिका भारी ।
मानो मेरु शिखर उनहार दृगन सुखकारी ॥ ३ ॥
पहलो है मंगी नाम तुंगी है दूजो ।
जहाँ चढ़त जीव थक जात करम चिर धूजो ॥
अति सुन्दर मन्दिर लखत भई सुध म्हारी ।
भव भवमें सेवा चरन मिले मुझ थारी ॥
धन्य धन्य मुनिराज कठिन व्रत धारी ।
भव भवमें सेवा चरन मिले मुझ थारी ॥ ४ ॥

जहाँ राम हनू सुग्रीव सु खग बलधारी।
अरु गव गवाख महानील नील अघहारी॥
इन आदि निन्यानवे कोड़ि मुनी नर कीना।
लयो पंचमगतिको वास बहुरि गत हीना॥ ५॥
मैं पूजों त्रिकरन शुद्धनसे अघ भारी।
भव भवमें सेवा चरन मिले सुद्द यारी॥
तुम विरत अहिंसा लिया दयाके कारन।
ना पोखनको वच झूठ किया निरवारन॥ ६॥
पुनि भये अदत्ता वस्तु सरवके त्यागी।
नव वाड़ सहित व्रत ब्रह्मचर्य अनुरागी॥
चउवीस परिग्रह त्याग भये अनगारी।
भव भवमें सेवा चरन मिले सुद्द यारी॥ ७॥
षट्काय दयाके हेतु निरख भू चाले।
वच शास्त्र उकत अनुसार अमनको टाले॥
भोजनके षट् चालीस दोष निरवारे।
लख जंतु वस्तुको लेय देख भू धारे॥ ८॥
पन करन विषै चकचूर भये अविकारी।
भव भवमें सेवा चरन मिले सुद्द यारी॥
षट् आवश्यक नित करें नेम निरवाहे।
तज न्हवन क्रिया जलकाय घात न चाहें॥ ९॥
निज करसों लुंचे केश राग तन भागी।
बालकवत निर्भय रहे वस्त्रके त्यागी॥

कबहुँ दंतधवन नहीं करें दया व्रतधारी।
भव भवमें सेवा करन चरन मिले मुह थारी ॥ १० ॥
विन जाँचे भोजन लेय उदंड अहारी।
लघु भुक्ति करें इक वार तपी अधिकारी ॥
जामें आलस न वढ़े रोग है हीना।
निशि दिन रस आतम चखे करे विधि छीना ॥११॥
कर घात करम चउ नाश ज्ञान उजयारी।
भव भवमें सेवा चरन मिले मुह थारी ॥
दे भव्यनको उपदेश अघाती जारे।
भये मुक्तितिरमाके कंत अष्ट गुन धारे ॥ १२ ॥
तिन सिद्धनिको मैं नमों सिद्धिके काजा।
सिधथलमें दे मुह वास त्रिजगके राजा ॥
नावत नित माथ 'गुपाल' तुम्हें वहु भारी।
भव भवमें सेवा चरन मिले मुह थारी ॥ १३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीमागीतुगी सिद्धक्षेत्रसे राम हनू सुग्रीव सुडील गव गवाख्य नील महानील और निन्यानवे करोड़ मुनि मोक्षपद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता।

तुम गुनमाला परम विशाला, जे पहरे नित भव्य गले।
नाशें अघजाला है सुख हाला, नित प्रति मंगल होत भले ॥१४॥

इत्याशीर्वादः।



श्रीयुत कन्हैयालालजी कृत ।

१४ श्रीकुंथलगिरि पूजा ।

दोहा ।

तीरथ परम पवित्र अति, कुंथ शैल शुभ थान ।
जहांते मुनि शिवथल गये, पूजों थिर मन आन ॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथलगिरि सिद्धक्षेत्रसे कुलभूषण देशभूषण मुनि मोक्षपद प्राप्तये अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ट ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरण ।

अष्टक ।

अडिल्ल ।

उत्तम उज्ज्वल नीर क्षीर सम छानके ।
कनक पात्रमें धार देत त्रय आनके ॥
पूजों सिद्ध सु क्षेत्र हिये हरषायके ।
कर मन वच तन शुद्ध करमवश टारके ॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

चंदन दाह निकंदन केशर गारकें ।
अरचों तुम ढिग आय शुद्ध मन धारकें ॥ पूजों० ॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

तंदुल सोम समान अखंडित आनकें।
हाटक थार भराय जजों शिर नायकें ॥ पूजों० ॥

ॐ ह्रीं श्रीकुथलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

सुरद्रुम सम जे पुष्प सुगंधित लायकें।
दहन काम पन वाण धरों सुख पायकें ॥ पूजों० ॥

ॐ ह्रीं श्रीकुथलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो कामवाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

व्यंजन विविध प्रकार पगे घृत खांड़के।
अरपत श्रीजिनराज छुधा ढिग छांड़के ॥ पूजों० ॥

ॐ ह्रीं श्रीकुथलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो छुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

कनक थारमें धार कपूर जलायके।
बोध लह्यो तम नाश मिथ्या भ्रम जालके ॥पूजों०॥

ॐ ह्रीं श्रीकुथलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

अगर आदि दस वस्तु गन्ध जुत मेलके।
करम दहनके काज दहों ढिग शैलके ॥ पूजों० ॥

ॐ ह्रीं श्रीकुथलगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

फल उत्कृष्ट सु मिष्ट जे प्रासुक लायके।
शिवफल प्रापति काज जजों उमगायके ॥ पूजों० ॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जल फलादि वसु दरव लेय श्रुत ठानके ।
अर्घ जजों तुम पाय हरष मन आनके ॥ पूजों० ॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

जयमाला ।

दोहा ।

तुम गुन अगम अपार गुरु, मै बुद्धि कर हों बाल ।
पै सहाय तुव भक्तिवश, बरनत तुव गुनमाल ॥ १ ॥

पद्धड़ी छंद ।

कुल ऊँच राय सुत अति गंभीर । कुलभूपण दिशभूपण हैं वीर ॥
लख राज-ऋद्धिका अति असार । वय बाल माहि तप कठिन धार ॥२॥
द्वादश विधि व्रतकी सहत पीर । तेरा विधि चारित धरत वीर ॥
गुन मूल वीस अरु आठ धार । सहें परीषह दस अरु आठ चार ॥३॥
भू निरखि जंतु कर नित विहार । धर्मोपदेश देते विचार ॥
मुनि भरमत पहुँचे कुंथ शैल । पाहन तरु कंटक कठिन गैल ॥४॥
निर्जन वन लख भये ध्यान लीन । सुर पूरव अरि उपसर्ग कीन ॥
बहु सिंघ सरप अरु दैत्य आय । गरजत फुंकारत मुख चलाय ॥५॥
तहाँ राम लखन सीता समेत । ता दिन थिति कीनी थी अचेत ॥
मुनिपर वेदन यह लखत घोर । दोउ वीर उचारे वच कठोर ॥६॥

रे देव; दुष्ट तूं जाति नीच । मुनि दुखित किये तुझ आई मीच ॥
हम आगे तू कित भाग जाय । तुइ देहें दुकृतकी सजाय ॥७॥
यह कह दोऊ कर धनुष धार । हरि वल लख सुर डरपौ अपार ॥
तब मान सीख मुनि चरण धार । ता छिन घाते विधि घाति चार ॥८॥
उपजत केवल सुरकल्प आय । राचे गंधकुटी पद शीस नाय ॥
सुन निज भवसुर आनंद पाय । जुग विद्या दे निज थल सिधाय ॥९॥
प्रभु भाखे दो विधि धर्म सार । सुन धारे जिनते भये पार ॥
मुनिराज अघाती घात कीन । गति पंचम थित अचल लीन ॥१०॥
पूजा सुर नर निरवान कीन । गत ऊंचतनो फल सुफल लीन ॥
भव भरमत हम वहु दुःख पाय । पूजें तुम चरना चित्त लाय ॥११॥
अरजी सुन कीजे महर आप । तासों मेरा भव भ्रमन ताप ॥
विनवे अधिकी क्या 'कनईलाल'। दुख मेट सकल सुख देव हाल ॥१२॥

ॐ ह्रीं श्रीकुथलगिरि सिद्धक्षेत्रसे कुलभूषण देशभूषण मुनि मोक्षपद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

घत्ता ।

तुम दुख हरता सब सुख करता, भरता शिवतिय मोखपती ।
मैं शरने आयो तुम गुन गायो, उमगायो ज्यों हती मती ॥ १३ ॥

इत्याशीर्वादः ।

स्व० कवि जवाहरलालजी कृत

१५ श्रीमुक्तागिरि पूजा।



दोहा।

मुक्तागिरि तीरथ परम, सकल सिद्ध दातार।
तातें पावन होन निज, नमों सीस कर धार ॥ १ ॥

गीता छन्द।

येही जंबूद्वीप मध्य भरतक्षेत्र सो जानिये।
आरज सो खंड मझार, जाके परम सुन्दर मानिये॥
ईशान दिशि अचला जु पुरकी, नाम मुक्तागिरि तहां।
कोडि साडे तीन मुनिवर, शिवपुरी पहुँचे जहां॥२॥

दोहा।

पारसप्रभुको आदि दे, चौवीसों जिनराय।
पूजों पद जुग पद्म सम, सुर शिवपद सुखदाय॥

ॐ ह्रीं श्रीमुक्तागिरिसिद्धक्षेत्रसे साडे तीन करोड मुनि मोक्षपद प्राप्तये अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ट तिष्ट ठ. ठ: स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अष्टक।

परम प्रासुक नीर निर्मल, क्षीर दधि सम लीजिये।
हेम झारी मांहि भरके, धार सुन्दर दीजिये॥
तीर्थ मुक्तागिरि मनोहर, परम पावन शुभ कहो।
कोटि साढ़े तीन मुनिवर, जहांते शिवपुर लहो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुक्तागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

चंदन सुपावन दुख मिटावन, अति सुगंध मिलाईये ॥
डार कर कर्पूर केशर, नीर सो घिस ल्याइये॥तीर्थ०॥

ॐ ह्रीं श्रीमुक्तागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

विमल तंदुल ले अखंडित, ज्योति निशिपति सम धरे।
कनक थारी मांहि धरके, पूज कर पावन परे॥तीर्थ०

ॐ ह्रीं श्रीमुक्तागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

सुरवृक्षके सम फूल लेकर, गन्धकर मधुकर फिरें।
मदनवाण विनाशवेंकों, प्रभु चरन पूजा करें ॥ती०।

ॐ ह्रीं श्रीमुक्तागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो कामवाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

छहों रसकर जुक्त नेवज, कनक थारीमें भरों।
भावसे प्रभु चरन पूजों, क्षुधादिक मनकी हरो॥ती०

ॐ ह्रीं श्रीमुक्तागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

रतनदीप कपूर वाती, जोत जगमग होत है।
मोहतिमिर विनाशवेंको, भानु सम उद्योत है ॥ती०

ॐ ह्रीं श्रीमुक्तागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

कूट मलयागिरि सो चंदन, अगर आदि मिलाइये।
ले दशांगी धूप सुंदर, अगन मांहि जराइये ॥तीर्थ०॥

ॐ ह्रीं श्रीमुक्तागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

ल्याय येला लोंग दाडिम, और फल बहुते घने।
नेत्र रसना लगे सुंदर, फल अनूप चढ़ावने ॥तीर्थ०॥

ॐ ह्रीं श्रीमुक्तागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जल गंध आदिक द्रव्य लेके, अर्घ कर ले आवने।
लाय चरन चढ़ाय भविजन, मोक्षफलको पावने ॥ती०॥

ॐ ह्रीं श्रीमुक्तागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

दोहा।

मुक्तागिरिके सीसपर, बहुत जिनालय जान।
तिनकी अब जयमालिका, सुनो भव्य दे कान ॥१॥

जयमाला।

पद्धडी छन्द

श्रीमुक्तागिरि तीरथ विशाल। महिमा जाकी अद्भुत रसाल ॥
जुग पर्वत बीच परे दो कोन। मुक्तागिरि जहां मुनको सु भौन॥२॥
चढिये सिवान जहां ऊपर सो भान। दहलानेपर सो सार जान।
यात्री जहां डग करें आय। अती मुदित है चित्त उमगाय॥३॥
ऊपर शुचि जलसों भरे कुंड। जहँ सपरे यात्रिनके सु झुंड॥
बहु विधिकी द्रव्यभरी सो धोय। पूजनको भविजन चले सोय॥४॥

जहां मन्दिर वीच वने रसाल । पारसप्रभुकी मूरत विशाल ॥
पूजत जहां भविजन हरप धार । भव भवको पुण्य भरे भंडार॥६॥
वावन जगह दर्शन जिनेश । पूजत जिनवरको सुर महेश ॥
इक मन्दिरमें भुयरो जु सोय । प्रतिमा श्रीशांतिजिनेश होय ॥
दर्शन कर नरभव सुफल होय । जहां जन्म जन्मके पाप खोय ॥७॥
मेंढागिरिका है गुफा भाय । मन्दिर सुन्दर इक साम काय ॥
प्रतिमा श्रीजिनवर देवराज । दर्शन कर पूरन होय काज ॥८॥
मेढागिरिके ऊपर सुजान । द्वय टोंक वनी अति सौम्यमान ॥
इक पांडे वालक मुनि कराय । इक भागवलीकी जान रमाय॥९॥
जहां श्रीजिनवरके चरण सार । वंदत मनवांछित सुखदातार ॥
वावन मन्दिर जहँ शोभकार । महिमा तिनकी अद्भुत अपार॥१०॥
जहँ सुर आवत नित प्राति महेश । स्तुति करते प्रभु तुम दिनेश ॥
जहाँ सुर नाचन नाना प्रकार । जै जै जै जै धुनि उच्चार ॥११॥
थै थै थै अव नाचत सुचाल । अति हर्ष सहित नित नमत भाल॥
मुहचंग उपंग सु तूर सजे । मुरली स्वर वीन प्रवीन वजे ॥१२॥
द्रुम द्रुम द्रुम द्रुम वाजत मृदंग । झननननन नूपुर सु रंग ॥
तननननननन पर तसु तान । घनन घंटा करत ध्यान ॥ १३ ॥
इहि विधि वादित्र वाजें अपार । सुर गावत अव नाना प्रकार ॥
अतिशय जाके हैं आतिविशाल। जहाँ केशर अव वरसे त्रिकाल॥१४॥
अनहद नित वजें वाजे अपार । गंधोदकादिक वर्षाकी वहार ॥
तहां मारुत मंद सुगंध सोय । जियं जात जहाँ न विरोध होय॥१५॥

अतिशय जहां नाना प्रकार । भविजन हियमें हरख धार ॥
जहां कोड़ जु साड़े तीन मान । मुनि मोक्ष गये सुनिये सुजान॥१६॥
चंदत जवाहर अब बार बार । भवसागरसे प्रभु तार तार ॥
प्रभु अशरन शरन आधार धार। सब विघ्न तूल गिरि जार जार॥१७॥
तू धन्य देव कृपानिधान । अज्ञान मिथ्यातम हरन भान ॥
प्रभु दयासिंधु जै जै महेश । भव बाधा अब मेटो जिनेश ॥१८॥
मैं वहुत भ्रम्यो चिरकाल काल । अब हो दयाल मुझ पाल पाल ॥
तातें मै तुमरे शरण आय । यह अरज करूं पग शीस नाय ॥१९॥
मम कर्म बंध देऊ चूर चूरं । आनंद अनूपम पूर पूर ॥

ॐ ह्रीं श्रीमुक्तगिरिसिद्धक्षेत्रसे साडे तीन करोड मुनि सिद्धपद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

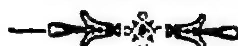
घत्ता ।

मुक्तागिरि पूजे अति सुख हूजे, ऋद्धि ह्वै है पूरी ।
अति कर्म विनाशे ज्ञान प्रकाशे, शिव पदवीको सुखकारी ॥२०॥

दोहा ।

अठरा सो इक्यानवे, वैशाख मास तम लीन ।
तिथि दशमी शनिवारकी, पूजा समापत कीन ॥२१॥

इत्याशीर्वादः ।



स्व० भट्टारक महेन्द्रकीर्त्तिजी कृत

१६ श्रीसिद्धवरकूट पूजा।



दोहा।

सिद्धकूट तीरथ महा, है उत्कृष्ट सुथान।
मन वच काया कर नमों, होय पापकी हान ॥१॥
दोय चक्री मन्मथ जु दस, गये तहंते निर्वान।
पद पंकज तिनके नमों, हरे कर्म बलवान ॥२॥
रेवाजीके तटनतें, हूंठ कोडि मुनि जान।
कर्म काट तहँते गये, मोक्षपुरी शुभ थान ॥ ३ ॥
जगमें तीर्थ प्रधान है, सिद्धवरकूट महान।
अल्पमती मैं किमि कहों, अद्भुत महिमा जान ॥४॥

अडिल्ल छंद।

इन्द्रादिक सुर जाय, तहां वन्दन करें।
नागपति तहँ आय, बहुत थुति उचरें ॥
नरपति नित प्रति जाय, तहां बहु भावसों।
पूजन करहिं त्रिकाल, भगत बहु चावसों ॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धवरकूटसे दो चक्री दश कुमारादि साड़ें तीन करोड़ मुनि सिद्धपद प्राप्तये अत्र अवतर संवौषट् आव्हाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अष्टक।

उत्तम रेवा जल ल्याय; मणिमय भर झारी।
प्रभु चरनन देऊं चढ़ाय, जन्म जरा हारी॥
छय चक्री दस कामकुमार, भवतर मोक्ष गये।
तातें पूजों पद सार, मनमें हरष ठये॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धवरकूटसिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥ १॥

मलयागिरि चन्दन ल्याय, केशर शुभ डारी।
प्रभु चरनन देत चढाय, भवभय दुखहारी॥छय चक्री०॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धवरकूटसिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा॥ २॥

तंदुल उज्ज्वल अविकार, मुक्तासम सोहे।
भरत कंचनमय थाल, सुर नर मन मोहे॥छय चक्री०॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धवरकूटसिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३॥

ले पहुप सुगंधित सार, तापर अलि गाजे।
जिन चरनन देत चढ़ाय, कामव्यथा भाजे।॥छय च०॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धवरकूटसिद्धक्षेत्रेभ्यो कामवाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४॥

नेवज नाना परकार, षट्‌रस स्वाद मई।
पद पंकज देहुं चढ़ाय, सुवरन थार लई॥छय चक्री०॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धवरकूटसिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

मणिमय दीपकको ल्याय, कदली सुत बाती।
जोती जगमग लहकाय, मोह तिमिर घाती ॥द्वय०॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धवरकूटसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

कृष्णागरु आदिक ल्याय, धूप दहन खेई।
वसु दुष्ट करम जर जांय, भव भव सुख लेई ॥द्वय०॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धवरकूटसिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

श्रीफल दाख बदाम, केला अमृत मई।
लेकर बहु फल सुख धाम, जिनवर पूज ठई ॥द्वय०॥

ॐ ह्रीं श्री-द्धवरकूटसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जल चन्दन अक्षत लेय, सुमन महा प्यारी।
चरु दीप धूप फल सोय, अरघ करों भारी ॥ द्वय० ॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धवरकूटसिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

जयमाला।

दोहा।

सिद्धवर कूट सुथानकी, रचना कहूँ बनाय।
अति विचित्र रमनीक अति, कहते अल्प कर भाय॥१॥

पद्धरी छन्द।

जय पर्वत अति उन्नत विशाल। तापर त्रय मन्दिर शोभकार॥
तामें जिनविम्ब विराजमान। जय रतनमई प्रतिमा वखान॥२॥
ताकी शोभा किमि कहे सोय। सुरपति मन देखत थकित होय॥
तिन मन्दिरकी दिशि चार जान। तिनकूं वरनूं अत्र प्रीति ठान॥३॥
ताकी पूरव दिशि तासु जान। तामें सु कमल फूले महान॥
कमलनपर मधुकर भ्रमे जोय। ता धुनकर पूरित दिशा होय॥४॥
ता सरवरपर नाना परकार। द्रुमै फल रहे अति शोभकार॥
छह ऋतुके वृक्ष फूले फलाय। ऋतुराजै सदा क्रीडा कराय॥५॥
मंदिरनकी दक्षिन दिशा सार। सुरनदी वहे रेवा जु सार॥
ताके तट दोनों अति पवित्र। विद्याधर वहु विधि करें नृत्य॥६॥
फिर तहँ ते उत्तर दिशा जान। इक कुंड वना है शोभमान॥
ता कुंड वीच जात्री नहाय। तिन वहुत जनमके पाप जाय॥७॥
ता कुंड ऊपर अति विचित्र। इक पांडुशिला है अति पवित्र॥
तिस थान विच देवेन्द्र सोय। जिनविम्ब धरे हैं सीस जोय॥८॥
ताकी पश्चिम दिशि अति विशाल। कावेरी सोहै अति रसाल॥
इन आदि मध्य जे भूमि जान। जय स्वयंसिद्ध परवत महान॥९॥
तापर तप धारो दोय चक्रीश। दस कामकुमार भये जगतईश॥
इन आदि मुनि आहूठ कोड़। तिनको वंदों मैं हाथ जोड़॥१०॥
इनको केवल उपज्यो सुज्ञान। देवेन्द्र जुआसन कंपो जान॥
तव अमरपुरीतें इन्द्र आय। तहँ अष्ट द्रव्य साजे वनाय॥ ११॥

१ वृक्ष २ मस्त

तब पूजा ठाने देव इन्द्र। सब मिलकें गावें शतक इन्द्र ॥
तहँ यात्रा आवें झुंड झुंड। सब पूज धरें तंदुल अखंड ॥ १२ ॥
कोई श्रीफल ल्यावे अरु बदाम। कोई पुंगीफल सु नाम॥
कोई अमृतफल केला सु ल्याय। कोई अष्टद्रव्य ले पूज ठाय १३
कई सूत्र पढ़ें अति हर्ष ठान। कई शास्त्र सुनें बहु प्रीति मान ॥
कोई जिनगुन गावें सुर संगीत। कोई नाचें गावें धरें प्रीत ॥१४॥
इत्यादि ठाठ नितप्रति लहाय। बरनन किम मुखतें कहो जाय ॥
सुरपति खगपति जु सोय। रचना देखत मन थकित होय ॥१५॥
सुर नर विद्याधर हर्ष मान। जिन गुन गावें हिय प्रीति ठान ॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धवरकूटसिद्धक्षेत्रेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता छन्द।

जो सिद्धवर पूजे, अति सुख हूजे, ता गृह संपति नाहि टरे।
ताको जस सुर नर मिल गावें, 'महेन्द्रकीर्ति' जिनभक्त करे ॥१६॥

दोहा।

सिद्धवरकूट सुथानकी, महिमा अगम अपार।
अल्पमती मैं किमि कहों, सुरगुरु लहें न पार ॥१७॥

इत्याशीर्वादः।

श्रीयुत छगनजी कृत

१७ चूलगिरि (बावनगजा) की पूजा।

छन्द शार्दूलविक्रीडित।

आर्यो क्षेत्र विहार बोध भवि ये दशग्रीव सुन भ्रातना।
सम्यक्तादि गुणाष्ट प्राप्ति शिव कर्मारि घाती हना॥
ता भगवान प्रति प्रार्थना सुध हृदै त्वद्भक्ति मम वासना।
आह्वानन विमुक्तनाथ तु पुनः अत्राय तिष्ठो जिना॥

ॐ ह्रीं श्रीबड़वानी-चूलिगिरिसे इन्द्रजीत कुंभकर्णादि मुनि सिद्धपद प्राप्तये अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ. स्थापन। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अष्टक।

गीता छन्द।

पंचम उदधि सम नीर ले, त्रय धार तिन चरणन करों।
चिर रुजग जन्म जरारु अंतक, ताहि अब तो परिहरों॥
दशग्रीव अंगज अनुज आदि, ऋषीश जहँतें शिव लही।
सो शैल बड़वानी निकट गिरिचूलकी पूजा ठही॥

ॐ ह्रीं श्रीचूलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥ १॥

घसि मलय कुमकुम शुद्ध जो, अलिगण न छोड़े तासको
सोगंध शीतल कंद सज, भव-विरह हर भवताप को। द०

ॐ ह्रीं श्रीचूलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

शशि वर्ण खंडन मुक्त शोभा, मुक्त नहिं ताकी धरें।
सो शालि तंदुल करन मंगल, वेग भयक्षयकी हरें॥द०

ॐ ह्रीं श्रीचूलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

सुरद्रुम निपज सुरलोकके, बहु वर्ण फूल मंगाइये।
अथवा कनक कृत वेल मोगर, चंपकादि चुनाइये ॥द०

ॐ ह्रीं श्रीचूलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो कामवाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

कृत सूपकार अनूप छह रस, युक्त अमृत मान जो।
सो चारुचरु जिन अग्र धर, निज भूख वेदन टारि जो।द०

ॐ ह्रीं श्रीचूलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

बहु मूल्य रत्न उद्योतयुत, भय वायु वरजित जो जगे।
सो दीप कंचन थाल धर, अरि दुष्ट मोहादिक भजे॥द०

ॐ ह्रीं श्रीचूलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

दश गंध कृष्णागरु कपूरादिक, सुगंधित ल्यावने।
दहि ज्वलन मध्य मनो भवान्तर, सर्वके विधि जालने॥

ॐ ह्रीं श्रीचूलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

सौमनस नंदन वृक्षके युत, मिष्ट ता फल लेयके ।
ता देखते द्दग घ्राण मोहे, मोक्षपुर कूं वेयके ॥ दश० ॥

ॐ ह्रीं श्रीचूलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

सजि सौंज आठों होय ठाड़ो, हरष वाढ़ो कथन विन।
हे नाथ भक्तिवश मिलजो, पुर न छूटे एक दिन ॥ द०

ॐ ह्रीं श्रीचूलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

जयमाला ।

सोरठा।

करमन कर चकचूर, वसिय शिवालय जाय तुम ।
मेरी आशा पूर, वहुत दुखी संसारमें ॥ १ ॥

पद्धड़ी छंद ।

वंदों श्री युगल ऋषीश स्वाम । कर कर्म युद्ध लहि मोक्ष वाम ।
है इन्द्रजीत तुम सत्य नाम । कर्मेन्दु मोहको कियो काम ॥ २ ॥
हो कुंभकर्ण सार्थक हि आप । भवकर्ण ज्ञान तुम कुंभ थाप ॥
कर्मन कृत वंदों गृह मझार । वलि वासुदेवने दये डार ॥३॥
सत ज्ञान वानि सम्यक्त युक्त । जानों सत चारित आप युक्त ॥
विधु रिपु दुखदाई मूल जान। तापै तुमने खैंची कमान ॥४॥
औ सर्व जीवसों क्षमा धार । भाई अनुप्रेक्षा परम सार ।
तन आदि अथिर दीखे समस्त । है नेह करन सम कौन वस्त ॥५॥
अशरण न शरण कहुँ जक्त माहिं । अहमिन्द्रादिक मृत्यू लहाहिं ॥
भववनमें है नहिं सार कुच्छ । तीर्थंकर त्यागें जान तुच्छ ॥ ६ ॥

ये जीव भ्रमत एकाकि आप। नहीं संग मित्र सुत मात बाप।
ये देह अन्य फिर कौन मुज्झ। वश मोह परत न हिये सुज्झ ॥७॥
पल रुधिर पीव मल मूत्र आदि। इनकर नियजी तन होय खाद॥
जोगनहि चपलता कर्म द्वार। तिन रोक हिये संवर विचार ॥८॥
तप बल छूटन विधि करम मुक्ख। तिहु लोक भ्रमत लहि जीव दुक्ख॥
बिन बोध भ्रम्यो चहुँ गति मझार। गिरकर्चा धर्म कहेन धार ॥९॥
यों चिंतत बहु जन लार लेय। जिनदीक्षा धारी हित करेय॥
अट्ठाइस गुण मुनि मूल धार। चारों अराधना कुं अराध ॥१०॥
नाना विधि आसन धार धार। तप करत युद्ध विधि मार मार॥
चउ घाति नाश केवल उपाय। भवि जीव बोध जिनरूप लगाय ॥११॥
करके विहार भवि सुक्खदाय। वड़वानी आये अल्प आय॥
गिरि चूल तिष्ठ करि कर्म नाश। छिनमें संसार कियो विनाश॥१२॥
अति आनंददायक सिद्धक्षेत्र। पूजों भवि जीव निजातम हेत॥
धन धन्य तिनहिको भाग्य जान। तिन पुण्यबंध होवे महान ॥१३॥
इन्द्रादि आय उत्सव अनूप। कीनो लहि हर्षित भये भूप॥
ता गिरिकी उत्तरि दिशि मझार। रेवा सरिता है पूर्ण वार ॥१४॥

ॐ ह्रीं श्रीबडवानी-चूलगिरिसे इन्द्रजीत कुमकर्णादि मुनि सिद्धपद प्राप्तये महार्घ निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता।

गिरिराज अनूपम पूजे भूपम, तिन भवि कूपम जल दीना।
यामें शक नाहीं कर्म नशाहीं, 'छगन' मगन होय थुति कीना ॥१५॥

इत्याशीर्वादः।

बाबू पन्नालालजी कृत

१८ श्रीगुणावा सिद्धक्षेत्रकी पूजा ।



सोरठा ।

धन्य गुणावा थान, गौतमस्वामी शिवगए ।
पूजहु भव्य सुजान, अहि निशि करि उर थापना ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीगुणावासिद्धक्षेत्रसे श्रीगौतमस्वामी सिद्धपद प्राप्तयें अत्र अवतर अवतर संवौषट् आव्हाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

अष्टक ।

अति शुद्ध सुधा सम तोय, हेमाचल सोहे ।
जर जनम मरन नहिं होय, सब ही मनमोहे ॥
जगकी भव ताप निवार, पूजों सुखदाई ।
धन नगर गुणावा सार, गौतम शिवपाई ॥

ॐ ह्रीं श्रीगुणावासिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

केशर करपूर मिलाय, चन्दन घिसवाई
अरचों श्रीजिन ढिगजाय, सुन्दर महकाई ॥

ॐ ह्रीं श्रीगुणावासिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

अति शुद्ध अखंड विशाल, तंदुल पुंज धरे।
भरि भरि कंचनमय थाल, पूजों रोग टरे॥

ॐ ह्रीं श्रीगुणावासिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३॥

गेंदा गुलाब कनेर, पुष्पादिक प्यारे।
सो करिकरि ढेर सुढेर, कामानल जारे॥

ॐ ह्रीं श्रीगुणावासिद्धक्षेत्रेभ्यो कामवाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४॥

अति घेवर फेनी ताप, नैवज स्वाद भरी।
सब भूख निवारनकाज, प्रभु ढिग जाय धरी॥

ॐ ह्रीं श्रीगुणावासिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा॥ ५॥

घृतसे भरि सुवरण दीप, जगमग ज्योति थसे।
करि आरति जाय समीप, मिथ्या तिमिर नसे॥

ॐ ह्रीं श्रीगुणावासिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विध्वशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥ ६॥

कर्पूर सुगंधित पूर, अगर तगर डारों।
श्रीचरनन खेवों धूप, करम कलंक जारों॥

ॐ ह्रीं श्रीगुणावासिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥ ७॥

पिस्ता बादाम सुपारि, श्रीफल सुखदाई।
मन वांछित दातार, ऐसे जिनराई॥

ॐ ह्रीं श्रीगुणावासिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

सब अष्ट द्रव्य करि त्यार, प्रभु ढिग जोरि धरों।
'पन्ना' प्रति मंगलकार, शिवपद जाय वरों ॥

ॐ ह्रीं श्रीगुणावासिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

जयमाला ।

दोहा ।

गौतम स्वामीजी भये, गणधर-वीर-प्रधान ।
तिनकी कछु जैमाल अब, सुनों भव्य धरि ध्यान ॥१॥

चौपाई ।

वंदो श्रीमहावीर जिनंदा । पाप निकंदन आनंद कंदा ॥
जिन परताप भये बहुनामी । जै जै जै श्रीगौतम स्वामी ॥२॥
भयो जहाँ प्रभु केवलज्ञाना । समोशरण इन्द्रादिक ठाना ॥
खिरी दिव्यध्वनि नहिं भगवान । गणधर नहि कोई गुणवान ॥३॥
तब विद्यारथि भेष बनाई । वासक गौतमके ढिग जाई ॥
पूछत अर्थ सूत्र यों भाषित । षद्द्रव्य पंचास्तिकाय भाषित ॥४॥
यह सुनि गौतम वचन उचारे । तोसों करूँ वाद क्या प्यारे ॥
चलि अपने गुरु वीर नजीका । करिहैं शास्त्रार्थ तहँ नीका ॥५॥
ऐसी कह ततकाल सिधारे । समोशरणमें आप पधारे ॥
देखत मानथंभको जोहीं । खंडित भयो मान सब योंही ॥६॥

भूल गये सब वाद विवादा। कीनी थुति सब छाँड़ि विपादा॥
सोई गणधर भये प्रधाना। धन्य धन्य जैवंत सुज्ञाना॥ ७॥
धन्य गुणावा नगर सुहाई। जहँते उन शिवलछमी पई॥
सुन्दर ताल नगर अति सोहैं। ताविच मंदिर जन मनमोहे॥८॥
चरण पादुका बने अनूपा। पूरब धर्मशाल अरु कूपा॥
सन्मुख वेदी अति सुखदाई। वीरचरण प्रतिमादि सुहाई॥९॥
चारों ओर चरण चौवीसी। तिन लखि हर्ष होत अति हीसी॥
पूजनीक अति ठाम अपारा। दुखदारिद्र नशावन हारा॥१०॥

घत्ता।

जो पढ़े पढ़ावे पूज रचावे, सो मनवांछित फल पावे॥
सुत लाभ विहारी आज्ञाकारी,'पन्ना' जगत न भरमावे॥११॥

ॐ ह्रीं श्रीगुणावा सिद्धक्षेत्रेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

छप्पय।

शहर हाथरस पास, मनोहर ग्राम विसाना।
तामधि श्रावक लोग, वसे सब ही बुधवाना॥
संवत् शत उनईस, तासुपै धारि बहत्तर।
विक्रम साल प्रमान, जेठ मासा वीतन पर॥१२॥

इत्याशीर्वादः।

बाबू पन्नालालजी कृत

१९ श्रीपटना सिद्धक्षेत्रकी पूजा।



दोहा।

उत्तम देश बिहारमें, पटना नगर सुहाय।
शेठ सुदर्शन शिव गये, पूजों मन वच काय ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीपटना सिद्धक्षेत्रमे सुदर्शन शेठ सिद्धपद प्राप्तये अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक।

नित पूजोरे भाई या श्रावक कुलमें आयकें।
नित पूजोरे भाई श्रीपटना नगर सुहावनों ॥
गंगाजल अति शुद्ध मनोहर, झारी कनक भराई।
जन्म जरा मृत नाशन कारन, ढारों नेह लगाई ॥नि०
जंबूद्वीप भरत आरजमें, देश बिहार सुहाई।
पटना नगरी उपवनमें, शिव शेठ सुदर्शन पाई ॥नि०

ॐ ह्रीं श्रीपटनासिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

चंदन चंद्र मिलायसु उज्ज्वल, केशर संग घिसाई।
महक उड़े सब दिशनु मनोहर, पूजों जिनपद राई॥नि०

ॐ ह्रीं श्रीपटनासिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

शुद्ध अमल शशि सम मुक्ताफल, अक्षत पुंज सुहाई।
अक्षयपदके कारण भविजन, पूजों मन हरपाई ॥नि०

ॐ ह्रीं श्रीपटनासिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

पांचों विधिके पुष्प सुगंधित, नभलों महक उड़ाई।
पूजों काम विकार मिटावन, श्रीजिनके ढिग जाई ॥नि०

ॐ ह्रीं श्रीपटनासिद्धक्षेत्रेभ्यो कामवाण विध्वशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

उत्तम नेवज मिष्ट सुधासम, रस संयुक्त घनाई।
भूख निवारन कंचन थारन, भरभर देहु चढ़ाई ॥नि०

ॐ ह्रीं श्रीपटनासिद्धक्षेत्रेभ्यो छुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

मनिमय भाजन घृतसे पूरित, जगमग जोति जगाई।
सब मिल भविजन करो आरती, मिथ्या तिमिर पलाई॥०

ॐ ह्रीं श्रीपटना सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

अगर तगर कर्पूर सुहावन द्रव्य सुगंध मंगाई।
खेवो धूप धूमसे वसुविधि, करम कलंक जराई ॥नि०

ॐ ह्रीं श्रीपटनासिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

एला केला लौंग सुपारी, नरियल फल सुखदाई।
भरभर पूजों थाल भविकजन, वांछित फल पाई ॥नि०

ॐ ह्रीं श्रीपटनासिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

अष्ट दरब ले पूज रचाओ, सब मिल हर्ष बढ़ाई ।
झालर घंटा नाद बजावो, 'पन्ना' मंगल गाई ॥ नि०

ॐ ह्रीं श्रीपटनासिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

जयमाला ।

दोहा ।

शेठ सुदर्शन जे भये, शीलवान गुणखान ।
तिनकी अब जैमालिका, सुनहु भव्य दे कान ॥१॥

छंद पद्धरी ।

जै शेठ सुदर्शन शीलवंत । जग छाय रही महिमा अनंत ॥
तिनकी कछु मैं जैमाल गाय । उर पूज रचाऊँ हर्ष ठाय ॥२॥
जै भरतक्षेत्र मधि अंग देश । चंपापुर सोहै तहँ विशेष ॥
नृप धात्रीवाहन राज गेह । प्रिय अभयमती सों अति सनेह ॥३॥
तहँ मुख्य शेठ इक वृषभदास । तिन शेठानी जिनमति खास ॥
तिन चाकर ग्वाला सुभग नाम । मुनि देखे वनमें एक जाम ॥४॥
सो महामंत्र नवकार पाय । अति भयो प्रफुल्लित कही न जाय ॥
पुनि एक दिवस गंगा मंझार । वह डूबतमें जापत मंत्र सार ॥५॥
तुरतहिं मर शेठ घरे विशाल । सुत भयो सुदर्शन भाग्यशाल ॥
सबको सुखदाई मिष्ट वैन । निज कपिल यार सँग दिवस रैन ॥६॥
पढ़ि खेल कूद भयो अति सयान । तब शेठ मनोरमा सँग सुजान ॥
शुभ साइत व्याह दियो कराय । शोभो गत सुख अति हर्ष ठाय ॥७॥

पुनि कछुक काल भीतर सुकंत। सुत एक भयो अति रूपवंत ॥
तब शेठ सुदर्शन धीरवान। निज काम करें अति हर्ष ठान ॥८॥
तब कपिल नारि आसक्त होय। घर शेठ बुलाये तुरत सोय ॥
तहँ शेठ नपुंसक मिस बनाय। निज शील लियो ऐसे बचाय ॥९॥
जब खबर सुनी रानी तुरंत। मन करी प्रतिज्ञा दीढवंत ॥
मै भोग करूं वासूं सिहाय। तब ही मम जीवन सुफल थाय ॥१०॥
इत शेठ अष्टमी कर उपास। मरघटमें ध्यानारूढ़ खास ॥
तहँ चेली उनके पास जाय। रानीको हाल दियो सुनाय ॥११॥
तहँ शेठ निरुत्तर देखि हाय। निज कन्धेपे धरिके उठाय ॥
फिर पहुँची रानी पास जाय। उन अचल देख तुरतै रिसाय ॥१२॥
यों खबर करी नृप पास जाय। मो शील विगार्यो शेठ आय ॥
यों सुनत वैन नृप क्रोध छाय। मारनको हुकम दियो सुनाय ॥१३॥
तहाँ करी प्रतिज्ञा शीलवंत। मुनि पदवी धारूं यदि वचंत ॥
सो देव करी रक्षा सु आय। पुनि दीक्षित है वनको सिधाय ॥१४॥
सो करत करत कछु दिन विहार। तब आए पटना नगर सार ॥
तहँ देवदत्ता वेश्या रहाय। मिस भोजन मुनि लीने बुलाय ॥१५॥
उन कामचेष्टा कर सिहाय। झट शेठ लिये शय्या गिराय ॥
लख ऐसो मनमें कर विचार। उपसर्ग मेरो यदि हो निवार ॥१६॥
सन्यास धरूं नगरी न जाऊँ। वन ही वन करंत तप फिराऊँ ॥
यह देख वेश्या निरुपाय। निशि प्रेतभूमि दीने पठाय ॥१७॥
तहँ रानी व्यंतर जोनि पाय। नाना उपसर्ग कियो बनाय ॥
मुनि पुण्यभावसे यक्ष आय। तब लिए शेठ तुरतै बचाय ॥१८॥

सो कठिन तपस्या कर निदान। भयो सेठ जहाँ केवल सु ज्ञान॥
सो कछुक काल करके विहार। उन मुक्ति वरी अति श्रेष्ठ नार॥१९॥

घत्ता।

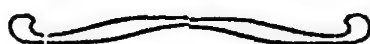
इक ग्वाल गमारा जप नवकारा, शेठ सुदर्शन तन पाई॥
सुत लालविहारी आज्ञाकारी, 'पन्ना' यह पूजा गाई॥२०॥

ॐ ह्रीं श्रीपटनासिद्धक्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इत्याशीर्वादः।

पं० दीपचन्दजी परवार कृत

२० श्री वाहूवली पूजा।



अडिल्ल छंद।

आदीश्वरके द्वितीय पुत्र वाहूवली।
कामदेव भये प्रथम श्रीवाहूवली॥
नये न मस्तक युद्ध कियो वाहूवली।
चक्री अरु विधि जीत जजूं वाहूवली॥

ॐ ह्रीं श्रीपोदनापुरके उद्यानसे श्रीवाहूवलीस्वामी मोक्षपद प्राप्तये अत्र अवतर अवतर सवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अष्टक।

पंचम उदधितनो जल लेकर, कंचन झारी मांहि भरूं।
जन्म जरा मृतु नाश करनको, वाहूवलि पदधार करूं॥

ॐ ह्रीं श्रीमद्बाहूबलिस्वामिन् जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

केशरसंग घिसू मलयागिरि, चंदन अधिक सुगंध रचूं।
भव आताप विनाशन कारन, श्रीबाहूबलि पद चरचूं॥

ॐ ह्रीं श्रीमद्बाहूबलिस्वामिन् संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्ज्वल मुक्ताफल सम तंदुल, धोकर कंचन थाल भरूं।
अक्षयपदके हेतु विनयसे, बाहूबलि ढिग पुंज करूं॥

ॐ ह्रीं श्रीमद्बाहूबलिस्वामिन् अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

कमल केतुकी चंप चमेली, सुमन सुगंधित लाय धरूं।
मदनवान निरवारन कारन, बाहूबलिको भेंट करूं॥

ॐ ह्रीं श्रीमद्बाहूबलिस्वामिन् कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

नाना विध पकवान मनोहर, खाजे ताजे षट् रसमय।
क्षुधारोग विध्वंश करनको, जजूं बाहुबलि चरन उभय।

ॐ ह्रीं श्रीमद्बाहूबलिस्वामिन् क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

सजो दीपघृत वा कर्पूरका, जासों दशदिक तम भागे।
नाशन अंतर तमको आरति, करूं बाहूबलि प्रभु आगे

ॐ ह्रीं श्रीमद्बाहूबलिस्वामिन् मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

अगर तगर कर्पूर धूप दश, अंगी अगनीमें खेऊं ।
दुष्ट अष्ट विधि नष्ट करनको, श्रीबाहूबलि पद सेऊं ॥

ॐ ह्रीं श्रीद्बाहूबलिस्वामिन् अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

आम अनार जाम नारंगी, पुंगी खारक श्रीफलको ।
मोक्ष महाफल प्राप्त हेतु मैं, अर्पन् करूं बाहूबलिको ॥

ॐ ह्रीं श्रीमद्बाहूबलिस्वामिन् मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

ऐसे मनहर अष्ट द्रव्य सब, हेम थाल भरके लाऊं ।
पद अनर्घके प्राप्ति हेतु मैं, श्रीबाहूबलि गुण गाऊं ॥

ॐ ह्रीं श्रीमद्बाहूबलिस्वामिन् अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

दोहा ।

बाहूबलि निज बाहु बल, हरे शत्रु बलवान ।
जये नये नाहिं सिद्ध भये, पोदनपुर उद्यान ॥१॥

जयमाला ।

पद्धरी छंद ।

श्रीआदीश्वरके सुत सुजान । हैं प्रथम भरत चक्री महान ॥
दूजे बाहूबलि बल अपार । पुनि एक ऊनशत हैं कुमार ॥२॥
सब ही है चर्म शरीर सोय । सब ही पहुँचे शिव कर्म खोय ॥
तिनमें बाहूबलि द्वितिय पुत्र । रतिपति तिनको सुनिये चरित्र ॥३॥
जब ऋषभ ऋषीपद धरो सार । तब राज भाग कीने विचार ॥
अरु दिये यथाविधि नृपन दान । सब करें प्रजा पालन सुजान ॥४॥

तिनमें श्रीबाहूबलि कुमार । पायो पोदनपुर राज्य सार ॥
अरु भरत अवधिपुर भये नरेश । सुख भोगे वहु विधि सुरेश ॥५॥
जब उदय चक्रिपद भयो आय । षट् खंड साधन गये राय ॥
अरु किये वहुत नृप निजाधीन । फिर लौटे रजधानी प्रवीन ॥६॥
पर चक्र करो नहिं पुर प्रवेश । तब निमती भाष्यो सुन नरेश ॥
तुम भ्रात पोदनापुर नरेन्द्र । नहीं आज्ञा माने तुझ नृपेन्द्र ॥७॥
सुन भरत तबहि पाती लिखाय । पोदनपुर दूत दियो पठाय ॥
आ नमों भेंटयुत विनय धार । या हो जावो रणको तयार ॥८॥
वैसांदर जिमि घृत परे आय । तिमि कोपो भुजबलि पत्र पाय ॥
फिर फाड़ पत्र कहे सुनहु दूत । हम और भरत द्वय ऋषभ पूत ॥९॥
हम भोगे पितुको दियो राज । भरतहिं शिर नावें कौन काज ॥
यदि भरत अधिक कर है गरूर । तो करि हों रणमें चूर चूर ॥१०॥
सुन भज्यो दूत गयो भरत पास । कह दीनों सब वृत्तान्त खास ॥
तब सजी सैन्य लख उभय ओर । मंत्री गण सोचे हिय वहोर ॥११॥
ये उभय वली अरु चरम देह । लड़ व्यर्थ सैन्यको क्षय करेह ॥
इमि सोचे गये निज नृपन पास । विन्ती सुनिये प्रभु कहहि दास ॥१२॥
तुम उभय वली अरु स्वयमवुद्ध । नहिं सैन्य मेर कीजे सु युद्ध ॥
तब नेत्र मल्ल जल तीन युद्ध । कीने द्वय भ्रात स्वयम प्रवुद्ध ॥१३॥
तीनोंमे हारे भरत राय । तब कोप चक्र दीनो चलाय ॥
सो चक्र करो नहि गोत्र घात । चक्री इमि सब विधि खाई मात ॥१४॥
यह देख चरित भुजबलि कुमार । उपजौ हिय दृढ़ वैराग्य सार ॥
अरु त्याग राज तृणवत असार । कर क्षमा महाव्रत धरे सार ॥१५॥

तप एकाशन कीनो महान। पर उपजो नहि केवल सुज्ञान॥
इक शल्य लग रही इति लार। मैं खड़ो भरत पृथ्वी मझार॥१६॥
तब शल्य दूरकी भरतराय। नहिं वसुधापति कोई जग बनाय॥
यह आदि अंत बिन जग महान! बहुते भये ह्वै हैं मुझ समान॥१७॥
इमि सुनत शल्य हनि घाति चार। उपजायो केवलज्ञान सार॥
फिर पोदनपुरके वन मझार। पंचमगति लहि कर कर्म क्षार॥१८॥
तिन प्रतिमा अतिशय युत अपार। है श्रवणबेलगोला मझार॥
गौमटस्वामी तिहँ कहत सोय। नहि छाया ताकी पड़त कोय॥१९॥
अरु तुंग हाथ छत्तीस धार। निरधार खड़ी पर्वत मझार॥
यात्री आवें वंदन अपार। दर्शन कर पातक करें क्षार॥२०॥
इत्यादि और अतिशय अपार। कथ 'दीपचन्द' नहिं लहे पार॥

ॐ ह्रीं श्रीमद्बाहूबलिस्वामिन् पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता।

सब विधि सुखकारी महिमा भारी, भुजबलि धारी अनग्मार।
सुन विनय हमारी शिव सुखकारी, हे त्रिपुरारी अचल अपार॥

इत्याशीर्वादः।

स्व० कविवर द्यानतरायजी कृत—

२१ चतुर्विंशतितीर्थंकर निर्वाणक्षेत्र पूजा।



सोरठा।

परम पूज्य चौवीस, जिहँ जिहँ थानक शिव गये।
सिद्धभूमि निशदीस, मन वच तन पूजा करौं ॥१॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्राणि अत्र अवतरत अवतरत। संवौषट्। ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्राणि अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः। ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्राणि अत्र मम सन्निहितानि भवत भवत। वषट्।

अष्टक।

गीता छंद।

शुचि क्षीरदधिसम नीर निरमल, कनकझारीमें भरौं।
संसारपार उतार स्वामी, जोरकर विनती करौं॥
सम्मेदगिरि गिरनार चंपा, पावापुरि कैलासकौं।
पूजौं सदा चौवीसजिननिर्वाणभूमि निवासकौं॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

केशर कपूर सुगंध चंदन, सलिल शीतल विस्तरौं।
भवपापको संताप मेटौ, जोर कर विनती करौं ॥स०॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा॥२॥

मोतीसमान अखंड तंदुल, अमल आनँदधरि तरौं।
औगुन हरौ गुन करौ हमको, जोरकर विनती करौं॥स०
ॐह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो अक्षतान् निर्वपा० स्वाहा॥३

शुभफूलरास सुवासवासित, खेद सब मनकी हरौं।
दुखधाम काम विनाश मेरो, जोरकर विनती करौं॥स०
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्य पुष्पं निर्वपा० स्वाहा॥४॥

नेवज अनेकप्रकार जोग, मनोग धरि भय परिहरौं।
यह भूखदूखन टार प्रभुजी, जोरकर विनती करौं॥स०
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो नैवेद्यं निर्वपा० स्वाहा॥५॥

दीपक प्रकाश उजास उज्जल, तिमिरसेती नहिं डरौं।
संशयविमोहविभरम-तमहर, जोरकर विनती करौं॥स
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥६

शुभ धूप परम अनूप पावन, भाव पावन आचरौं।
सब करमपुंज जलाय दीजे, जोरकर विनती करौं॥स०
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥७॥

बहु फल मँगाय चढ़ाय उत्तम, चारगतिसों निरवरौं।
निहचै मुकतफल देहु मोकौं, जोरकर विनती करौं॥स०
ॐह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्य फलं निर्वपामीति स्वाहा॥८॥

जल गंध अच्छत फूल चरु फल, दीप धूपायन धरौं।
'द्यानत' करो निरभय जगतैं, जोरकर विनती करौं॥
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥९

जयमाला।

सोरठा।

श्रीचौबीसजिनेश, गिरिकैलासादिक नमों।
तीरथमहाप्रदेश, महापुरुषनिरवाणतें ॥ १ ॥

चौपाई १६ मात्रा।

नमों रिषभ कैलासपहारं। नेमिनाथ गिरनार निहारं॥
वासुपूज्य चंपापुर वंदों। सनमति पावापुर अभिनंदों॥ २ ॥
वंदों अजित अजितपददाता। वंदों संभवभवदुखघाता॥
वंदों अभिनंदन गणनायक। वंदों सुमति सुमतिके दायक॥३॥
वंदों पदम मुकतिपदमाधर। वंदों सुपार्स आशपासा हर॥
वंदों चंदप्रभ प्रभु चंदा। वंदों सुविधि सुविधिनिधिकंदा॥४॥
वंदों शीतल अघतपशीतल। वंदों श्रियांस श्रियांस महीतल॥
वंदों विमल विमलउपयोगी। वंदों अनंत अनंतसुभोगी॥५॥
वंदों धर्म धर्मविसतारा। वंदों शांति शांतमनधारा॥
वंदों कुंथु कुंथुरखवालं। वंदों अरि अरिहर गुनमालं॥६॥
वंदों मल्लि काममल चूरन। वंदों मुनिसुव्रत व्रतपूरन॥
वंदों नमि जिन नमित सुरासुर। वंदों पास पासभ्रमजरहर॥७॥
वीसों सिद्ध भूमि जा ऊपर। सिखरसम्मेद महागिरि भूपर॥
एक वार वंदे जो कोई। ताहि नरकपशुगति नहिं होई॥८॥
नरगतिनृप सुर शक्र कहावै। तिहुँजग भोग भोगि शिव पावै॥
विघनविनाशक मंगलकारी। गुणविलास वंदे नरनारी॥९॥

छंद घत्ता।

जो तीरथ जावै पाप मिटावै, ध्यावै गावै भगति करै।
ताको जस कहिये संपति लहिये, गिरिके गुणको बुध उचरै॥१०॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

२२ णिव्वुइकंडं।

[निर्वाणकाण्डम् ।]



अट्ठावयम्मि उसहो चंपाए वासुपुज्जजिणणाहो ।
उज्जंते णेमिजिणो पावाए णिव्वुदो महावीरो ॥ १ ॥

अष्टापदे ऋषभः चम्पाया वासुपूज्यजिननाथ. ।
ऊर्जयन्ते नेमिजिन पावाया निर्वृतो महावीर ॥ १ ॥

वीसं तु जिणवरिंदा अमरासुरवंदिदा धुदकिलेसा ।
सम्मेदे गिरिसिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥ २ ॥

विंशतिस्तु जिनवरेन्द्रा अमरासुरवन्दिता धौतक्लेशा ।
सम्मेदे गिरिशिखरे निर्वाणगता नमस्तेभ्यः ॥ २ ॥

वरदत्तो य वरंगो सायरदत्तो य तारवरणयरे ।
आहुट्ठयकोडीओ णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥ ३ ॥

वरदत्तश्च वराङ्ग. सागरदत्तश्च तारवरनगरे ।
सार्धत्रयकोट्यो निर्वाणगता नमस्तेभ्य ॥ ३ ॥

णेमिसामि पज्जण्णो संबुकुमारो तहेव अणिरुद्धो ।
बाहत्तरिकोडीओ उज्जंते सत्तसया सिद्धा ॥ ४ ॥

नेमिस्वामि प्रद्युम्न. शंभुकुमारस्तथैव अनिरुद्ध ।
द्वासप्ततिकोट्य ऊर्जयन्ते सप्तशताः सिद्धाः ॥ ४ ॥

---

१ कैलाशपर्वते। २ गिरनारिपर्वते। ३ निर्वाण मोक्ष प्राप्त । ४ तानिति शेषः

रामसुवा वेण्णि जणा लाडणरिंदाण पंचकोड़ीओ।
पावागिरिवरसिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥ ५ ॥

रामसुतौ[1] द्वौ जनौ लाटनरेन्द्राणा[2] पञ्चकोट्य.।
पावागिरिवरशिखरे निर्वाणगता नमस्तेभ्यः ॥ ५ ॥

पंडुसुआ तिण्णि जणा दविडणरिंदाणअट्ठकोडीओ।
सेत्तुंजयगिरिसिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥ ६ ॥

पाण्डुसुतास्त्रय.[3] जना द्रविडनरेन्द्राणामष्टकोट्य.।
शत्रुञ्जयगिरिशिखरे निर्वाणगता नमस्तेभ्यः ॥ ६ ॥

संते जे बलभद्दा जडुवणरिंदाण अट्ठकोड़ीओ।
गजपंथे गिरिसिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥ ७ ॥

सन्ति ये बलभद्रा[4] यदुपनरेन्द्राणामष्टकोट्यः[5]।
गजपथे गिरिशिखरे निर्वाणगता नमस्तेभ्य. ॥ ७ ॥

रामहणू सुग्गीओ गवयगवाक्खो य णीलमहणीलो।
णवणवदीकोडीओ तुंगीगिरिणिव्वुदे वंदे ॥ ८ ॥

रामहनू सुग्रीवो गवयगवाक्षश्च नीलमहानील।
नवनवतिकोट्य· तुङ्गीगिरिनिर्वृता वन्दे ॥ ८ ॥

णंगाणंगकुमारा कोडीपंचद्धमुणिवरा सहिया।
सुवणागिरिवरसिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥९॥

---

१ लवकुशौ। २ लाटदेशस्थनृपाणाम्। ३ युधिष्ठिरार्जुनभीमसेना। ४ अष्टौ बलभद्रा. तथाचोक्तं त्रैलोक्यसारे;-बलदेवा मोक्खमट्ठ चरिमो दु बम्ह कप्पमिति।
५ यदुवंशनृपतिराज्ञाम्।

नङ्गानङ्गकुमारौ कोटीपञ्चार्धमुनिवरा सहिताः ॥
सुवर्णगिरिवरशिखरे निर्वाणगता नमस्तेभ्यः ॥ ९ ॥

दहमुहरायस्स सुवा कोडीपंचद्धमुणिवरा सहिया ।
रेवाउहयतडग्गे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥ १० ॥

दशमुखराजस्य सुताः कोटीपञ्चार्धमुनिवरा सहिता ।
रेवोभयतटाग्रे निर्वाणगता नमस्तेभ्य ॥ १० ॥

रेवाणइए तीरे पच्छिमभायम्मि सिद्धवरकूडे ।
दो चक्की दह कप्पे आहुट्टयकोडिणिव्वुदे वंदे ॥११॥

रेवानद्यास्तीरे पश्चिमभागे सिद्धवरकूटे ।
द्वौ चक्रिणौ दश कंदर्पाः[1] सार्धत्रयकोटिनिर्वृता वन्दे ॥

वडवाणीवरणयरे दक्खिणभायम्मि चूलगिरिसिहरे ।
इंदजीदकुंभयणो णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥ १२ ॥

वडवाणीवरनगरे दक्षिणभागे चूलगिरिशिखरे ।
इन्द्रजितकुम्भकर्णौ निर्वाणगता नमस्तेभ्य ॥ १२ ॥

पावागिरिवरसिहरे सुवण्णभद्दाइमुणिवरा चउरो ।
चलणाणईतडग्गे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥ १३ ॥

पावागिरिवरशिखरे सुवर्णभद्रादिमुनिवराश्चत्वारः ।
चलनानदीतटाग्रे निर्वाणगता नमस्तेभ्यः ॥ १३ ॥

फलहोडीवरगामे पच्छिमभायम्मि दोणगिरिसिहरे ।
गुरुदत्ताइमुणिंदा णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥ १४ ॥

---

१ कामदेवा. ।

फलहोडीवरग्रामे पश्चिमभागे द्रोणागिरिशिखरे ।
गुरुदत्तादिमुनीन्द्रा निर्वाणगता नमस्तेभ्य ॥ १४ ॥

णायकुमारमुणिंदो वालि महावालि चेव अज्झेया[1] ।
अट्ठावयगिरिसिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥१५॥

नागकुमारमुनीन्द्रो वालिर्महावालिश्चैव आध्येयाः ।
अष्टापदगिरिशिखरे निर्वाणता नमस्तेभ्य: ॥१५॥

अचलपुरवरणयरे ईसाणे भाए मेढगिरिसिहरे ।
आहुट्टयकोडीओ णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥१६॥

अचलपुरवरनगरे ईशाने भागे मेढ़गिरिशिखरे[2] ।
सार्धत्रयकोट्यो निर्वाणगता नमस्तेभ्यः ॥ १६ ॥

वंसत्थलवरणियरे पच्छिमभायम्मि कुंथुगिरिसिहरे ।
कुलदेसभूषणमुणी णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥१७॥

वशस्थलवरनिकटे पश्चिमभागे कुन्थुगिरिशिखरे ।
कुलदेशभूषणमुनयो निर्वाणगता नमस्तेभ्य ॥ १७ ॥

जसरहरायस्स सुआ पंचसयाइं कलिंगदेसम्मि ।
कोडिसिलाकोडिमुणी णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥१८

दशरथराजस्य सुता पञ्चशतानि कलिङ्गदेशे ।
कोटिशिलाकोटीमुनयो निर्वाणगता नमस्तेभ्य: ॥ १८ ॥

पासस्स समवसरणे सहिया वरदत्तमुणिवरा पंच ।
रिस्सिंदे गिरिसिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥१९॥

---

१ आध्यातु ध्यान कर्तुं योग्या । अत्र ज्झेयअज्ञेया इति पाठो दृश्यते । २ मुक्तागिरिनाम्ना प्रसिद्ध ।

पार्श्वस्य समवसरणे सहिता वरदत्तमुनिवराः पञ्च ।
रेसिन्दे गिरिशिखरे निर्वाणगता नमस्तेभ्यः ॥ १९ ॥

अइसयखेत्तकंडं ।

[अतिशयक्षेत्रकाण्डम् ।]

पासं तह अहिणंदण णायद्दहि मंगलाउरे वंदे ।
अस्सारम्मे पट्टणि मुणिसुव्वओ तहेव वंदामि ॥ १ ॥

पार्श्वं तथा अभिनन्दन नागद्रहे मङ्गलापुरि वन्दे ।
आशारम्ये पट्टने मुनिसुव्रतस्तथैव वन्दे ॥ १ ॥

बाहूबलि तह वंदमि पोयणपुरहत्थिणापुरं वंदे ।
संती कुंथुव अरिहो वाणारसिए सुपासपासं च ॥२॥

बाहुबलिस्तथा वन्दे पोदनपुरहस्तिनापुरं वन्दे ।
शान्तिः कुन्थु अरः वाणारस्या सुपार्श्वपार्श्वं च ॥२ ॥

महुराए अहिछित्ते वीरं पासं तहेव वंदामि ।
जंबुमुणिंदो वंदे णिव्वुइपत्तोथि जंबुवणगहणे ॥ ३ ॥

मथुरायां अहिच्छत्रे वीरं पार्श्वं तथैव वन्दे ।
जम्बुमुनीन्द्रो वन्दे निर्वृतिप्राप्तोपि जम्बुवनगहने ॥ ३ ॥

---

१ निर्वाणकाण्डका पाठ बहुतसी पुस्तकोंमें यहांतक मिलता है और वास्तवमें होना भी यहींतक चाहिये। क्योंकि आगे जो गाथाए हैं, वे अतिशयक्षेत्रसम्बन्धी हैं। निर्वाणकाण्डमें उनका सम्बन्ध नहीं है। गाथाकार पं० भगवतीदासजीने भी यहींतकका अनुवाद किया है। आगेकी गाथाएं पीछेसे प्रक्षिप्त की हुई मालूम पड़ती हैं। २ नगरे।

पंचकल्लाणठाणइं जाणवि संजादमच्चलोयम्मि।
मणवयणकायसुद्धी सव्वे सिरसा णमस्सामि ॥ ४ ॥

पञ्चकल्याणस्थानानि यान्यपि संजातमर्त्यलोके।
मनोवचनकायशुद्ध्या सर्वाणि शिरसा नमस्यामि ॥ ४ ॥

अग्गलदेवं वंदमि वरणयरे णिवडकुंडली वंदे।
पासं सिवपुरि वंदमि होलागिरिसंखदेवम्मि ॥ ५ ॥

अर्गलदेवं वन्दे वरनगरे[1] निकटकुण्डलीं वन्दे।
पार्श्वं शिवपुरि वन्दे होलागिरिशंखदेवे ॥ ५ ॥

गोमटदेवं वंदमि पंचसयं धणुहदेहउच्चत्तं।
देवा कुणंति वुट्ठी केसरिकुसुमाण तस्स उवरिम्मि ॥ ६

गोमटदेवं वन्दे पंचशतं धनुर्देहोच्चैस्त्वम्।
देवाः कुर्वन्ति वृष्टिं केशरकुसुमाना तस्योपरि ॥ ६ ॥

णिव्वाणठाण जाणिवि अइसयठाणाणि अइसए सहिया। संजादमिच्चलोए सव्वे सिरसा णमस्सामि ॥ ७ ॥

निर्वाणस्थानं यान्यपि अतिशयस्थानानि अतिशयेन सहितानि।
संजातमर्त्यलोके सर्वाणि शिरसा नमस्यामि ॥ ७ ॥

जो जण पढइ तियालं णिव्वुइकंडंपि भावसुद्धीए।
भुंजदि णरसुरसुक्खं पच्छा सो लहइ णिव्वाणं ॥ ८ ॥

यो जनः पठति त्रिकाल निर्वृतिकाण्डमपि भावशुद्ध्या।
भुनक्ति नरसुरसुखं पश्चात् स लभते निर्वाणम् ॥ ८ ॥

इदि अइसइखित्तकंडं।

---

1 वाराणस्याम्।

अथ कविवर भैया भगवतीदासजीरचित

२३ निर्वाणकांड भाषा।



दोहा।

वीतराग वंदौं सदा, भावसहित सिर नाय।
कहूं कांड निर्वाणकी, भाषा सुगम बनाय॥ १॥

चौपाई १५ मात्रा।

अष्टापदआदीश्वरस्वामि। वासुपूज्य चंपापुरि नामि। नेमिनाथस्वामी गिरनार। वंदौं भावभगति उर धार॥२॥ चरम तीर्थंकर चरमशरीर। पावापुरि स्वामी महावीर॥ शिखरसमेद जिनेसुर वीस। भावसहित वंदौं जगदीस॥ ३॥ वरदत्तराय रु इंद मुनिंद। सायरदत्त आदि गुणवृंद॥ नगरतारवर मुनि उठकोड़ि[1]। वंदौं भावसहित कर जोड़ि॥४॥ श्रीगिरनारशिखर विख्यात॥ कोड़ि बहत्तर अरु सौ सात॥ संबु प्रदुम्न कुमर द्वै भाय। अनिरुधआदि नमूं तसु पाय॥ ५॥ रामचंद्रके सुत द्वै वीर। लाडनरिंद आदि गुणधीर॥ पांच कोड़ि मुनि मुक्तिमझार। पावागिरि वंदौं निरधार॥६॥ पांडव तीन द्रविड राजान। आठकोड़ि मुनि मुकति पयान॥ श्रीशत्रुंजयगिरिके सीस। भावसहित वंदौं निश दीस॥७॥

१ साढ़े तीन कोड़।

जे बलिभद्र मुकतिमें गये। आठकोड़ि मुनि औरहि भये॥ श्रीगजपंथशिखर सुविशाल। तिनके चरण नमूं तिहुं काल॥ ८॥ राम हनू सुग्रीव सुडील। गवगवाख्य नील महानील। कोड़ि निन्याणवै मुक्ति पयान। तुंगीगिरि वंदौं धरि ध्यान॥ ९॥ नंग अनंग कुमार सुजान। पंचकोडि अरु अर्धप्रमाण॥ मुक्ति गये सिहुनागिरसीस। ते वंदौं त्रिभुवनपति ईस॥ १०॥ रावणके सुत आदि कुमार। मुक्त गये रेवातट सार॥ कोड़ि पंच अरु लाख पचास। ते वंदौं धरि परम हुलास॥११॥ रेवानदी सिद्धवरकूट। पश्चिमदिशा देह जहँ छूट॥ द्वै चक्री दश कामकुमार। ऊठकोड़ि वंदौं भवपार॥ १२॥ बड़वाणी बड़नयर सुचंग। दक्षिण दिशागिरि चूल उतंग॥ इंद्रजीत अरु कुंभ जु कर्ण। ते वंदौं भवसायरतर्ण॥ १३॥ सुवरणभद्रआदि मुनि चार। पावागिरिवर शिखर-मझार॥ चलना नदी तीरके पास। मुक्ति गये वंदौं नित तास॥ १४॥ फलहोड़ी बड़ गाम अनूप। पश्चिमदिशा द्रोणागिरिरूप॥ गुरुदत्तादि मुनीसुर जहाँ। मुक्ति गये बंदौं नित तहाँ॥१५॥ बाल महा-बाल मुनि दोय। नागकुमार मिले त्रय होय॥ श्रीअष्टापद मुक्तिमझार। ते वंदौं नित सुरत सँभार॥ १६॥ अचलापुरकी दिश ईशान। तहां मेढ़गिरि नाम प्रधान॥ साढ़ेतीन कोड़ि मुनिराय। तिनके

चरन नमूं चित लाय ॥ १७ ॥ वंशस्थल वनके ढिग होय । पश्चिमदिशा कुंथुगिरि सोय ॥ कुलभूषण दिशभूषण नाम । तिनके चरणनि करूं प्रणाम ॥१८॥ जसरथराजाके सुत कहे । देश कलिंग पांचसौ लहे ॥ कोटि शिला मुनि कोटिप्रमान । वंदन करूं जोर जुगपान ॥ १९ ॥ समवसरण श्रीपार्श्वजिनंद । रेसंदीगिरि नयनानंद ॥ वरदत्तादि पंच ऋषिराज । ते वंदौं नित धरमजिहाज ॥ २० ॥ तीन लोकके तीरथ जहाँ । निनमति वंदन कीजे तहाँ ॥ मन वच काय-सहित सिरनाय । वंदन करहिं भविक गुण गाय ॥ २१ ॥ संवत सतरहसौ इकताल । अश्विनसुदि दशमी सुविशाल ॥ 'भैया' वंदन करहि त्रिकाल । जय निर्वाणकांड गुणमाल ॥ २२ ॥

इति निर्वाणकाड भाषा ।

२४ शांतिपाठ भाषा ।

चौपाई ।

शांतिनाथ मुख शशि उनहारी । शीलगुणव्रतसंजमधारी ॥ लखन एकसौ आठ विराजैं । निरखत नयन कमलदल लाजैं ॥ १ ॥ पंचमचक्रवर्तिपदधारी । सोलम तीर्थंकर सुखकारी ॥ इंद्रनरेंद्रपूज्य जिननायक । नमौं शांतिहित शांतिविधायक ॥ २ ॥ दिव्य विटप पहुपनकी बरसा । दुन्दुभि आसन वाणी सरसा ॥ छत्र चमर भामंडल भारी । ये तुव प्रातिहार्य मनहारी ॥ ३ ॥ शांति जिनेश शांति सुखदाई । जगतपूज्य पूजौं सिर नाई ॥ परमशांति दीजे हमसबको । पढ़ैं तिन्हैं, पुनि चार संघको ॥४ ॥

वसन्ततिलका ।

पूजैं जिन्हें मुकुट हार किरीट लाके ।
इन्द्रादिदेव अरु पूज्य पदाब्ज जाके ॥
सो शांतिनाथ वरवंशजगत्प्रदीप ।
मेरे लिये करहिं शांति सदा अनूप ॥ ५ ॥

इन्द्रवज्रा ।

संपूजकोंको प्रतिपालकोंको,
यतीनको औ यतिनायकोंको ।
राजा प्रजा राष्ट्र सुदेशको लै,
कीजे सुखी हे जिन, शांतिको दे ॥ ६ ॥

स्रग्धरा ।

होवै सारी प्रजाको सुख बलयुत हो धर्मधारी नरेशा ।
होवै वर्षा समैपै तिल भर न रहै व्याधियोंका अँदेशा ॥
होवै चोरी न जारी सुसमय वरतै हो न दुष्काल मारी ।
सारे ही देश धारै जिनवरवृषको जो सदा सौख्यकारी ॥

दोहा ।

घातिकर्म जिन नाश करि, पायो केवलराज ।
शान्ति करैं सो जगतमें, वृषभादिक जिनराज ॥८॥

मन्दाक्रान्ता ।

शास्त्रोंका हो पठन सुखदा लाभ सत्संगतीका ।
सद्वृत्तोंके सुगुन कहके, दोष ढांकूं सभीका ॥
बोलूं प्यारे वचन हितके, आपको रूप ध्याऊं ।
तौलौं सेऊं चरन जिनके मोक्ष जौलौं न पाऊं ॥९॥

आर्या ।

तुवपद मेरे हियमें, ममहिय तेरे पुनीत चरणोंमें ।
तबलों लीन रहूं प्रभु, जबलों पाया न मुक्तिपद मैंने ॥१०
अक्षरपद मात्रासे, दूषित जो कछु कहा गया मुझसे ।
क्षमाकरोप्रभु सोसब,करुणाकरिपुनि छुड़ाहु भवदुखसे
हे जगबन्धु जिनेश्वर, पाऊं तव चरणशरणबलिहारी ।
मरणसमाधि सुदुर्लभ,कर्मोंका क्षय सुबोध सुखकारी॥

परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

(२५) विसर्जनपाठ ।

दोहा ।

विन जाने वा जानके, रही टूट जो कोय ।
तुव प्रसादतैं परमगुरू, सो सव पूरन होय ॥१॥
पूजनविधि जानों नहीं, नहिं जानों आह्वान ।
और विसर्जन हू नहीं, क्षमा करो भगवान ॥२॥
मंत्रहीन धनहीन हूं, क्रियाहीन, जिन देव ।
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरणकी सेव ॥३॥
आये जो जो देवगन, पूजे भक्तिप्रमान ।
सो अव जावहु कृपाकर, अपने अपने थान ॥४॥

(२६) भाषास्तुतिपाठ ।

तुम तरनतारन भवनिवारन, भविकमनआनंदनो ।
श्रीनाभिनंदन जगत वंदन आदिनाथ निरंजनो ॥१॥
तुम आदिनाथ अनादि सेऊ, सेय पदपूजा करूं ।
कैलासगिरिपर रिषभजिनवर, पदकमल हिरदै धरूं २
तुम अजितनाथ अजीत जीते, अष्टकर्म महावली ।
यह विरद सुनकर सरन आयो, कृपा कीजे नाथजी। ३
तुम चंद्रवदन सु चंद्रलच्छन, चंद्रपुरि परमेश्वरो ।
महासेननंदन जगतवंदन, चंद्रनाथ जिनेश्वरो ॥ ४ ॥
तुम शांति पांच कल्याण पूजों, शुद्धमनवचकाय जू ।
दुर्भिक्ष चोरी पापनाशन, विघन जाय पलाय जू ५

तुम बालब्रह्म विवेकसागर, भव्यकमलविकाशनो ।
श्रीनेमिनाथ पवित्र दिनकर, पापतिमिरविनाशनो ६
जिन तजी राजुल राजकन्या, कामसैन्या वश करी ।
चारित्ररथ चढ़ि भये दूलह, जाय शिवरमणी वरी ७
कंदर्प दर्प सुसर्पलच्छन, कमठ शठ निर्मद कियो ।
अश्वसेननंदन जगतवंदन, सकलसंघ मंगल कियो ८
जिन धरी बालकपणे दीक्षा, कमठमानविदारकैं ।
श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्रके पद, मैं नमों शिरधारकें॥९॥
तुम कर्मघाता मोखदाता, दीन जानि दया करो ।
सिद्धार्थनंदन जगतवंदन, महावीर जिनेश्वरो ॥१०॥
त्रय छत्र सोहैं सुर नर मोहैं, वीनती अवधारिये ।
कर जोड़ि सेवक वीनवै, आवागमन निरवारिये॥११
अब होउ भव भव स्वामि मेरे, मैं सदा सेवक रहों ।
कर जोरि यह वरदान मांगों, मोक्षफल जावत लहों १२
जो एकमाहीं एक राजै, एकमांहि अनेकनो ।
इक अनेककी नहीं संख्या, नमों सिद्ध निरंजनो ॥१३॥

चौपाई ।

मै तुम चरणकमलगुण गाय । बहुविध भक्ति करो मन लाय ।
जनम जनम प्रभु पाऊं तोहि । यह सेवाफल दीजे मोहि ॥१४॥
कृपा तिहारी ऐसी होय । जामन मरन मिटावो मोय ।
बारबार मै विनती करूं । तुम सेवत भवसागर तरूं ॥१५॥

नाम लेत सब दुख मिट जाय। तुम दर्शन देख्यो प्रभु आय।
तुम हो प्रभु देवनके देव। मैं तुव करूं चरणकी सेव ॥१६॥
मैं आयो पूजनके काज। मेरो जन्म सफल भयो आज।
पूजा करके नाऊं शीस। मुझ अपराध छमहु जगदीश ॥१७॥

दोहा।

सुख देना दुख मेटना, यही तुम्हारी बान।
मो गरीबकी बीनती, सुन लीज्यो भगवान ॥१८॥
बिन मतलब बहुते अधम, तार दये स्वयमेव।
त्यों मेरा कारज सफल, कर देवनके देव ॥१९॥
जैसी महिमा तुमविषै, और धरैं नहिं कोय।
जो सूरजमें ज्योति है, तारनमें नहिं सोय ॥२०॥
नाथ तिहारे नामतैं, अघ छिनमाहिं पलाय।
ज्यों दिनकर परकाशतैं, अंधकार विनशाय ॥२१॥

इति भाषास्तुति समाप्त।

मुनीम मुन्नालालजी परवारकृत-

(२७) श्रीराजगृहीजी क्षेत्र पूजा।

सोरठा।

जम्बू द्वीप मझार, दक्षिण भरत सु क्षेत्र है।
ता मधि अति विख्यात, मगध सुदेश शिरोमणी ॥१॥

अडिल्ल।

मगध देशकी राज धानि सोहै मही।
राजगृही विख्यात पुरातन है सही ॥

तिस नगरीके पास महां गिरि पांच हैं।
अति उतंग तिन सिखर सु शोभा लहात हैं ॥२॥
विपुलाचल, रतना, उदयागिरि जानिये।
सोना गिरि व्यवहार सुगिरि, शुभ नाम ये ॥
तिनके ऊपर मंदिर परम विशालजी।
एकोनविंशति बने सु पूजहु लालजी ॥ ३ ॥

दोहा।

तीर्थंकर तेईसके, समोशरण सुखदाय।
करि विहार तहँ आय हैं, वासुपूज्य नाहिं आय ॥४॥
चोवीसों जिन राजके, बिम्ब चरण सुखदाय।
तिन सबकी पूजा करों, तिष्ठ तिष्ठ इत आय ॥५॥

ॐ ह्रीं श्री राजगृही सिद्धक्षेत्रके पंच पर्वतोंपर उनईस मंदिरस्थ जिनविंव व चरण समूहेम्यो अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ. ठ॰ स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अष्टक।

त्रिभगी छन्द।

क्षीरोदधि पानी, दूध समानी, तसु उनमांनी, जल लायो।
तसु धार करीजे, तृषा हरीजे, शांति सुदीजे, गुण गायो ॥१॥
श्री पंच महांगिर, तिन पर मंदिर, शोभित सुंदर, सुख कारी।
जिन बिंब सुदर्शत, आनद वरसत, जन्म मृत्यु, भय दुख हारी ॥

ॐ ह्रीं श्रीराजगृही सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जल निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

मलया गिर पावन, केसर बावन, गंध घिसा कर ले आयो।
मम दाह निकंदौ भव दुख ददौ तुम पद वंदौ सिरनायो ॥श्री०

ॐ ह्रीं श्रीराजगृही सिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय सुगंध निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

अक्षत अनियारे, जल सु पखारे पुंज तिहारे, ढिग लाये।
अक्षय पद दीजे, निज समकीजे, दोष हरीजे, गुण गाये ॥श्री०॥

ॐ ह्रीं श्रीराजगृही सिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

बेला सुचमेली, कुन्दवकोली, चप जुहीले, गुलाब धरों।
अति प्रासुक फूला है गुण मूला, काम समूला नाश करौ ॥श्री०॥

ॐ ह्रीं श्रीराजगृही सिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

फैनी अरु बाबर, लाडू घेवर, तुम पद ढिग धर, सुखपाये।
मम क्षुधा हरीजे समता दीजे, विनती लीजे गुण गाये ॥श्री०॥

ॐ ह्रीं श्रीराजगृही सिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

दीपक उजियारा, कपूर प्रजारा, निजकर धारा अर्ज करूं।
मम तिमर हरीजे ज्ञान सुदीजे कृपा करीजे पांव परूं ॥श्री०॥

ॐ ह्रीं श्रीराजगृही सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

दश गंध कुटाया, धूप बनाया, अग्नि जलाया, कर्म नशै।
मम दुख करो दूरा करमहिं चूरा आनंद पूरा सुख विलसै ॥श्री०॥

ॐ ह्रीं श्रीराजगृही सिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७॥

वादाम छुहारे, पिस्ता प्यारे, श्रीफल धारे, भेंट करूं।
मन वांछित दीजे शिव सुख कीजे ढील न कीजे मोद धरूं ॥श्री०॥

ॐ ह्रीं श्रीराजगृही सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

वसु द्रव्य मिलाये, भवि मन भाये, प्रभु गुण गाये, नृत्यकरों।
भवभव दुखनाशा शिव मग भासा चित्त हुलाशा सुक्ख करों ॥श्री॥

ॐ ह्रीं श्रीराजगृही सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्ताय अर्घं निर्वपाति स्वाहा ॥ ९ ॥

अथ प्रत्येक अर्घ।

गीता छंद।

अंतिम तीर्थंकर वीर स्वामी, समोशरण युत आय हैं
तहँ राय श्रेणिक पूज्यकर, उन धर्म सुनि सुख पाय हैं॥
गौतम सु गणधर, ज्ञान चक्षु धर, भव्य संबोधे तहां।
सो वाणिरचना ग्रंथ मांही, आज प्रचलित है यहां॥

दोहा

सो विपुला चल सीस पर, छह मंदिर विख्यात।
द्वय प्रतिमा शोभा धरें, चरण पादुका सात॥

ॐ ह्रीं श्री विपुलाचलपर्वत पर सात मंदिरस्थ द्वय प्रतिमा व सात युगल चरणकमलेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

अडिल्ल।

रतनागिरि पर दो मंदिर सोहैं सही।
प्रतिमा दो रमनीय परम शोभा लही॥

चरण पादुका चार भीतरे सोहनी।
एक पादुका दूजे मंदिर में बनी ॥

दोहा।

वसु विधि द्रव्य मिलायकर, दोइ कर जोड़ि सार।
प्रभुसे हमरी बीनती, आवागमन निवार ॥

ॐ ह्रीं श्री रतनागिर पर्वतपर दो मंदिरस्थ दो प्रतिमा व पाच युगल चरणकमलेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

अडिल्ल।

उदयागिर पर मंदिर दो हैं विशाल जी।
श्री पारस प्रभु आदि बिंब छह हाल जी ॥
चरण पादुका तीन विराजत हैं सही।
दर्शन हैं छह जगह परम शोभा लही ॥

सोरठा।

अष्ट द्रव्य ले धार, मन वच तनसे पूज हों।
जन्म मरण दुख टार, पाऊं शिव सुख परमगति ॥३॥

ॐ ह्रीं श्री उदयागिरि पर्वतपर दो मंदिरस्थ छह प्रतिमा व तीन युगल चरणकमलेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

दोहा।

श्रमणागिरके सीसपर, दो मंदिर सुविशाल।
आदिनाथजी मूल हैं, दर्शन भव्य निहाल ॥
द्वय प्रतिमा इक चरण तह, राजत है सुखकार ॥
अष्ट द्रव्य युत पूज हैं, ते उतरे भव पार ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्री श्रमणागिर पर्वतपर दो मंदिरस्थ दो प्रतिमा व युगल चरण कमलेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

पद्धरी छन्द ।

श्री गिरि व्यवहार अनूप जान । तह मंदिर सात बने महान ।
तिनके अति उन्नत सिखर सोय । देखत भवि मन आनंद होय ॥

अरु टूटे मंदिर पड़े सार । पुनि गुफा एक अद्भुत प्रकार ।
सबमें प्रतिमा सु विराजमांन । पुनि चरण तहां सु अनेक जांन ॥

ले अष्ट द्रव्य युत पूज कीन । मन वच तन कर त्रय धोक दीन ।
सब दुष्ट करम भये चूर चूर । जासे सुख पाया पूर पूर ॥३॥

ॐ ह्रीं श्री व्यवहारगिर पर्वतपर सात मंदिर व टूटे मंदिर व एकगुफामें अनेक प्रतिमां व चरणकमलेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

जयमाला ।

दोहा ।

उन्नत पर्वत पांच पर, उनइस जिनालय जान ।
मुनिसुव्रत जिनराजके, कल्याणक चहु जान ॥

छन्द मोती दाम ।

बनो राजगृह नग्र अनूप । बनी तह खाई कोट सु कूप ।
बने तह बाग महां रमनीक । फले फल फूल सु वृक्ष जुटीक ॥

तहां नरनार सु पंडित जान । करै नित पात्रनको वहु दान ।
करै नित श्रावक शुभ षट् कर्म । सु पूजन वंदन आदिक धर्म ॥

रहै वन मुनिवर अर्जिका जान । करै नित भक्ति सु श्रावक आन ।
हैं राय सु मित्र महां गुणवांन । सबै गुण ईश सु पंडित जांन ॥

सु नारि पद्मावति नाम सु जांन। सबै गुण पूरित रूप महांन।
जु श्रावण दोज वदी दिन सार। सुपन सोलह दिखे निशसार॥
सु होत प्रभात पतिय ढिग जाय। सुपन फल सुनि मन हर्ष लहाय।
प्रभु तीर्थंकर गर्भ मझार। अपराजितसे आये गुणधार॥
सु सेव करें नित देविय आय। नगर नर नार जु हर्ष लहाय।
यों सुखमें भये नव माह व्यतीत। वदी वैशाख दशमि शुभभीत॥
सु जन्म प्रभुको भयो सुखदाय। सु आसन कंपो तबै हरिराय।
अवधिकर इन्द्र जनम प्रभुजान। किया परिवार सहित सु पयान॥
प्रदक्षिण तीन नगर दी आय। शचीधर हर्ष प्रसू गृह जाय।
सु सुखनिद्रा माताको धार। प्रभु कर लेय किया नमस्कार॥
सु लेय हरी निज गोदहि धार। सुनेत्र सहस धर रूप निहार।
ऐरावत गज चढि मेरुपै जाय। सु पांडुकपर प्रभुको पधराय॥
सहस अरु आठ कलश शुभ लेय। क्षीरोदधि नीरसे धार ढरेय।
सु भूषण वहु प्रभुको पहराय। सु नृत्य किया वादित्र वजाय॥
सु पूज रु भक्ति तहां वहु कीन। सु जन्म सफल अपनो करलीन।
सु लाय पिता कर सौंप विराट। सु नृत्य किया अति आनंद ठाट॥
मुनिसुव्रत नाम तबै हरि धार। जु श्यामवरण छवि है सुखकार।
प्रभू क्रमसो योवन पद धार। सु राज रु भोग अनेक प्रकार॥
जु एक दिना सु महल्ल मझार। विठे शत खण्ड पे थे सुखकार।
आकाश मझार वदल इक देख। तत्क्षण चित्र लिखत शुभपेख॥
जु लिखितहि ताहि विलाय सु जांन। लहो वैराग्य परम सुख खानि।
सु भावत भावन वारह सार। वदी वैशाख दशमि सुखकार॥

सु आय लोकांत नियोग सुकीन। सु इन्द्रहि कांध चले सुप्रवीन।
तहां वन जायके लुंच विशाल। धरो तप दुद्धर बारा प्रकार॥
सुघाति करम हानि ज्ञान सु पाय। वही वैराग्य की नौगि सु गाय।
समवसृति इन्द्र तहां रचि सार। प्रभु उपदेश दे भव्यहिं तार॥
यही कल्याण चहू सुखकार। सु राजगृही नगरी वो पहार।
प्रभु मुनिसुव्रत मेरे हो स्वामि। देवहु निज वास हमें अभिराम॥
सु नाश अघाति सम्मेदसे जाय। सु निरजर कूटने मोक्ष सिधाय।
सु अंतिम प्रभु महावीर जिनाय। आये विपुलाचलपै सुखदाय॥
सु गय सु श्रेणिक भक्ति समेत। सु प्रश्न हजारों किये धर्म हेत।
सु गौतम गणधरजी सुखकार। सु उत्तर देय सु भव्यहि तार॥
सु श्रेणिक क्षायक सम्यकधार। प्रकृति तीर्थंकर बंध सु सार।
वही जिन वानिका अवलो प्रकाश। सु ग्रंथनमांहि सु देखो हुलास॥
जिनेश्वर और तहां इकवीस। विहार करंत रहे गिरि सीस।
सु वानि खिरी भवि जीवनकाज। मुनी तब भव्य तजा गृहराज॥
सु पर्वत पास हैं कुंड अनेक। भरे जल पूरित गर्म सु टेक।
करें तह यात्रि सु आय स्नान। सु द्रव्य मनोरम धोवत जान॥
सु चालत वंदन हरषहि धार। सु वंदन ते कर्म होवत छार।
करें पुनि लौट सु आय स्नान। थकावट जाय सु मुक्ख महान॥
बनी धर्मशाला महा रमणीय। सु यात्रि तहां विश्राम सुलीय।
प्रभु पद वंदित मैं हरषाय। मुझे नित दर्शन दो सुखदाय॥
सु अल्पहि बुद्धि थकी मैं बनाय। सुधारहु भूल सु पंडित भाय।
दुहु कर जोड नमें "मुन्नालाल"। प्रभु मुझे वेग करो सु निहाल॥

घत्ता छन्द।

मुनिसुव्रत वंदित, मन आनंदित, भव दुख दंदहि जाय पलाय।
श्री पंच पहाडी, अति सुख कारी, पूजन भविजन शिव सुखदाय॥

ॐ ह्रीं श्री राजगृही सिद्धक्षेत्रेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा

दोहा।

पंच महा गिरि राजको, पूजे मन वच काय।
पुत्र पौत्र संपति लहै, अनुक्रम शिवपुर जाय॥

इत्याशीर्वादः

मुनीम मुन्नालालजी परवार कृत-

(२८) श्री मंदारगिरिजी पूजन।

दोहा

अंग देशके मध्य है चंपापुर सुख खानि।
राय तहां वसु पूज्य हैं, विजया देवी रानि॥१॥

अडिल्ल

वासुपूज्य तसु पुत्र तीर्थपद धारजी।
गर्भ जन्म तिन चंपानगर मझारजी॥
तप करते यह वन चंपापुरके सही।
ज्ञान ऊपजो ताही वनके मध्य ही॥२॥
मोक्ष गये मंदारशैलके सिखर तें।
पर्वत चंपा पास सु दीसत दूर तें॥
सो पंच कल्याणक भूमि पूजता चावसो।
वासुपूंज्य जिनराज तिष्ठ इत आवसो॥३॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिन पंच कल्याणक भूमिभ्यो अत्र अवतर अवतर संवौषट्। अत्र तिष्ट तिष्ट ठ ठः। स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्। सन्निधिकरणं।

अष्टक।

गीता छंद।

पद्म द्रहको नीर उज्वल, कनक भाजनमें भरों।
मम जन्म मृत्यु जरा निवारन, पूज प्रभुपदकी करों॥
श्री वासुपूज्य जिनेंद्रने गर्भ, जन्म लिया चंपा पुरी।
श्री तपसु ज्ञान अरन्य शैल, मंदारते शिव तिय वरी॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिन पंचकल्याणक भूमिभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

केशर कपूर वो मलय बावन, घिस सुगन्ध बनाइया।
संसारताप विनाश कारण, भर कटोरि चढ़ाइया ॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिन पचकल्याणक भूमिभ्यो संसारताप विनाशनाय सुगध निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

देव जीर सुवास तंदुल, अमल भवि मन मोहये।
सो हेम थारहि धरन पदढिग, अखय शिवपद चाहिये॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिन पच कल्याणक भूमिभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षत निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

वेला चमेली चंपा जूही, गुलाब कुन्द मंगायके।
चुन चुन धरूं अति शुद्ध पहुपहि, काम मूल नशायके॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिन पंचकल्याणक भूमिभ्यो कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

फैनी सु घावर लाडु घेवरं, पूवा शुद्ध बनाइया।
वर हेम भाजन धरत पद ढिग, जजत भूख भगाइया॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिन पंच कल्याणक भूमिभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

बाती कपूरकी धार घृतमें, दीप ले आरति करों।
अज्ञान मोहनि अंध भाजत, ज्ञान भानु उदय करो॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिन पंच कल्याणक भूमिभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

ले गंध दशविधि चूर भूर, सु अग्नि मध्य जरावहीं।
मम कर्म दुष्ट अनादि जलते, धूम तिन सु उडावहीं॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिन पंचकल्याणक भूमिभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

श्री फल सु आम्र नारंगी केला, जायफल धो लाइये।
ते धरत प्रभु ढिग चरण भेंट,सु मोय शिवफल चाहिये॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिन पंच कल्याणक भूमिभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जल फल मिलाय सु अर्घ लेकर, कनक भाजनमें धरों।
मम दुःख भव भव दूर भाजत, पूज्य प्रभु पदकी करौं॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिन पंच कल्याणक भूमिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

अथ जयमाल.

दोहा ।

सत्तर धनु तन तुंग है, वर्ण सु छवि है लाल ।
दशवें दिव ते चय भये, लक्ष बहत्तर साल ॥ १ ॥
जन्में शतभिषा नक्षत्रमें, बाल ब्रह्म व्रत लेय ।
महिष चिन्ह पद पर लसे, गाऊं गुण सुख देय ॥२॥

पद्धरी छन्द ।

जय वासुपूज्य करुणा निधान, भवदधिसे तारन हार जान ।
वसुपूज्य नृपति चंपापुरीश, विजया देवी रानी सुधीश ॥
ताके शुभ गरभ रहो महान, वदि छट असाढ़की तिथिय जान ।
तब छप्पन देवी रहत लार, माताको सेवत अधिक प्यार ॥
सुखमें नव मांह भये व्यतीत, फागुन वदि चौदश दिन सु चीन ।
प्रभु जन्म भयो आनन्दकार, तब इन्द्रनि मुकुट नये सु वार ॥
स्वर्गनवासी घर घंट नांद, ज्योतिष इन्द्रनि घर सिंहनाद ।
पुनि भवनवासि घर बजे शंख, व्यंतर घर पट पट बजे झंख ॥
अनहद धुनि प्रभुका जन्म जान, चल सात पैंड़ दीनी प्रणाम ।
पुनि परिजनयुत सजि चले सोय, चतुरनिकायनि हरि हर्ष होय ॥
ऐरावत गज चढ़ि स्वर्गराय, पुरि परदक्षिण दी तीन जाय ।
तब शची प्रसूतहि थान जाय, माताको सुख निद्रा कराय ॥
दूजो सुत धरि प्रभु गोद लेय, सौधर्म ईशकर प्रभुहिं देय ।
हरि नैन सहसकर रूप देख, नहिं तृप्त होत फिर फिर सु देख ॥

ईशान इन्द्र सिर छत्र धार, तीजे चौथे हरि चमर ढार।
जय जय नभमें करि शब्द जोय, गये पांडुक वन हरि प्रमुद होय॥
तित शिला पांडुपर प्रभु विठाय, क्षीरो दधि जल निजकर सु लाय।
सिर सहस कलश अरु आठ ढार, आभूषण गन्धि पहिराये प्यार॥
पुनि अष्ट द्रव्य युत पूज कीन, निज जन्म सफल सब हरि गिनीन।
बहु उत्सव करत जु नगर आय, पितु गोद धार हरि थान जाय॥
प्रभु लाल वरण छवि शोभ लीन, नहि राज किया नहिं भोग कीन।
सो कुंवर काल वैराग्य धार, फागुन वदि चौदस मुक्खकार॥
भावन भाई बारह प्रकार, दिव ब्रह्म रिपो चलि हर्ष धार।
तिन आय विराग प्रशंस कीन, देवनि हरि युत चलि हर्ष लीन॥
प्रभु सुख पालहिं चढ गमन कीन, चंपा वनमें कच लोंच कीन।
तबही मन पर्यय ज्ञान धार, तप करत प्रभू बारह प्रकार॥
बाईस परीषह बह सहंत, पुनि क्षपकश्रेणि चढ घातिहंत।
सुदि माघ द्वितीया कर्म जार, उपजो पद केवल मुक्खकार॥
तब इन्द्र हुकम धरनेन्द्र चाल, देविन जानी मन हर्ष धार।
समोसृत बहु विधि युत सो बनाय, वेदी सुकोट बारह सभाय॥
प्रभु दिव्यध्वनि उपदेश देय, मुनि भविजन मन आनंद लेय।
केई मुनिवर केई गृही व्रत्त, केई अर्जिक श्रावकनी पवित्र॥
सो कर विहार प्रभु देश देश, मेटे भविजीवनिके कलेश।
रहि आयु शेष जब मास एक, तब आये गिरि मंदार टेक॥
तह धार योग आघाति नाश, भये सिद्ध अनंते गुणनिरास।
भादौ सुदि चौदश रान्ह[1] काल, मुनि चौरानव युत शिवविशाल॥

---

[1] अपरान्ह।

रह गये केश अरु नख जु शेष, उडि गये सर्व पुद्गल प्रदेश।
तब इन्द्र अवधि प्रभु मोक्ष जान, मंदार शिखर आये सु जान॥
चतुरनिकायनि मन हर्ष धार, प्रभुको शरीर रचियो जु सार।
वसु विधिसे तिनकी पूज कीन, पुनि अग्नि कुमर पद धोक दीन॥
तिन मुकटसे अग्नि भई तयार, ताकर कीना प्रभु संस्कार।
जय जय करते निज थान जाय, सो पूज्य क्षेत्र भवि सुखदाय॥
ता पर्वतपर मंदिर विशाल, तामें युग चरण चतुर्थ काल।
पुनि छोटा मंदिर एक और, त्रय युगल चरण है भक्ति ठौर॥
प्रभु पंच कल्याणक युत जिनेश, मेटो हमरे भव भव कलेश।
सो चरण सीस धारत त्रिकाल, नमि अरज करत है "मुन्नालाल"॥
वंदित मन वांछित फल लहाय, पूजे ते वसु विधि अरि नशाय।
हम अल्प बुद्धि जयमाल गाय, भवि करो शुद्ध पंडित सुभाय॥

घत्ता।

मन वच तन वंदित कर्म निकंदित, जन्म जन्म दुख जाय पलाय।
श्रीगिरि मंदारा, दुख हरतारा, सुख दातारा, मोक्ष दिवाय॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिन पंच कल्याणक भूमिभ्यो महार्घं निर्वपामीतिस्वाहा।

सोरठा।

वासु पूज्य जिनराज, तुम पद युगपर शीस धरूं।
सरे हमारे काज, याते शिव पद सुख लहूं॥

इत्याशीर्वादः।